ममता के बन्धन

[इस अर्ध शताब्दी का एक सर्वोत्तम उपन्यास

●

लेखक

विलियम समरसेट मॉम
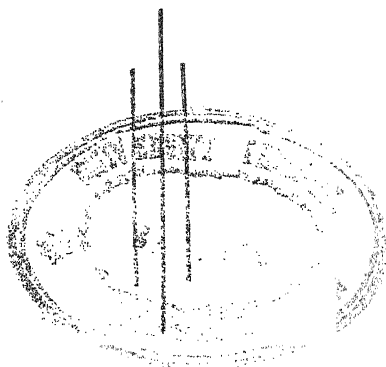
सोल एजेंट:

किताब महल, इलाहाबाद

प्रथम संस्करण

१९५४

लेखक

विलियम समरसेट मॉम

अनुवादक

विष्णु शर्मा

सम्पादक

श्रीकान्त व्यास

प्रकाशक

अनुपम प्रकाशन, इलाहाबाद

मुद्रक

यूनियन प्रेस, इलाहाबाद

यह उपन्यास

बचपन में ही फ़िलिप के माता-पिता की मृत्यु हो गयी, वह अनाथ हो गया। एक परिवर्तन के विरोधी और दकियानूसी तौर-तरीकों वाले चाचा उसके अभिभावक बने। वे उसे अपनी ही तरह पादरी बनाना चाहते थे, लेकिन फ़िलिप में कुछ ऐसा था जो उसे अशान्त किये रहता था। कई बार उसने चाचा से सम्बन्ध तोड़ना चाहा, लेकिन चाची के स्नेह ने उसे बाँध रखा। वह भाषा सीखने जर्मनी गया, लेकिन वहाँ टिक न सका। पेरिस में चित्रकला का अभ्यास शुरू किया, लेकिन कला की लम्बी साधना और फिर उसके फलस्वरूप मिलनेवाली बेकारी और बदहाली से घबराकर लौट आया। फिर डाक्टरी की पढ़ाई शुरू की, लेकिन एक लम्बे अर्से तक डाक्टर न हो सका—मिलड्रेड नाम की एक लड़की से प्रेम हुआ, जो कभी उसके प्रति वफ़ादार नहीं रही।

मिलड्रेड को फ़िलिप के शुद्ध, पवित्र प्रेम के बजाय वेश्यावृत्ति तक पसन्द थी। दूसरों से ठोकरें खाकर वह फ़िलिप के पास आती, उससे मदद माँगती और फिर से उसे धोखा देती! इतने पर भी फ़िलिप ने अपनी इंसानियत नहीं खोयी। मानवता, निस्वार्थ स्नेह और ममता जैसे उसके स्वभाव में थी—वह अन्त तक क्षमाशील ही रहा। मिलड्रेड पतन की ओर गिरती ही गयी, यहाँ तक कि एक शर्मनाक बीमारी ले बैठी। फ़िलिप से उसने फिर मदद माँगी और फ़िलिप ने, जो कभी अपने पूरे व्यक्तित्व से उसे प्यार करता था और उसके प्यार के कारण कई बार तबाह हुआ था, उसके लिए नुस्खा लिखा!

फ़िलिप हमेशा दूसरों के काम आया, लेकिन मुसीबत में उसने अपने को अकेला ही पाया—चार-चार दिन भूखा रहा, बगीचे की बेंचों पर रातें काटीं। अन्त में एक श्रमजीवी पत्रकार उसकी मदद को आया, जिसकी लड़की सैली, 'जो शहद-सी मीठी और दूध-सी पवित्र थी,' ही फ़िलिप के जीवन के खोखलेपन को भर सकी।

प्रस्तुत पुस्तक हमारी उस योजना के अन्तर्गत प्रकाशित हो रही है, जिसमें हमने विश्व के श्रेष्ठ उपन्यासकारों की चुनी हुई रचनाओं के लोकप्रिय प्रकाशन का आयोजन किया है। श्रेष्ठ विदेशी साहित्य के प्रति हिन्दी पाठकों की बढ़ती हुई रुचि को ध्यान में रखकर ही इन रचनाओं को प्रकाशन के लिए चुना जाता है। लेखक की अच्छी से अच्छी रचना को प्राथमिकता देने के साथ ही हमारा प्रयत्न रहता है कि पाठकों के लिए हम कम से कम दाम में संसार का सर्वोत्तम साहित्य उपलब्ध कर सकें। अनुवाद के समय कुछ अनावश्यक प्रसंगों को संक्षिप्त करते हुए भी रचना के सौन्दर्य पर आँच नहीं आने दी जाती, उल्टे इससे उसके प्रवाह को गति मिलती है और उसका रूप अधिक ग्राह्य हो जाता है। आशा है, श्रेष्ठ साहित्य के प्रकाशन का हमारा यह आयोजन साधारण पाठकों के भरपूर मनोरंजन के साथ ही हिन्दी के नये लेखकों के लिए भी उपादेय सिद्ध होगा।

१

सवेरा हो गया था। आसमान पर एक नये दिन ने मुँह उघारा था—उदास और मटमैला। बादलों में भारीपन था और वायु में बर्फ का तीक्ष्ण आभास। एक नौकरानी कमरे में आयी और उसने आहिस्ता से पर्दा हटाया। चारपाई पर लेटे हुए बालक को उसने उठा लिया।

'फ़िलिप। उठ बैठो।"

बच्चे की नींद भी न टूटी थी और नौकरानी उसे अपनी बाहों में समेट कर नीचे ले गयी। नीचे की मंजिल के एक कमरे का दरवाजा उसने धीमे से खोला। पलंग पर फ़िलिप की माँ लेटी थीं। उसने बच्चे को पलंग पर लिटा दिया और बच्चा अपनी माँ के पहलू में दुबक गया। प्यार में माँ ने अपने दुबले हाथों से उसको अपने करीब महसूस किया और उसे चिपका लिया। स्नेह के दामन में बच्चे को फिर से नींद आ गयी।

डाक्टर चारपाई के पास आकर खड़ा हो गया।

'अभी इसे मत ले जाओ!' आवेश में माँ बोली, पर वह जानती थी, वे उसे हटा ही लेंगे। ममता में एक बार फिर उसका हाथ फ़िलिप के सारे शरीर पर घूम गया। बायें पैर के तलवे के पास जाकर हाथ एकाएक रुका और माँ सिसक पड़ीं। डाक्टर के आदेश पर नौकरानी बच्चे को वापस ले गयी। दूर मेज़ पर उसी माँ का नवजात बच्चा पड़ा था—मरा हुआ।

डाक्टर ने चलने की तैयारी की। नर्स ने डाक्टर से हल्के से पूछा—'मिसेज कैरी के बचने की कोई आशा है?'

डाक्टर ने सिर हिला दिया।

जब नौकरानी एमां फ़िलिप को कमरे में लायी तो उसके चाचा उन पत्रों का उत्तर दे रहे थे जो लोगों ने उनके दिवंगत भाई की पत्नी की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिए भेजे थे। फ़िलिप को कमरे में आता देखकर चाचा ने उठकर उससे हाथ मिलाया और फिर कुछ सोचकर उसका माथा चूम लिया।

'फ़िलिप, अब तुम हमारे साथ ही रहा करोगे। तुम्हें वहाँ अच्छा लगेगा न?'

फ़िलिप को चाचा और चाची की तो क्या, हाँ, उस मकान की धुँधली-सी याद थी जहाँ वह दो वर्ष पूर्व गया था।

'हाँ।'

'अब तुम्हारी चाची और मैं ही तुम्हारे माता-पिता के समान हैं।'

किसी आन्तरिक उत्तेजना से फ़िलिप का मुँह सुर्ख़ हो गया। उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

चाचा की शादी हुए लगभग तीस वर्ष हो गये थे पर उनके सन्तान नहीं थी। उन्हें संशय था कि बच्चा छोटा है, ऊधमी और शरारती होगा ही। लन्दन आते हुए सारे रास्ते वह इसी जंजाल पर चिन्तन करते रहे थे।

'कल तुम्हें मेरे साथ ब्लैकस्टेबिल चलना है!'

'एमां साथ चलेगी न?' बालक ने प्रश्न किया।

चाचा ने इनकार कर दिया, फ़िलिप रो पड़ा। चाचा ने एमां से कुछ देर को बाहर जाने के लिए कहा।

'रो मत! तुम अब बड़े हो गये हो; नौकरानी की तुम्हें जरूरत नहीं।'

'पर मैं एमां के साथ रहना चाहता हूँ,' अबोध बालक ने ज़िद की।

'नौकरानी पर बहुत पैसा खर्च होता है। फिर तुम्हारे पिता कोई ऐसी सम्पत्ति भी तो नहीं छोड़ गये हैं!'

चाचा ने देखा बच्चा नहीं मानता तो उन्होंने फ़िलिप को नौकरानी के पास जाने की आज्ञा दे दी। फ़िलिप एमां के पास जाने को ही था कि चाचा ने रोका—

'हमें कल ही जाना है। तुम अपने खिलौने तो साथ ले चल सकते हो

और माता और पिता की एक-एक यादगार भी, पर बाकी सब कुछ तो बेचना पड़ेगा।'

फ़िलिप जब एमा से स्टेशन पर जुदा हुआ था तो वह रो पड़ा था लेकिन सफर में उसका दिल बहल गया। वह ब्लैकस्टेबिल पहुँचने तक शांत हो चुका था।

चाचा विलियम ब्लैकस्टेबिल में गिरजे के 'पादरी' थे। उनका मकान कोई ऐसा शानदार तो नहीं था पर भला खासा था और बाहर से देखने में किसी पुराने गिरजे की तरह लगता था। चाची लुइसा दरवाजे पर ही अपने पति और भतीजे की प्रतीक्षा कर रही थीं।

'दौड़कर जाओ और अपनी चाची को प्यार करो!' चाचा ने आदेश दिया। फ़िलिप ने दौड़ने का प्रयास किया—उसका बायाँ पैर, जो खराब था, पीछे घिसट रहा था।

चाची के चेहरे पर अनगिनत झुर्रियाँ थीं; उनकी आवाज में शील था, लज्जा और झिझक थी।

फिर सब अन्दर के हॉल में आये। चाची ने कहा—'मैंने सोचा, सफर के बाद तुम्हें ठंड लगेगी—भट्ठी जलवा दी है।'

यह भट्ठी केवल तभी जलायी जाती थी जब मौसम खराब होता था और चाचा को सर्दी ज्यादा लगती थी। चाची को सर्दी लगे, जुकाम हो, तब नहीं! कोयला काफी मँहगा था।

चाची फ़िलिप को ऊपर ले गयी, उसे उसका कमरा दिखाने के लिए।

'डर तो नहीं लगेगा अकेले सोने में?' चाची ने पूछा।

'नहीं।'

'तुम हाथ-मुँह तो खुद धो लोगे या मैं धुला दूँ?'

'जी नहीं, मैं खुद धो लूँगा।'

थोड़ी देर के बाद सब चाय पीने के लिए खाने के कमरे में इकट्ठे हुए। चाची ने अपने पति से कहा—

'मैंने सोचा तुम सफर के बाद भूखे होगे—'तुम्हारे लिए मैरी से एक अंडा बनाने को कहा है।'

चाची समझती थी कि यहाँ से लन्दन तक के साठ मील के सफर में काफी थकान होती होगी। बेचारी कभी खुद तो निकल ही नहीं पाती थी। तीन सौ पाउंड सालाना की आमदनी में कैसे सम्भव था कि पति-पत्नी दोनों छुट्टी मनायें। केवल चाचा ही अकेले घूम-फिर आते थे।

चाचा का अंडा उबलकर आ गया और उन्होंने उसे ऊपर से थोड़ा-सा तोड़ा।

'लो, तुम यह खालो,' ऊपर का टुकड़ा फ़िलिप को देते हुए चाचा बोले।

फ़िलिप को भी भूख लगी थी; वह भी पूरा अन्डा खाना चाहता था।

२

फ़िलिप अपने माँ-बाप का इकलौता बेटा था और इसलिए उसका शैशव एकाकीपन में ही बीता था। यहाँ चाचा के घर भी कोई ऐसा न था जिससे वह जी बहलाता। बस, नौकरानी मैरी ऐन ही को वह थोड़ा-बहुत पसन्द करता था। मैरी ऐन एक चंचल और दिलचस्प औरत थी। उसके घरवाले सब मछुवे थे और समुद्र के किनारे रहते थे। जब वह फिलिप को समन्दर की कहानियाँ सुनाया करती थी तो बालक के दिल में हजार उमंगभरी जिज्ञासाएँ जाग उठती थीं और शैशव की कल्पना सजीव होकर नाच पड़ती थी।

एक शाम को फ़िलिप ने मैरी ऐन के घर जाने की आज्ञा माँगी। चाची डरती थीं कि बच्चा कहीं बाहर गया तो उसे कुछ हो न जाय पर चाचा ने इसलिये रोका कि वह मछुवों को नीच और गन्दा समझते थे और उनसे मिलकर फ़िलिप बुरी बातें सीख सकता था। फिलिप न जा सका।

फ़िलिप की तबीयत नौकरानी के साथ चौके में ज्यादा लगती थी। वहाँ

वह दिल खोलकर हँसता था लेकिन अगर उसकी चाची वहाँ आ जाती थीं तो संकोचवश वह हँसी फौरन ही मुरझा जाती थी। यह नहीं था कि चाची को फ़िलिप से स्नेह न हो। उनका दिल उस अनाथ बालक के लिए पसीज उठता था पर बच्चों से कभी उनका सम्पर्क नहीं रहा था और इस कारण वह फ़िलिप का स्नेह न जीत सकी थीं। इस बात का दुःख था उन्हें।

'फ़िलिप जब मैरी ऐन के साथ रहता है तो ज्यादा खुश रहता है', चाची ने यूँही बात कह दी।

'उसकी परवरिश ही ठीक ढंग से नहीं हुई है। ठीक करना पड़ेगा उसे,' चाचा ने टिप्पणी की।

और इसके बाद एक दिन छोटी-सी दुर्घटना हो गयी। दोपहर का समय था। चाचा किसी बात पर झुँझलाए लेटे थे और उससे हारकर सोने ही वाले थे की पास के कमरे से किसी चीज के गिरने की आवाज आयी। कारण देखने के लिए चाचा उठकर आये।

फ़िलिप ने पत्थरों का एक बड़ा महल बनाया था। उसकी नींव कमजोर थी—महल ढह गया था।

'यह पत्थरों से क्या कर रहे थे! तुम बहुत शैतान हो! तुम्हारी इन शैतानियों से तुम्हारी माँ की आत्मा तक को चोट पहुँची रही होगी।'

आघात बालक के दिल पर हुआ और अन्दर से आँसू उमड़ पड़ने को हुए; लेकिन फ़िलिप को इस बात से सख्त नफरत थी कि कोई दूसरा उसके आँसू देख ले।

चाची जब कमरे में आई तो उन्होंने चाचा से पूछा—'ठीक से सोये?'

'कहाँ! इस शैतान ने सोने कहाँ दिया!' चाचा का क्रोध उतरा न था—'और फिर इसने क्षमा भी न माँगी।'

चाची ने, इस डर से कि वे ज्यादा न नाराज हो जायें, फ़िलिप को उकसाया—'माफी माँग लो न, बेटा!'

फ़िलिप खामोश रहा और चाचा काम करने गिरजे चले गये।

फ़िलिप को बहलाने के लिए चाची ने प्रस्ताव रखा कि वह चल कर उसे गीत सुनायें।

'नहीं। आप मुझे अकेला ही छोड़ दीजिये!'

'ऐसा क्यों कहते हो, बेटा? क्या तुम हमें प्यार नहीं करते?'

'नहीं! मैं आपसे नफ़रत करता हूँ!'

जिस तेजी से फ़िलिप ने ये शब्द कहे थे, उससे चाची विचलित हो उठीं। चाची को भगवान ने औलाद न दी थी और वह इस बच्चे को दिल से प्यार करती थीं। स्नेह पर जो चोट लगी तो आँसू निकल आये। फ़िलिप को लगा कि उसके कड़ा बोलने से चाची को दुःख हुआ है। उसे खेद हुआ और उसने चाची का मुँह चूम लिया और चाची ने कुछ ऐसे उसे सीने से चिपका लिया कि जैसे उनका दिल टूटने वाला हो। फ़िलिप के दिये हुए दुःख ने उनके अन्दर एक ज्यादा प्रबल ममता जगा दी थी।

चाचा ने निश्चय कर लिया कि फ़िलिप को टरकेनबरी के स्कूल में भेजा जाय। आसपास के लगभग सभी पादरी अपने बच्चों को वहीं भेजते थे। उस स्कूल का गिरजे से विशेष सम्बन्ध था और वहाँ छात्रों को ऐसी शिक्षा दी जाती थी जिससे वे बड़े होकर गिरजों में नौकरी करने के योग्य हो सकें।

जब से फ़िलिप और उसके चाचा मि० कैरी टरकेनबरी के स्टेशन पर उतरे थे तभी से फ़िलिप को कुछ डर-सा लगने लगा था। स्कूल में जीवन क्या होगा, यह उसे सिर्फ़ इधर-उधर की किताबें पढ़कर ही मालूम हुआ था।

फिलिप को हेडमास्टर, मि० पर्किन्स, के सुपुर्द करके चाचा वापस चले गये। फिलिप बिल्कुल अकेला रह गया था।

एक छोटे लड़के ने, जो पहले से उस स्कूल का छात्र था, फिलिप से पूछा—

'क्या नाम है तुम्हारा?'

'कैरी!'

'तुम्हारे पिता क्या करते हैं?'

'पिता की मृत्यु हो चुकी है।'

लड़के ने, जिसका नाम वेनिंग था, अचानक फ़िलिप के पैर की तरफ़ देखा।

'यह तुम्हारे पैर को क्या हुआ है?'

आप से आप फ़िलिप ने अपना खराब पैर छिपाना चाहा।

'मेरा पैर खराब है।'

'अच्छा! जरा दिखाओ तो।'

'नहीं।'

'न सही!' और वेनिंग ने फिलिप की पिंडली पर एक जोर की लात मारी, भयंकर पीड़ा हुई, लेकिन फिलिप ने वेनिंग को न मारा; उसने पढ़ा था कि अपने से छोटों को मारना बुरा होता है।

कुछ देर में फिलिप ने देखा कि काफी लड़के इकट्ठे हो गये हैं। उसे लगा कि वे सब उसी के बारे में बात कर रहे हैं—उनकी आँखें उसके खराब पैर की तरफ घूर रही हैं। पीड़ा से फ़िलिप की आत्मा तक तिलमिला उठी—चारों ओर से घिरती हुई उदासी और अकेलेपन में वह छटपटा रहा था।

समय बीता और सहपाठी धीरे-धीरे यह भूलने लगे कि फ़िलिप की टाँग खराब है। एक कक्षा से दूसरी कक्षा में वह आसानी से पहुँचता गया और उसने पढ़ाई में स्कूल के कई पुरस्कार भी जीते। सब शिक्षक उससे बहुत खुश थे और उन्हें उससे काफी आशाएँ थीं।

पर फ़िलिप के अन्दर एक नयी मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति ने जन्म ले लिया था। उसने उसके दिल में आन्तरिक वेदना पैदा कर दी थी। शैशव के सुकुमार सपने तो ओझल हो रहे थे; अब उसे यह ज्ञान, यह चेतना होने लगी थी कि उसके अन्दर एक शारीरिक कमी है। इस आभास से जैसे उसके अन्तर में पीड़ा के सहस्रों भाले से चुभ जाते थे। उसकी आत्मा कराह उठती थी, तड़प जाती थी—जब वह यह महसूस करता था कि लोग उसका मजाक इसलिए उड़ाते हैं कि उसके शरीर में दोष है, उसका पैर खराब है। वह धीरे-धीरे अपने अन्दर खिंचता गया और उसकी मनोवृत्ति अस्वस्थ होने लगी। वह बहुत पढ़ता था और अक्सर आदर्शों और विचारधाराओं की भूल-भुलैया में खो जाता था।

उसकी कल्पना में पंख लग गये थे—उसमें उड़ान आ गयी थी। वह और ज्यादा विचार कर सकता था, ज्यादा महसूस कर सकता था।

साथ ही साथ झिझक के उस बाहरी आवरण के पीछे एक नये व्यक्ति का निर्माण हो रहा था और उसे थोड़ा-थोड़ा अपने इस नवीन और बढ़ते हुए व्यक्तित्व का आभास भी होने लगा था। कभी-कभी उसे खुद अपनी कही हुई बातों पर आश्चर्य होता था और जब वह उनका विश्लेषण करने लगता था तो चकरा जाता था। वह अपने इस नये व्यक्तित्व को ठीक से समझ नहीं पा रहा था।

इसी समय सारे स्कूल में धर्मपरायण की एक नयी हवा चल पड़ी। फ़िलिप का नवजात और जिज्ञासु व्यक्तित्व धर्म की नयी बातें जानने के लिए अधीर हो उठा। अपने नये शौक़ में फ़िलिप ने बाइबिल का अध्ययन तेजी से शुरू कर दिया। एक रात को जब वह बाइबिल पढ़ रहा था तो इन पंक्तियों पर उसकी दृष्टि जम कर रह गयी—'अगर तुझे विश्वास है और तू सन्देहहीन है तो उस विश्वास के बल पर तू पर्वतों को भी अपने स्थान से हटा सकता है।' वाक्य फ़िलिप के दिमाग में जमकर रह गया।

क्रिसमस की छुट्टियों में जब फ़िलिप घर गया तो उसने अपने चाचा से पूछा—'बाइबिल में एक स्थान पर लिखा है कि मनुष्य विश्वास के बल पर पहाड़ भी हिला सकता है। क्या यह सत्य है?'

'बाइबिल में लिखा है तो सत्य होगा ही,' चाची ने दूर से कहा।

चाचा ने कहा—'भगवान की कृपा होने पर सब कुछ सम्भव है।'

एक नवीन कल्पना से, विश्वास से फिलिप का मन झूम उठा।

'भगवान! तू महान् है—सर्वशक्तिशाली है। इस बार स्कूल लौटने के पहले मेरा पैर ठीक कर दे।'

रोज, सुबह-दोपहर-शाम फिलिप यह प्रार्थना दोहराया करता था और उसे विश्वास था। वह सोचता था कि एक दिन जब उसकी प्रार्थना सफल होगी और वह दौड़ता हुआ आयेगा तो उसके चाचा को कितना आश्चर्य होगा। स्कूल में

सहपाठी कहेंगे—'अरे ! तुम्हारा पैर तो ठीक हो गया ।' और वह 'हाँ !' कह देगा, जैसे कुछ हुआ ही नहीं ।

दूसरे दिन फ़िलिप को स्कूल में वापस जाना था । उस रात को उसने दूने-चौगुने विश्वास से प्रार्थना दोहरायी और वह इस सुखद आशा को लेकर सोया कि सुबह जब वह उठेगा तो उसका पैर ठीक होगा ।

लेकिन अगले दिन सुबह वह लंगड़ाता हुआ अपने कमरे की सीढ़ियों से उतरा । वह बहुत खामोश था ।

उसने चाचा से प्रश्न किया—'अगर कोई भगवान से कुछ माँगे और उसे पूर्ण विश्वास हो कि उसकी मनकामना पूरी होगी, लेकिन फिर भी ऐसा न हो, तो इसका क्या अर्थ ?'

चाचा ने उत्तर दिया—'केवल यह कि उसके विश्वास की मात्रा में कमी थी ।'

फिलिप ने यह उत्तर स्वीकार कर लिया । शायद उसने भगवान को समय कम दिया । वह फिर वही प्रार्थना दोहराने लगा—ज्यादा लगन से लेकिन कभी भी कुछ न हुआ । अपने दिल में उठते हुए सन्देह को वह रोक न सका और उसके अन्दर कोई आवाज बोल पड़ी—

'सम्भवतः किसी में इतना विश्वास नहीं होता !'

फिलिप के किशोर हृदय में विश्वास की नींव हिल गयी थी ।

३

स्कूल से, स्कूल के वातावरण से, पढ़ाई से फ़िलिप ऊब गया था, बुरी तरह ऊब गया था । रोज़ वही जीवन, हर दिन वही सबक । उसे क्रमबद्ध होने से भयानक अरुचि होने लगी थी । उसके हेडमास्टर मिस्टर पर्किन्स उससे बहुत खुश थे । उन्हें आशा थी कि फ़िलिप बहुत होनहार होगा । चाचा का

विचार था कि स्कूल और ऑक्सफ़ोर्ड यूनीवर्सिटी में पढ़कर फ़िलिप एक सफल पादरी बन जायगा। लेकिन फ़िलिप की आत्मा विद्रोह करने लगी थी—पढ़ाई के ख़िलाफ़, उस वातावरण के ख़िलाफ़, उस पेशे के ख़िलाफ़ जो उसके चाचा ने उसके लिए सोच रखा था।

केवल स्कूल की नियमित पुस्तकें पढ़ने के अतिरिक्त फ़िलिप ने अपनी छोटी-सी अवस्था में और भी बहुत-कुछ पढ़ लिया था और उसकी सजीव कल्पना उन पुस्तकों से प्रोत्साहित होकर उसकी अनेक दबी हुई इच्छाओं को साकार बना देती थी। बंधनों से मुक्त होकर वह अपनी आँखों से दुनिया का विस्तृत रूप देखना चाहता था। भ्रमण—वह चाहता था कि वह सारी दुनिया में स्वतन्त्रता से घूम सके। उसके छोटे से दिल में उसकी लालसा का आवेश तूफ़ान बन जाता था।

जब पढ़ाई से उसको रुचि रहने लगी तो उसने चित्र बनाना शुरू किया। चित्र बनाने की प्रतिभा तो उसमें स्वाभाविक थी—बचपन से ही थी। उसने कभी चित्र-कला में शिक्षा नहीं ली थी फिर भी वह ख़ासे भले चित्र बना लेता था। उसके चाचा-चाची ने भी उन चित्रों की तारीफ़ की थी। जब उसकी तबीयत उकतायी तो उसने चित्र बनाये और ख़ूब बनाये। पर न जाने क्यों उसकी इन इच्छाओं को, जिन्हें वह ख़ुद ठीक प्रकार से नहीं समझ पाता था, कभी भी सन्तोष न मिला।

छुट्टियों में जब फ़िलिप घर आया तो वह अपने विद्रोह को और ज़्यादा न दबा सका।

'मेरे स्कूल में रहने से क्या लाभ ? मैं सोचता हूँ कि अगर मैं जर्मनी जा सकूँ तो सम्भव है फ़ायदा ज़्यादा हो !' निर्भीकता से उसने अपना निर्णय सुना दिया।

'यह विचार कैसे आया तुम्हें ?' चाची ने प्रश्न किया।

'यही अच्छा है ! मैं विद्यालय में पढ़ने के लिए ऑक्सफ़ोर्ड जाना भी नहीं चाहता,' फ़िलिप ने उत्तर दिया।

'लेकिन गिरजे में नौकरी पाने के लिए तो यह आवश्यक है,' चाची ने आश्चर्य से कहा।

'मैं गिरजे में नौकरी नहीं करना चाहता', फ़िलिप ने उत्तर दिया।

चाची की आँखों में आँसू आ गये, उन्हें रोते देखकर फिलिप को बहुत पीड़ा हुई। उसको पहली बार इसका आभास हुआ कि चाची का जीवन कितना दुखपूर्ण है।

चाची को उसने समझाने की कोशिश की। 'मैं टरकनबरी के स्कूल से ऊब गया हूँ, चाची! आप चाचा को मना लीजिये कि मुझे वहाँ से हटा लें।'

पहले तो चाचा कुछ भी सुनने को तैयार नहीं हुए पर अन्त में इस बात पर मान गये कि वे उसके हेडमास्टर मिस्टर पर्किन्स को इस विषय में लिखेंगे। इधर चाचा के कुछ मित्रों ने, जिन्होंने जीवन के नये और प्रगतिशील पहलू को देखा था, उनकी विचारधारा में थोड़ा-सा परिवर्तन कर दिया था। चाचा को लगा कि इस बदलते हुए युग में पुराने ढर्रे की शिक्षा का कोई खास महत्त्व नहीं है और आधुनिक भाषाओं का भविष्य काफी उज्ज्वल है। अन्त में निश्चय यह हुआ कि फ़िलिप एक वर्ष टरकेनबरी के स्कूल में और रहे और उसके बाद जर्मनी के लिए प्रस्थान करे। इस व्यवस्था से फ़िलिप भी असन्तुष्ट नहीं था।

स्कूल लौटने के कुछ दिन पश्चात् हेडमास्टर ने उसे बुलाया और कहा—'तुम्हारे चाचा ने मुझसे पूछा है कि तुम्हारे जर्मनी जाने के विषय में मेरी क्या राय है।'

फ़िलिप स्तम्भित रह गया। 'मेरे विचार से तो इस बात का निर्णय हो चुका था। अब उसमें आपसे पूछने की क्या बात थी।'

हेडमास्टर ने उत्तर दिया—'मैंने तो लिख दिया है कि तुम्हें स्कूल से हटाना केवल मूर्खता होगी।'

अपार क्रोध में फ़िलिप बाहर आ गया और उसने अपने चाचा को एक बहुत कठोर पत्र लिखकर भेजा। उत्तर में चाची का एक पत्र आया, जिसमें

उन्होंने लिखा कि उसे ऐसा नहीं लिखना चाहिए था। वे लोग तो जो कुछ कर रहे थे उसके हित में ही कर रहे थे।

क्रोध में फ़िलिप की मुट्ठियाँ भिंच गयीं। ऐसी बातें तो न जाने वह कितनी बार सुन चुका है पर आवश्यक नहीं कि वे सब सच हों। न जाने क्यों ज्यादा अवस्था के आदमी यह तय मान लेते हैं कि वे औरों से अधिक बुद्धिमान हैं। वह अपनी परिस्थिति खुद समझ सकता था।

अगले दिन आधे दिन की छुट्टी थी। फ़िलिप ने हेडमास्टर से घर जाने की आज्ञा माँगी। मिस्टर पर्किन्स ने कड़े शब्दों में मना कर दिया।

बिना उत्तर दिये वह बाहर चला आया। उसका मन इस अनादर से तड़प उठा था। वह बिना आज्ञा लिए पीछे के रास्ते से स्कूल के अहाते से बाहर आ गया और ब्लैकस्टेबिल पहुँच गया।

फ़िलिप बहुत आवेश में था। घर पहुँचकर वह क्रोध से उबल पड़ा। उसने अपने चाचा को इतना नाराज़ कर दिया कि वे वहाँ से उठकर चले गए।

'फ़िलिप, तुम्हें ऐसी बातें अपने चाचा से नहीं कहनी चाहिए थीं। उनसे क्षमा माँग लो,' चाची ने समझाया।

'मैं क्षमा नहीं माँगूँगा। जो रुपया मेरा है उसे मुझे स्कूल में पढ़ाकर क्यों बरबाद कर रहे हैं। ऐसे लोगों को मेरा संरक्षक बनाना ही अनुचित था जिन्हें मेरी इच्छाओं से कोई हमदर्दी नहीं।'

फ़िलिप क्रोध में पागल था।

'फ़िलिप!' चाची को उसके व्यवहार से बहुत चोट लगी थी।

न जाने क्यों चाची को व्यथित देखकर वह विचलित हो जाता था। फ़िलिप की आँखों में आँसू आ गये।

'मैं आपका दिल नहीं दुखाना चाहता था, मुझे खेद है।'

सिसकते हुए चाची ने कहा—'मैं कभी तुम्हारे उतना निकट नहीं आ सकी जितना मैं चाहती थी। मैं कभी यह न जान सकी कि मैं क्या करूँ। जितना

दुख तुम्हें अपनी माँ खोने का है उतना ही मुझे अपने सन्तानहीन होने का है, फ़िलिप।'

स्नेह, दया और सहानुभूति की भावनाओं में फ़िलिप अपने कष्ट, अपनी समस्याओं को भी भूल गया। उसने अपनी चाची को उस क्षण से पूरा सुख देने का निश्चय किया।

उस दिन शाम को जब वह अपने स्कूल वापस लौटा तो उसे अफसोस था कि वह अपने जर्मनी जाने की बात तय नहीं कर सका। उसे अपने ऊपर भी क्रोध आया।

४

फ़िलिप को अन्त में विजय मिल ही गयी और उसका जर्मनी जाना निश्चित हो गया।

ब्लैकस्टेबिल से निराश लौट आने के बाद चाचा-चाची में न जाने क्या बात हुई जिसके फलस्वरूप चाचा ने टरकेनबरी के स्कूल के हेडमास्टर को लिख दिया कि इस वर्ष के बाद फ़िलिप का नाम काट दिया जाय।

फ़िलिप के चाचा मिस्टर कैरी की एक मित्र मिस विलकिन्सन जर्मनी में थीं और बर्लिन में रहती थीं। मिस विलकिन्सन के पिता पादरी थे और एक समय में मिस्टर कैरी ने उनके नीचे काम भी किया था। पिता की मृत्यु के बाद मिस विलकिन्सन को रोजी कमाने के लिए नौकरी करनी पड़ती थी और इस समय वह बर्लिन के एक परिवार में 'गवर्नेस' का काम कर रही थीं।

इसलिए जब फ़िलिप के जर्मनी जाने की बात तय हो गयी तो फ़िलिप की चाची ने उन्हें पत्र लिख कर उनसे सलाह माँगी। मिस विलकिन्सन ने लिखा कि जर्मन भाषा सीखने के लिए सब से उत्तम शहर हिडॅलबर्ग होगा। उन्होंने फ़िलिप के वहाँ ठहरने की भी व्यवस्था कर दी। फ़िलिप को हिडॅलबर्ग पहुँच-कर प्रोफ़ेसर श्रीमती एरलिन के बोर्डिंग हाउस में ठहरना था।

मई के महीने में प्रातःकाल के समय फ़िलिप हिडॅलबर्ग पहुँचा। कुली ने उसका सामान हाथ-गाड़ी में लाद दिया। वहाँ से फ़िलिप को पैदल चलकर अपने निर्दिष्ट स्थान तक जाना था। स्टेशन पर उसे लेने कोई नहीं आया था और यह उसे बहुत अजीब-सा लगा था।

जब वह स्टेशन से बाहर निकला तो उसने देखा कि आसमान बिल्कुल साफ़ और गहरा नीला है। सड़क के दोनों ओर पेड़ हैं जो पत्तियों से खूब लदे हुए हैं। उसे हवा की ताजगी का आभास हुआ। अजनबियों के बीच एक नया जीवन शुरू करते समय उसके दिल में थोड़ी सी हिचक के साथ-साथ एक हर्षपूर्ण उत्सुकता भी थी।

गाड़ीवाले ने फ़िलिप का सामान मकान के दरवाजे पर ही छोड़ दिया। घंटी बजाने पर एक लड़का अन्दर से आया और उसने दरवाजा खोला। फ़िलिप अन्दर आया। जिस कमरे में वह घुसा वह मकान का ड्राइंगरूम था। हरी मखमल से मढ़ा हुआ एक सोफ़ा पड़ा था; बीचोबीच एक बड़ी-सी गोल मेज पड़ी थी जिस पर एक फूलदान में कुछ फूल थे और इधर-उधर कुछ मोटी-मोटी किताबें बिखरी पड़ी थीं। कमरे में बासी हवा की-सी गन्ध थी।

थोड़ी देर में श्रीमती एरलिन कमरे में आयीं। बड़ी आवभगत से उन्होंने फ़िलिप का स्वागत किया। वह जर्मन भाषा और टूटी-फूटी अँग्रेजी में बात कर रही थीं और वह क्या कह रहीं हैं, यह फ़िलिप ज्यादा नहीं समझ पा रहा था। श्रीमती एरलिन की दो पुत्रियाँ भी कमरे में आयीं। बड़ी का नाम थेकला था। उसकी मुखाकृति सुन्दर थी, बाल घने और काले थे। छोटी का नाम ऐना था। वह अपनी बहन से ज्यादा लम्बी थी और सुन्दर कम थी पर उसकी मुस्कराहट में आकर्षण था। फ़िलिप ने उसको ज्यादा पसन्द किया। कुछ देर बातचीत हुई; उसके बाद श्रीमती एरलिन फ़िलिप को ऊपर की मंजिल में उसका कमरा दिखाने ले गयीं।

अपने कमरे में आकर फ़िलिप ने चैन की साँस ली। वह अब स्वतन्त्र था।

एक बजे खाने की घंटी बजी। फ़िलिप अपने कमरे से निकलकर ड्राइंग-रूम में आया जहाँ श्रीमती एरलिन के बोर्डिङ्ग-हाउस में रहनेवाले और लोग

भी इकट्ठे थे। सबसे पहले श्रीमती एरलिन ने अपने पति से फ़िलिप का परिचय कराया। इसके बाद सब लोग खाने के कमरे में गये। फ़िलिप अपने इस नये वातावरण में खुल नहीं पाया था। उसने देखा कि मेज के चारों ओर लगभग सोलह व्यक्ति बैठे हैं।

फ़िलिप ने बड़े ध्यान से उन लोगों को देखा जिनके साथ उसे रहना था। कुछ बूढ़ी औरतें थीं जिनमें युवक फ़िलिप को कोई दिलचस्पी नहीं थी। इसके अतिरिक्त दो और युवतियाँ थीं। दोनों का रंग बहुत साफ़ था और उनमें से एक जिसका नाम मिस हेडविग था, बहुत सुन्दर थी। दूसरी युवती का नाम मिस सेसिली था। दोनों आपस में बात कर रही थीं और हँस रही थीं। एक-आध बार बातचीत करते हुए उन्होंने फ़िलिप की तरफ़ देखा। फ़िलिप को लगा जैसे वे उसका मजाक उड़ा रही हैं, फ़िलिप झेंप गया। उनके बराबर एक चीनी बैठा था जो वहाँ के विद्यालय में अध्ययन कर रहा था। इसके अतिरिक्त दो-तीन अमरीकन बैठे थे जो धर्मशाला के विद्यार्थी थे। फ़िलिप का यह विचार था कि अमरीकन असभ्य और जंगली होते हैं।

जब खाना खाकर वे लोग ड्राइंग-रूम में पहुँचे तो मिस ऐना ने फ़िलिप से पूछा कि क्या वह उन लोगों के साथ घूमने जाना पसन्द करेगा। फ़िलिप ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया। ऐना और मिस हेडविग के साथ फ़िलिप चल रहा था।

इसके पहले वह लड़कियों के इतना निकट कभी नहीं आया था। ब्लैक-स्टेबिल में जो लड़कियाँ थीं उन्हें फ़िलिप ने केवल देखा भर था--कभी उनसे उसका परिचय नहीं हुआ था। स्कूल में भी दो-तीन लड़कियाँ थीं। लड़कियाँ बहुत तेज थीं, उनमें शील और सङ्कोच का नाम तक न था। कई लड़कों से उनकी मित्रता थी पर फ़िलिप हमेशा उनसे दूर ही रहा था। वह उनसे घब-राता था। उसके अन्दर अस्वस्थ अहंकार और लड़कियों से मिलकर उन्हें खुश करने की इच्छा में अकसर द्वन्द चलता था।

साथ चलती हुई दोनों युवतियों के विषय में भी वह यही सोच रहा था। वह उन्हें हँसाने, उनका दिल बहलाने के लिए बातें करना चाहता था पर

उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। उन दोनों में से ऐना तो कभी बोल भी देती थी पर दूसरी लड़की लगभग खामोश ही थी। बस कभी-कभी अपनी खूबसूरत आँखों से फ़िलिप की तरफ़ देख लेती थी और कभी एकाएक हँस पड़ती थी और फ़िलिप शरमा जाता था।

जिस टीले पर वे लोग चल रहे थे वह चीड़ के पेड़ों से ढँका हुआ था और उन पेड़ों की भीनी-भीनी सुगन्ध फ़िलिप के मन में सुख और सन्तोष का संचार कर रही थी। हवा में गर्मी का हल्का सा पुट था और आसमान में एक भी बादल नहीं था। उनकी आँखों के नीचे दूर पर राइन की खूबसूरत घाटी फैली हुई थी—धूप से भरी हुई। उस चमचमाते हुए मैदान में दूर पर बसे हुए नगर दिखाई पड़ रहे थे। घाटी के बीच में राइन पिघली चाँदी के दरिया की तरह अँगड़ाई ले रही थी। इतना विस्तार कभी फिलिप ने नहीं देखा था। इन लम्बे-चौड़े मैदानों को देखकर फिलिप के दिल में अजीब भावनाएँ उठीं—उसने अपने अन्दर एक सिहरन-सी महसूस की। उसे नहीं मालूम था लेकिन पहली बार उसकी आत्मा को सौन्दर्य का आभास हुआ था और उस आभास ने उसे सुख पहुँचाया था।

'मैं बहुत खुश हूँ।' फ़िलिप अपने आप से कह उठा।

फ़िलिप को जल्दी ही परिवार के अन्य व्यक्तियों के बारे में काफी ज्ञान प्राप्त हो गया। श्रीमती एरलिन की बड़ी पुत्री, थेकला का प्रेम एक अंग्रेज युवक से था जो पहले कभी यहाँ जर्मन भाषा सीखने के लिए आया था। लेकिन युवक के पिता ने विवाह की आज्ञा नहीं दी थी। इसीलिए मिस थेकला अक्सर उदास रहती थीं और कभी-कभी उनकी आँखों में आँसू भी छलक आते थे। अक्सर फ़िलिप तथा किसी और युवती के साथ चित्र बनाने के लिए वह बाहर चली जाती थी और यों दिल बहल जाता था।

मिस हेडविग की प्रेमकथा भी बहुत दुखपूर्ण थी। उसके पिता बर्लिन में व्यापार करते थे। एक बड़े खानदान के युवक का उससे प्रेम हो गया था लेकिन युवक के घरवालों ने मिस हेडविग से उसका विवाह होना अपनी मर्यादा और प्रतिष्ठा के खिलाफ़ समझा था। मिस हेडविग ने ये सब बातें शरमाते-झिझकते

हुए फ़िलिप से बतायी थीं। फ़िलिप मिस हेडविग को वहाँ की अन्य युवतियों से अधिक पसन्द करता था।

फ़िलिप को हिडॅलबर्ग में रहते हुए करीब तीन महीने हुए होंगे कि श्रीमती एरलिन के यहाँ एक नया अँग्रेज रहने आया। उसका नाम हेवर्ड था। शाम को खाने के समय फ़िलिप ने पहली बार अपने ही देश से आये हुए इस अजनबी को देखा। आज खाने के कमरे में खासा शोर-गुल था। बात यह थी कि थेकला के प्रेमी के पिता ने रिश्ता मन्जूर करने के लिए थेकला को इंगलैंड बुलाया था। इसके अतिरिक्त मिस हेडविग के भाग्य का सितारा भी चमक उठा था। उसके प्रेमी से उसकी सगाई पक्की हो गयी थी और उसे अपने विवाह के लिए फ़ौरन ही जाना था। इसलिए उस शाम को खूब खुशियाँ मनायी गयीं, खास किस्म की शराब की बोतल खोली गयी इस शुभ अवसर पर। मिस हेडविग ने भी खूब गीत सुनाये।

हेवर्ड और फ़िलिप खाने की मेज पर एक दूसरे के सामने बैठे थे लेकिन उस राग-रंग में फिलिप उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दे सका था।

हेवर्ड लगभग छब्बीस वर्ष का युवक था—गौर वर्ण था, घुँघराले बाल थे। आँखें बड़ी-बड़ी और नीली थीं पर उनमें अभी से थकान की झलक-सी थी। ऐना को लोगों की मुखाकृतियों में बहुत दिलचस्पी थी। उसने हेवर्ड के चेहरे का गौर से अध्ययन किया था और वह उसकी चर्चा फ़िलिप से कर रही थी। हेवर्ड जर्मन भाषा नहीं जानता था। वह वार्त्तालाप में कोई भाग नहीं ले रहा था और उन सबसे दूर खड़ा था।

फ़िलिप और हेवर्ड की बातचीत दूसरे दिन हो पायी। जल्दी ही दोनों एक दूसरे के निकट आ गये। बात यह थी कि थेकला के इंगलैंड चले जाने से ऐना को घर का काम ज्यादा करना पड़ता था, मिस सेसिली इधर कई दिनों से उन लोगों से कटी-कटी रहती थीं, मिस हेडविग जा ही चुकी थीं और वीक्स, जो एक अमरीकन था, दक्षिणी जर्मनी का कुछ दिनों के लिए भ्रमण करने चला गया था। इसलिए फ़िलिप और हेवर्ड अकेले रह गये थे।

फ़िलिप की आदत थी कि वह लोगों से एकदम घनिष्ठ नहीं हो पाता

था। पहले-पहल उसे हमेशा झिझक ही मालूम होती थी। हेवर्ड ने एक दिन शाम को फ़िलिप के सामने साथ घूमने चलने का प्रस्ताव रखा। फ़िलिप ने अपने पैर की तरफ़ देख कर कहा—'मैं ज्यादा तेज तो चल नहीं सकूँगा!

'शर्त बदकर तो चलना नहीं है। हमें तो सिर्फ टहलना ही है', हेवर्ड ने उत्तर दिया।

रास्ते भर दोनों में खूब बातें हुईं। कोई ज्यादा अनुभवी व्यक्ति होता तो समझ जाता कि हेवर्ड दूसरों पर अपने थोड़े से ज्ञान का, अध्ययन का रोब डालना चाहता है। लेकिन फ़िलिप पर उसके छिछले ज्ञान का काफी प्रभाव पड़ा। हेवर्ड की नयी बातें फ़िलिप को अजीब सी लगीं। जिन बातों को फ़िलिप अब तक महान मानता आया था उनका हेवर्ड मजाक उड़ाता था। उन दकियानूसी विचारों में हेवर्ड का विश्वास नहीं था। उस नये व्यक्ति की नयी मान्यताएँ और नये विचार फ़िलिप पर अपना असर डाले बिना न रह सके।

फ़िलिप के नये मित्र ने उस दिन उसे बहुत से लेखकों और उनकी पुस्तकों के बारे में बताया। दान्ते, ऑरनल्ड और उमर खैयाम के विषय में हेवर्ड को पता था। वह स्वयं भी कवि था और उसने फ़िलिप को अपनी कुछ कविताएँ भी सुनायीं।

जब तक वे लोग घर पहुँचे फ़िलिप हेवर्ड का आदर करने लगा था।

इसके बाद तो हेवर्ड और फ़िलिप दोनों रोज ही साथ घूमने जाने लगे और धीरे-धीरे हेवर्ड के बारे में उसे ज्यादा जानकारी प्राप्त हुई। हेवर्ड एक खाते-पीते परिवार का था; पिता की मृत्यु के बाद अपनी पैतृक सम्पत्ति से उसे तीन सौ पाउंड सालाना की आय थी। वह पढ़ने में तेज रहा था; उसे साहित्य और कला का बहुत अच्छा ज्ञान था और वह स्वयं एक खासा अच्छा कवि था। लेकिन जिन चीजों को सब लोग अच्छा और महान मानते थे उन्हें प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले हेवर्ड की दृष्टि में ओछे और कमअक्ल थे। उसके कलात्मक व्यक्तित्व को ऊँचे आदर्शों की तलाश थी, वह सौन्दर्य की आत्मा को पाना चाहता था। आम चीजों को प्राप्त कर लेना उसे अपने आदर्शों के सामने हमेशा बहुत ही तुच्छ मालूम होता था। कोई पेशा ऐसा नहीं था जिसमें

उसकी प्रतिभा काम में आ सके। इसलिए इंगलैंड से और कर्ज से वह भाग आया था। उसने यूरोप में भी काफी भ्रमण किया था।

फ़िलिप के मन में हेवर्ड के लिए अपार श्रद्धा हो गयी थी।

जब तक वीक्स् दक्षिणी जर्मनी के भ्रमण से लौटा तब तक फ़िलिप हेवर्ड से बहुत प्रभावित हो चुका था। वह उसका आदर्श था। हेवर्ड की सहायता से ही फ़िलिप अपने को उस आदर्श तक उठाने के लिए खूब अध्ययन कर रहा था।

एक दिन वीक्स् ने फ़िलिप से कहा—'तुम्हारा नया दोस्त देखने में कवि लगता है।'

'कवि तो वह है ही!'

'अमरीका में हम ऐसे लोगों को ठलुआ कहते हैं।'

फ़िलिप अपने आदर्श के इस अपमान से बहुत नाराज हुआ।

ताना देते हुए वीक्स् ने कहा—'अच्छा तो वह कविता ही करता है?'

नाराजी में फ़िलिप ने उत्तर दिया—'तुम उसे क्या जानो!'

'क्यों नहीं! मैं ऐसे लोगों को खूब जानता हूँ। ऐसे मैंने सैकड़ों देखे हैं।'

'सैकड़ों तुमने कहाँ देख लिये?'

'ऐसे लोग हर जगह पाये जा सकते हैं—पेरिस के कलाकारों की बस्ती में, बर्लिन और म्यूनिख के बोर्डिङ्ग-हाउसों में। फ्लोरेंस में तुम्हें वे बॉटिचेली के चित्रों के सामने खड़े मिलेंगे, रोम में गिरजों की अद्भुत नक्काशियों के गुण गाते मिलेंगे। वे हमेशा ऊँचे आदर्शों का बखान करते पाये जायँगे—इससे उनका कोई सम्बन्ध नहीं कि वह आदर्श हैं क्या? वे आपसे कहेंगे कि वे एक महान कृति की रचना कर रहे हैं! वे सैकड़ों आदमी, सैकड़ों महान ग्रन्थों को दिल ही में छिपाये रहते हैं और होता यह है कि उनमें से कोई ग्रन्थ कभी भी नहीं लिखा जाता।'

वीक्स् बहुत गम्भीरता से बात कर रहा था पर उसकी आँखों में एक चमक थी और फ़िलिप को लगा कि वह उसका और हेवर्ड का मजाक उड़ा रहा है।

'तुम बकवास कर रहे हो!' नाराज होकर फ़िलिप ने कहा।

५

वीक्स् ने हेवर्ड और फ़िलिप को अपने कमरे में बात करने के लिए बुलाया। होते-होते बात ग्रीक लेखकों पर होने लगी। हेवर्ड का विचार था कि इस विषय पर तो वह उस्ताद ही है। उसने बड़े जोर से अपने विचार प्रकट किये, कुछ ऐसे कि मानो वीक्स् और फ़िलिप को उस विषय पर कुछ आता ही नहीं।

वीक्स बड़ी नम्रता से सब कुछ सुनता रहता था पर बीच-बीच में वह ऐसे प्रश्न कर बैठता था जिसका उत्तर अपने को विद्वान् समझनेवाला हेवर्ड नहीं दे पाता था। और फिर वीक्स् हेवर्ड के विचारों की धज्जियाँ उड़ा देता था। वास्तव में वीक्स् का अध्ययन गहरा था और हेवर्ड का ज्ञान छिछला था—केवल एक भ्रम था। हेवर्ड गुस्से से तड़प उठता था।

कभी-कभी वाद-विवाद का विषय साहित्य और कला से हटकर धार्मिक गुत्थियों पर भी आ जाता था। वीक्स् तो धर्मशास्त्र का अध्ययन करता ही था और हेवर्ड अपनी राय में दुनिया के हर विषय पर बात कर सकने के योग्य था। लेकिन हुआ यह कि उन लोगों की इन बहसों ने फ़िलिप के विचारों को बिल्कुल रौंद डाला!

शिष्टाचार, नैतिकता, धर्म और विश्वास की जितनी भी मान्यताएँ फ़िलिप ने अब तक सँजो कर रखी थीं उन सब को वीक्स के प्रबल तर्क ने उखाड़ फेंका, आस्था की मीनारें डगमगाने लगी थीं।

बचपन से फ़िलिप यही सुनता आया था कि जो लोग धर्म और भगवान् पर विश्वास नहीं करते वे पतित होते हैं, बुरे होते हैं—उनमें इन्सानियत नाम को भी नहीं होती। वीक्स् तो इनमें से किसी पर विश्वास नहीं करता था, फिर

भी उसका जीवन पवित्रता और सम्पन्नता का आदर्श था। एक बार जब फ़िलिप बीमार पड़ा था तो वीक्स् ने उसकी इतनी सेवा की थी जितनी कि बस सिर्फ़ माँ ही कर सकती है। वीक्स् में कोई बुराई नहीं थी—उसमें अपार दया और इन्सानियत थी। अविश्वासी होते हुए भी वीक्स् इतना अच्छा क्यों था--- कैसे था?

धर्म और भगवान् में, पुरानी मान्यताओं में, विश्वास न करते हुए भी पवित्र, उदार और अच्छा होना क्या सम्भव है? फ़िलिप की आत्मा में एक नवीन आन्दोलन ने जन्म ले लिया था।

एक दिन फ़िलिप ने वीक्स् से बड़ा अजीब-सा सवाल पूछा:

'पर तुम यही क्यों समझते हो कि तुम सही हो और पहले के महान् लोग सब गलत हैं?'

'तुम्हारा मतलब है कि वे बड़े समझदार और विद्वान् थे और मैं उतना नहीं हूँ?' वीक्स् ने कहा।

'हाँ!'

'तो पहले के विद्वानों का तो मत यह भी था कि दुनिया गोल नहीं, चौकोर है और सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमती है।'

'इससे क्या?'

'इससे यह सिद्ध होता है कि समय और ज्ञान प्रगतिशील हैं। पुराने ऋषि और विद्वान् तो अन्धविश्वास के युग में रहते थे। जिन बातों में वे विश्वास करते थे वह अब बिलकुल गलत साबित हो चुकी हैं।'

'तो अब भी क्या पता कि हम जो जानते हैं वही सत्य है?'

'यह भी मैं नहीं कहता!'

'तब किसी भी चीज में कैसे विश्वास किया जा सकता है।'

'मुझे नहीं मालूम!'

'तो मैं नहीं समझता कि लोग भगवान् में भी क्योंकर विश्वास करते हैं?'

यह कहते ही फ़िलिप को धक्का-सा लगा। उसने महसूस किया जैसे सब कुछ खत्म हो गया है। मनुष्य की स्वाभाविक जिज्ञासा का अन्तिम उत्तर

भगवान् की कल्पना है। यदि इस विश्वास का भी अन्त हो जाय तो जिज्ञासा अनन्त हो जाती है।' ये शब्द कहते ही फ़िलिप ने अनुभव किया कि उसके अन्तिम विश्वास का भी अन्त हो गया। वह अपने से डर गया और तेजी से वीक्स् का कमरा छोड़ कर बाहर निकल आया।

विश्वास का अन्त हो जाना फ़िलिप के लिए कुछ बड़ा अजीब-सा था। उसे लगा कि जिन आधारों पर उसके जीवन की नींव थी वे टूट कर बिखर गये थे। उसे एक विशाल अकेलेपन का आभास हुआ। दिन में से गर्मी और चमक चली गयी और रातें अधिक सुनसान हो गयी, फ़िलिप के लिए।

लेकिन इस नयी चेतना ने उसके अन्दर क्रान्ति जगा दी और उसकी इस मानसिक सरगर्मी से उसके जीवन को ढाढ़स और शक्ति मिली। जिस नये संसार को अब उसने अपने सामने पाया उसमें उसको नवीन मगर दिलचस्प अनुभवों की कमी न दिखाई दी। जो विश्वास उसका सम्बल रहा था, जिसने उसके व्यक्तित्व को अब तक ढँक रखा था, वह अब उसे भार मालूम पड़ने लगा—व्यर्थ लगा, और उसे त्याग देने पर उसको दुःख नहीं हुआ। उसके लिए उसका यह नया दर्शन इतना महत्वपूर्ण था, इतना महान् था कि उसे वीक्स् और हेवर्ड की बुद्धि पर भी हँसी आने लगी। भावनाओं के संघर्ष में से उसका व्यक्तित्व अधिक मजबूत होकर उभरा था।

अपनी खोज के हर्ष में मदमस्त फ़िलिप एक दिन अकेले फिर उसी स्थान पर घूमने पहुँच गया जो उसे बहुत प्यारा लगता था। वह उसी टीले पर खड़ा था जहाँ से उसने पहली बार राइन नदी की घाटी का अपूर्व सौन्दर्य देखा था। हालाँकि अब पतझड़ आ गया था, फिर भी उस समय आकाश में बादल नहीं थे। अब भी वह घाटी धूप में झिलमिला रही थी। दूर-दूर पर नगर बसे हुए थे और बीच-बीच में राइन का लहराता हुआ जल चमचमा रहा था—जैसे, सारी घाटी में सोना भरा हो!

फ़िलिप के दिल में अपार हर्ष और सन्तोष था। उसे लगा कि संसार का तमाम सौन्दर्य उसके सामने बिखरा पड़ा है और वह उसका भोग करने के लिए पूर्णतया स्वतन्त्र है। उसे अब कोई बन्धन, कोई भय नहीं रोक सकता। उसके

कंधों पर उत्तरदायित्व का बोझ नहीं है। वह कर्म करने में अब बिल्कुल स्वतन्त्र है, उसे अब कोई सङ्कोच नहीं रोक सकेगा। वह बिल्कुल आज़ाद है—हवा की तरह आज़ाद।

सुख और सन्तोष में उसने उसी भगवान् को धन्यवाद दिया जिस पर से उसका विश्वास खत्म हो चुका था।

क्रिसमस के पहले ही हेवर्ड इटली चला गया। फ़िलिप को रंज न हुआ। हेवर्ड फ़िलिप के व्यक्तित्व पर कुछ-कुछ छाने लगा था और फ़िलिप का व्यक्तित्व इसके खिलाफ़ विद्रोह कर उठा था।

हेवर्ड इटली गया था और वहाँ से उसने फ़िलिप को पत्र लिखे थे। इसमें सन्देह नहीं कि हेवर्ड को भाषा का अच्छा ज्ञान था और उसके पत्रों की भाषा सुन्दर होती थी। उन पत्रों में इटली के रंगीन और सजीले वातावरण की छवि खूब झलकती थी। हेवर्ड ने रोम के विषय में लिखा था—अल्बान पर्वतमाला का सुन्दर चित्र खींचा था, टॅसकनी के सुहाने बसन्त का हाल लिखा था और फ़िलिप को इटली आने का निमन्त्रण दिया था। फ़िलिप के जवान दिल में वे वर्णन साकार होकर नाच उठे थे। पर वह गरीब था और भ्रमण नहीं कर सकता था। वह अपनी विपन्नता से खीझ उठा, और मजबूरी में अपना दिल मसोस कर रह गया।

लेकिन भाग्यवश हेवर्ड के पत्र कम ही आते थे और फ़िलिप ने अपने विचलित होते हुए मन को काबू में करके अपना काम शुरू कर दिया था। हिडॅलबर्ग के विद्यालय से वह मैट्रिक्यूलेशन की परीक्षा पास कर चुका था। इधर फिशर नामक विद्वान् प्रसिद्ध दार्शनिक शोपॅनहॉवर के सिद्धान्तों पर भाषण दे रहा था। उस महान् दार्शनिक के सिद्धान्तों में फ़िलिप ने एक जबरदस्त आकर्षण महसूस किया—वह हैरान रह गया। उस विचारधारा ने फ़िलिप के अन्दर एक ऐसी निराशावादिता जगा दी जिससे उसके हृदय को एक अजीब प्रेरणा मिली। उसे लगा कि दुनिया में—उसके आनेवाले जीवन में ग़म के बेरहम थपेड़े होंगे और चारों ओर गहरा अन्धकार होगा। फिर भी जीवन से वह छिपकर भागना नहीं चाहता था। इन विचारों ने उसमें भय

या पलायन की कोई भावना पैदा नहीं की थी। वह अपने इस जीवन को छोड़ कर लहरों में उतरना चाहता था।

इसलिए जब उसकी चाची का पत्र आया कि उनका और उसके चाचा का विचार यह है कि अब उसे इंगलैंड वापस लौटना चाहिए तो उसने कोई आपत्ति नहीं की। वह नये जीवन और नये अनुभवों के लिए अधीर था।

जुलाई में फ़िलिप हिडेलबर्ग से घर के लिए रवाना हो गया।

६

चाची लुइसा ने फिलिप को अपनी बाँहों में लेकर चूम लिया और उनकी आँखों से हर्ष के आँसू बह निकले। फ़िलिप ने कुछ अजीब-सी उलझन महसूस की। उसे पता न था कि चाची स्नेह की कितनी भूखी हैं और उसे वे कितना चाहती हैं।

'अब तो तुम जवान हो गये!' चाची को अपार हर्ष था—'तुम्हारे बिना यहाँ बड़ा सूना-सा लगता था। घर आने पर तुम खुश तो हो न?'

'हाँ, बहुत!' फ़िलिप ने उत्तर दिया। चाची के प्यार ने फ़िलिप में भी स्नेह पैदा कर दिया था।

चाचा की मित्र, मिस विलकिन्सन भी, जिन्होंने जर्मनी में फ़िलिप के रहने और पढ़ाई की व्यवस्था की थी उन दिनों छुट्टियाँ बिताने ब्लैकस्टेबिल आयी हुई थी। शिष्टाचार का तकाजा था कि वह तब तक घर के बाहर रहतीं जब तक मिस्टर और मिसेज कैरी दिल से अपने लौटे हुए भतीजे का स्वागत न कर लें। थोड़ी देर में वह वापस आ गयीं और फ़िलिप से उसका परिचय कराया गया।

मिस विलकिन्सन हाथ में गुलाब का एक फूल लिये हुए थीं। मुस्कराते हुए वह फूल फ़िलिप के कोट में लगा दिया। फ़िलिप झेंप गया।

फ़िलिप का विचार था कि पादरियों की लड़कियाँ देखने में सुन्दर नहीं होतीं, ऊटपटाँग कपड़े पहिनती हैं और आमतौर पर बदसूरत होती हैं। पुरुष वर्ग के साथ उनका व्यवहार भी बड़ा अजीब-सा होता है। लेकिन मिस विलकिन्सन को उसने बिल्कुल भिन्न पाया। फ़िलिप ने देखा कि वह बहुत अच्छे कपड़े पहनती हैं और उनमें आकर्षण की भी कमी नहीं है। फिर भी फ़िलिप को उनके पाउडर भरे चेहरे से चिढ़-सी हुई। फ़िलिप को उनकी फ्रान्सीसी की पुट ली हुई भाषा में, उनकी मुस्कराहट में, उनके व्यवहार में कृत्रिमता मालूम हुई और इस सबसे फ़िलिप को उनके प्रति चिढ़ मालूम हुई।

लेकिन मिस विलकिन्सन को फ़िलिप के इस खिंचाव का ज्ञान नहीं था। वह फ़िलिप से बड़े ध्यान से बातचीत करती थीं। कभी-कभी फ़िलिप को उनके द्वारा किये गये मज़ाकों पर हँसना भी पड़ता था। धीरे-धीरे फ़िलिप को उनसे बात करने की, उनके साथ रहने की आदत पड़ गयी। पहले का खिंचाव और झिझक खत्म हो गयी और मिस विलकिन्सन उसे धीरे-धीरे अच्छी लगने लगीं। बातचीत करने का उनका फ्रान्सीसी ढंग भी जिससे कभी उसे चिढ़ मालूम होती थी अब फ़िलिप को बहुत भला मालूम पड़ने लगा।

एक दिन जब मिस विलकिन्सन कमरे में नहीं थीं, फ़िलिप ने अपनी चाची से पूछा—'चाची, मिस विलकिन्सन की आयु क्या होगी ?'

'औरतों से कभी उनकी उम्र नहीं पूछनी चाहिये, बेटे। लेकिन तुमसे शादी करने के लिए तो उनकी उम्र बहुत ज्यादा है !'

चाचा के मोटे चेहरे पर हल्की सी मुस्कराहट आयी—'अरे, वह कोई बच्ची नहीं है। अब से बीस साल पहले भी वह काफ़ी बड़ी थी।'

'दस वर्ष से अधिक क्या रही होगी,' फ़िलिप ने कहा।

'मेरे ख्याल से तो वह लगभग बीस साल की रही होगी !' चाचा ने कहा।

'अरे नहीं जी, ज्यादा से ज्यादा सोलह-सत्रह की ही थी तब वह', चाची लुइसा ने प्रतिवाद किया।

'मतलब यह कि अब वह तीस के ऊपर तो होंगी ही', फ़िलिप ने कहा।

इतने में मिस विलकिन्सन कोई गीत गुनगुनाती हुई कमरे में आयीं। वह और फ़िलिप साथ घूमने जानेवाले थे। बड़े अन्दाज से दस्ताने का बटन लगवाने के लिए उन्होंने फ़िलिप की तरफ़ हाथ बढ़ा दिया। बटन लगाते हुए फ़िलिप झेंप गया।

रास्ते में दोनों में खुलकर बातें हुईं। मिस विलकिन्सन ने फ़िलिप को बर्लिन के बारे में बताया जहाँ वह रहती थीं और फ़िलिप ने उन्हें हिडॅलबर्ग के अपने छोटे-छोटे किस्से सुनाये। अनजान में फ़िलिप ऐसी बातें करने की कोशिश कर रहा था, जिससे मिस विलकिन्सन का दिल बहले और उनकी आँखों में वह समझदार और प्रौढ़ मालूम पड़े। जिस ध्यान और संलग्नता से वह उसकी बातें सुन रही थीं, उससे फ़िलिप को सन्तोष हो रहा था।

'तुम्हारी बातों में इतना व्यंग है कि तुमसे डर लगने लगा है,' मिस विलकिन्सन ने कहा।

नारी के मुँह से यह बात सुनकर युवक हमेशा ही गर्व, सुख और सन्तोष से फूल उठते हैं। मिस विलकिन्सन ने फ़िलिप से उसके हिडॅलबर्ग के निवास-काल की प्रेम-कथाएँ भी पूछीं। फ़िलिप ने बहुत सीधेपन से उत्तर दिया कि अब तक उसने कभी प्यार नहीं किया।

'सच क्यों बताओगे तुम? इस उम्र में ऐसा ही होता है', मिस विलकिन्सन ने उसे छेड़ा।

फ़िलिप अपनी झेंप मिटाने के लिए हँस दिया।

'तुम तो बहुत कुछ जानना चाहती हो!'

'मैं जानती थी यही कहोगे! पर देखो तो चेहरे पर क्या रंग हुआ जा रहा है!' मिस विलकिन्सन ने विनोद किया।

जर्मनी से लौटने के बाद चाचा और भतीजे में फ़िलिप के भविष्य के बारे में खूब बहसें होती थीं। ऑक्सफोर्ड विद्यालय जाकर पढ़ने से फ़िलिप ने साफ़ इनकार कर दिया था। मिस्टर कैरी भी इस बात से अब सहमत हो गये थे। फ़िलिप की पैतृक सम्पत्ति में से अब दो हजार पाउंड बचे थे। ऑक्सफोर्ड में तीन साल रहने से काफ़ी धन व्यय हो जायगा और उससे भविष्य में जीविका

कमाने में भी कोई सहायता नहीं मिलेगी। चाचा की समझ में आ गया कि ऑक्सफोर्ड जाना धन का अपव्यय होगा। फ़िलिप ने गिरजे की नौकरी करने से इनकार कर ही दिया था।

चाचा ने कहा—'अपने पिता की तरह डॉक्टर क्यों नहीं हो जाते!'

'डॉक्टर बनने से मुझे नफ़रत है!' फ़िलिप ने उत्तर दिया।

अन्त में इस बात पर निर्णय हुआ कि फ़िलिप वकील बनने के लिए शिक्षा ले। इस विचार से जान-पहिचान के एक सॉलिसिटर, एलबर्ट निक्सन, को पत्र लिखा गया कि क्या उनके यहाँ कोई स्थान खाली है। कुछ दिनों के बाद मिस्टर निक्सन का उत्तर आया। उनके यहाँ तो कोई जगह खाली नहीं थी और फिर उनकी राय थी कि सॉलिसिटर के व्यवसाय में धन की कमी होने से फ़िलिप के लिए कोई अच्छा भविष्य भी नहीं था। उनका सुझाव था कि चार्टर्ड एकाउन्टेंट होने से फ़िलिप का भविष्य ज्यादा अच्छा बन सकेगा। ब्लैकस्टेबिल में किसी को भी यह पता न था कि आखिर यह चार्टर्ड एकाउन्टेंट क्या बला होती है? लेकिन निक्सन के एक-दो पत्र और आये जिनमें उन्होंने लिखा कि उनके जान-पहिचान के एक चार्टर्ड एकाउन्टेंट हरबर्ट कार्टर के यहाँ एक क्लर्क की जगह है। उसके लिए उन्हें तीन सौ पाउंड देना पड़ेगा। अगर फ़िलिप को काम पसन्द न आये तो साल भर बाद फिलिप जगह छोड़ सकता है और कार्टर आधा धन वापस कर देगा। अन्त में यही तय हुआ कि पन्द्रह सितम्बर तक फ़िलिप लन्दन चला जायगा और चार्टर्ड एकाउन्टेंट की शिक्षा लेना प्रारम्भ कर देगा।

'अभी मुझे लन्दन जाने के लिए पूरा एक महीना है!' फिलिप ने कहा।

'और तब तुम तो आजाद हो जाओगे···पता नहीं हम फिर कभी मिल भी सकेंगे या नहीं?' मिस विलकिन्सन ने उदास होते हुए कहा।

'क्यों नहीं!' फिलिप ने उत्तर दिया।

'तुममें भावुकता तो है ही नहीं! तुम क्यों समझोगे मेरी बात!'

फिलिप झेंप गया। वह खुद अपने ऊपर खीझ रहा था।

वह दोनों जवान थे; आपस में केवल इधर-उधर की बातें करते रहना

केवल उसकी मूर्खता और बुद्धूपन ही तो था। उसे मिस विलकिन्सन से प्रेम की बातें करनी चाहियें। मिस विलकिन्सन तो उससे अक्सर प्रेम की बातें किया करती थीं। उन्होंने फ़िलिप को बताया था कि लोगों ने पहले भी उनसे प्रेम किया था। प्रेम किया जाना उनके लिए कोई बात नयी न थी।

दिन में बहुत गर्मी रहती थी। मिस विलकिन्सन अपनी बड़ी सी हैट में बहुत भली लग रही थीं; ओठों के ऊपरी भाग पर पसीने की कुछ बूँदें उभर आयी थीं। अकेलेपन में पढ़ते समय या रात को सोते वक्त फ़िलिप को मिस विलकिन्सन का वह रूप बहुत प्यारा लगता था। बिस्तर पर लेटे-लेटे उसे उनकी अक्सर याद आती थी।

फ़िलिप को मिस विलकिन्सन से प्रेम करना चाहिये था। शायद मिस विलकिन्सन को इन्तजार भी था इस बात का। इस पर भी वह चुप रहा तो मिस विलकिन्सन खीझ गयीं उससे। कैसा बुद्धू है वह?

'क्या सोच रहे हो?' मिस विलकिन्सन ने फ़िलिप को छेड़ते हुए पूछा। वे दोनों एकान्त में बैठे थे।

'नहीं बताता!'

फ़िलिप के दिल में आया कि वह उन्हें चूम ले। लेकिन कैसे,—क्यों? उनमें कभी कोई प्रेम की बातें तो हुई नहीं थीं। कहीं वह नाराज हो गयीं तो? या कहीं उन्होंने चाचा से शिकायत कर दी तो?

'अरे बताओ न!' मिस विलकिन्सन ने चुटकी लेते हुए कहा।

'मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा था!' फ़िलिप ने थोड़ी हिम्मत की।

'क्या सोच रहे थे?'

'यह जान कर क्या करोगी!'

'शैतान कहीं के!'

फ़िलिप चिढ़ जाता था जब वह यह कहती थीं। जैसे वह छोटा-सा बच्चा हो!

'तुम तो मुझे बच्चा समझती हो!'

'नाराज हो गये?'

'हाँ, बहुत !'

मिस विलकिन्सन ने फ़िलिप का हाथ अपने हाथों में ले लिया और हल्के से दबा दिया।

दूसरे दिन रात को खाना खाने के बाद वे दोनों घूमने निकल गये। मिस विलकिन्सन ने फिर छेड़-छाड़ शुरू की। एकाएक फ़िलिप ने उन्हें अपने पास खींचा और चूम लिया। मिस विलकिन्सन हँस दीं—उन्होंने अपने आपको हटाने की कोई चेष्टा नहीं की। फ़िलिप गर्व से फूल गया। पहली बार उसने किसी औरत को प्यार से चूमा था।

'यह क्या करते हो ?'

'क्यों ?'

'क्योंकि मुझे बहुत अच्छा लग रहा है।'

इसके बाद तो उनका प्यार दिन-दूना बढ़ने लगा। फ़िलिप हर्ष से फूल उठा जब मिस विलकिन्सन ने उससे कहा कि वह उससे बहुत प्रेम करती हैं। उन्हें फ़िलिप की आँखें, फ़िलिप का चेहरा, फ़िलिप का सब कुछ बहुत अच्छा लगता था।

फ़िलिप के लन्दन जाने के केवल तीन सप्ताह बाकी थे। यह सोचकर मिस विलकिन्सन का दिल टूट जाता था।

फ़िलिप के अन्दर शरीर की भूख जाग उठी थी।

'तुम इतनी कठोर क्यों हो ?'

'तुम्हें इतने से सन्तोष नहीं ? सब आदमी बड़े स्वार्थी होते हैं', मिस विलकिन्सन ने समझ लिया था कि फ़िलिप क्या चाहता है।

लेकिन फ़िलिप ने जोर दिया।

'लेकिन यहाँ तो असम्भव है ! यहाँ कैसे ?'

फ़िलिप उतावला हो गया था; वह तरह-तरह के उपाय सोचता था लेकिन कोई भी मिस विलकिन्सन को अच्छा न लगता था। आखिर एक दिन बहुत अच्छी तरकीब निकल आयी। अगले इतवार को शाम को फ़िलिप के चाचा-चाची कहीं बाहर जानेवाले थे।

'अगर तुम न जाओ तो काम बन जाये ।'

'हट ! मैं नहीं करूँगी यह ।'

फ़िलिप हताश हो गया ।

लेकिन जब इतवार आया तो फ़िलिप अचम्भे में रह गया । मिस विलकिन्सन ने कह दिया कि वह घर पर ही रहेंगी क्योंकि उनके सिर में दर्द हो रहा था । नारी का चरित्र समझ में नहीं आता कभी !

छः बजे के बाद फ़िलिप और मिस विलकिन्सन घर में अकेले रह गये । फ़िलिप को डर-सा लगने लगा । वह अपने से गुस्सा होने लगा कि आखिर उसने यह तरकीब सोची ही क्यों ! लेकिन अब तो देर हो गयी, अब क्या हो सकता है और मिस विलकिन्सन उसे कितना नीच और कायर समझेंगी अगर उसने अब भी कुछ न किया ! बड़ी दुविधा में था फ़िलिप !

दबे पाँव वह मिस विलकिन्सन के कमरे तक गया । उसके हाथ काँप रहे थे जब उसने कमरे का दरवाजा चुपके से खोला । मिस विलकिन्सन अपने कुछ कपड़े उतार चुकी थीं—अर्धनग्न रूप में वह फिलिप को बहुत भद्दी लगीं ।

फ़िलिप ने दरवाजा अन्दर से बन्द करके ताला लगा दिया ।

रात को फ़िलिप ठीक से सो भी नहीं सका और सुबह भी जल्दी ही उठ गया । उसने सन्तोष की साँस ली—वह अपने आप से बहुत खुश था । लेकिन पिछली रात का मिस विलकिन्सन का रूप उसकी आँखों के सामने दोबारा आ गया । उम्र ज्यादा होने के कारण उनकी खाल में यौवन की चमक और मुलायमियत नहीं थी और गले से जरा नीचे झुर्रियाँ पड़नी शुरू हो गयी थीं । चालीस से कम क्या होंगी ? फ़िलिप का सारा सुख—सब सन्तोष जैसे हवा हो गया । उनको चूमना भी अब वह कैसे बर्दाश्त कर सकेगा ?

जब वह कपड़े पहनकर थोड़ी देर बाद नाश्ता करने आया तो उसे सन्तोष हुआ कि मिस विलकिन्सन का मुँह उसकी तरफ नहीं है । वह यह सोचने लगा कि क्योंकर वह इतनी खराब बातें उनके बारे में थोड़ी देर पहले सोच रहा था । अच्छी खासी तो थीं वह । उसका आत्मविश्वास वापस लौट आया ।

जब वह थोड़ी देर बाद कमरे में अकेले रह गया तो बड़ी भावुकता से मिस

विलकिंन्सन ने कहा कि वह उससे बहुत प्रेम करती हैं। लेकिन उनके हमेशा फ्रेंच भाषा में बोलने से फिलिप को चिढ़ लगती थी। फ्रेंच उपन्यासों की तरह उसे इन बातों में भी कृत्रिमता और नकली रूमानियत मालूम पड़ती थी।

हालाँकि बाद के दिनों में भी दोनों में प्रेम का वही व्यवहार रहा फिर भी फ़िलिप के दिल में प्यार की या भावुकता की कोई लहर हिलोर नहीं लेती थी। उसे वह प्यार इसलिए अपनी इच्छा के विरुद्ध निभाना पड़ रहा था कि ऐसा न करने से मिस विलकिन्सन का दिल टूट जाता। फ़िलिप को किसी को भी दुःख पहुँचाना बुरा लगता था। प्रेम का यह स्वांग फ़िलिप के लिए एक भार था, मजबूरी थी। अन्त में वह दिन आ ही गया जिस दिन मिस विलकिन्सन को बर्लिन वापस लौटना था। गाड़ी पर जब वह बैठीं तो उनकी आँखों में जुदाई के आँसू थे।

स्टेशन से लौटते समय फ़िलिप ने एक गहरी साँस ली—'चलो, छुट्टी मिली!'

७
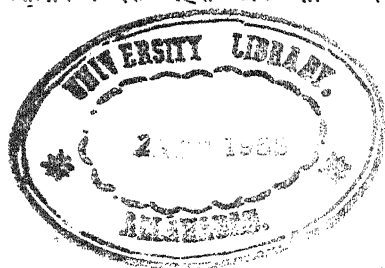
फ़िलिप लन्दन आ गया।

दूसरे दिन सुबह वह कपड़े पहनकर का दफ्तर जाने के लिए निकला। 'मेसर्स हरबर्ट कार्टर एन्ड कम्पनी' का दफ्तर चैन्सरी लेन में था। उसने देखा कि अभी समय काफी है और वह आराम से टहलता हुआ लगभग साढ़े नौ बजे तक दफ़्तर पहुँच गया। दफ्तर में पहुँचने पर उसने देखा कि वहाँ अभी कोई नहीं आया था।

'अभी कोई आया नहीं?'

'नहीं, सब लोग करीब दस-साढ़े दस तक आते हैं। आपको कोई काम है?'

'हाँ। मैं यहाँ नौकरी करने आया हूँ।'

जिस आदमी को उसने यह उत्तर दिया था, उसने फ़िलिप के पैरों की तरफ़ देखा। फ़िलिप शरमा गया। उसने अपना खराब पैर छिपाने की कोशिश की।

'आप बैठ जायँ। मि० गुडवर्दी थोड़ी देर में आते ही होंगे।'

फ़िलिप ने अपने चारों तरफ़ निगाह घुमाकर देखा। जिस कमरे में वह बैठा था, वह बड़ा अँधेरा था और उसमें बड़ी घुटन थी। सिर्फ़ एक रोशनदान से धुँधली-सी रोशनी आ रही थी। मेजों की तीन कतारें थीं और उनसे सटे हुए ऊँचे-ऊँचे स्टूल पड़े थे। धीरे-धीरे कमरे में और क्लर्क आने लगे। थोड़ी देर में मि० गुडवर्दी भी आ गये। वह फ़र्म के बड़े क्लर्क थे।

'मेरे साथ आइये,' चपरासी उन्हें मि० गुडवर्दी के पास लिवा ले गया।

मि० गुडवर्दी ने कुछ बातचीत की और उसे कुछ काम करने को बताया।

'आओ, मैं तुम्हें तुम्हारे बैठने की जगह भी बता दूँ। मि० कार्टर तो देर में आवेंगे।'

नौसिखुए क्लर्कों के लिए एक अलग छोटा-सा कमरा था। वाटसन नामक एक दूसरा युवक उसमें पहले से बैठा था। जब वे दोनों उस कमरे में पहुँचे तो वाटसन फ़ुर्सत से बैठा अखबार पढ़ रहा था।

फ़िलिप को वहाँ छोड़कर मि० गुडवर्दी चले आये। फ़िलिप ने देखा युवक वाटसन बहुत अच्छे कपड़े पहने है। वाटसन के कपड़ों का रोब फ़िलिप पर जम गया। उसने यह भी देखा था कि वाटसन मि० गुडवर्दी का विशेष आदर भी नहीं करता। वह शराब बनानेवाले एक धनी व्यक्ति का बेटा था न! वाटसन को जब यह मालूम पड़ा कि फ़िलिप ने कभी किसी विश्वविद्यालय में अध्ययन नहीं किया है तो उसके बोलने के ढंग में एक उपहासपूर्ण उपेक्षा आ गई।

थोड़ी देर में मि० गुडवर्दी फ़िलिप को मि० कार्टर के पास ले जाने के लिए आये। मि० कार्टर ने फ़िलिप से उठकर हाथ मिलाया। ये कुछ मस्त किस्म के आदमी मालूम पड़ते थे, जिन्हें शिकार से और खेलकूद से भी शौक था। उन्होंने फ़िलिप से बड़ी अच्छी तरह बात की। फ़िलिप उनके सौजन्य से बहुत प्रभावित हुआ।

फ़िलिप अपने काम में लग गया। कभी-कभी उसे थामसन नामक एक दूसरे क्लर्क के साथ बाहर दूसरी फ़र्मों का हिसाब जाँचने जाना पड़ता था। रोज वही हिसाब-किताब जोड़-घटाना, संख्याएँ! इस सब में फ़िलिप की तबीयत नहीं लगती थी; उसका इस ओर कोई रुझान ही नहीं था। उससे गलतियाँ होती थीं और थामसन उससे चिढ़ने लगा था। फ़िलिप की तरह वह पैसा देकर शिक्षा तो प्राप्त नहीं कर रहा था। उसे तो आजन्म क्लर्क ही बने रहना था क्योंकि उसके पास शिक्षा के लिए धन नहीं था। उसे फ़िलिप से ईर्ष्या थी। वह जलता था कि फ़िलिप उससे ज्यादा पढ़ा-लिखा है। वह तो कलम घिसते-घिसते बूढ़ा हो गया फिर भी उसका भविष्य अन्धकारपूर्ण है। और जब उसे फ़िलिप के काम में दोष निकालने का अवसर मिलता तो वह उसे खूब डाँटता और ज़लील करने का प्रयत्न करता। उसकी बातें मूर्खतापूर्ण थीं पर उनसे फ़िलिप के स्वाभिमान को चोट पहुँचती थी। फ़िलिप को वे बातें असहनीय हो गयी थीं।

एक-आध बार तो मि० गुडवर्दी ने भी कहा था—'तुम कुछ नहीं सीख रहे हो फ़िलिप। तुमसे ज्यादा अच्छा काम तो हमारा आफ़िस-बॉय ही कर लेता है।'

फ़िलिप को क्रोध आ जाता था—वह असन्तुष्ट रहने लगा था। जो काम उसे करना पड़ता था, वह बड़ा नीरस और बेमाने मालूम पड़ता था। धीरे-धीरे फ़िलिप उस काम से घृणा करने लगा। इससे जी हटाकर वह दफ्तर के कागजों पर चित्र बनाया करता था। उसने वाटसन के भी कई चित्र बनाये थे और वाटसन उसकी प्रतिभा का कायल हो गया था।

'मैं कहता हूँ, तुम चित्रकार ही क्यों नहीं हो जाते?' वाटसन ने कहा। फ़िलिप के चित्रों को वाटसन के घर वालों ने भी बहुत पसन्द किया था।

फ़िलिप की तबीयत काम से हट गयी थी। फ़र्म के मालिक मि० कार्टर ने भी एक दिन फ़िलिप को चेतावनी दी थी कि वह अपने काम के अयोग्य और सुस्त है। फ़िलिप इस बात की कल्पना भी न कर सका कि इस वातावरण में रहकर वह इसी काम को कैसे चार साल तक करता रहेगा। उसमें इस बात की

चेतना जाग्रत हुई कि जीवन में उसे इस गन्दे हिसाब-किताब से भी और ज्यादा अच्छे काम करने हैं। लन्दन के अपने नये जीवन से भी उसे पहले बहुत आशाएँ थीं लेकिन वह सब अब टूट चुकी थीं। उसे कोई नहीं जानता था—वह किसी से परिचित नहीं था। वह ऊब गया था लन्दन के इस नीरस और एकाकी जीवन से।

इधर हेवर्ड के पत्र फिर आने लगे थे। वह इटली में था और उसने लिखा था कि इस साल वसंत का मौसम वहाँ और वर्षों से अधिक सुहाना था। वह भी क्या है कि अपना जीवन एक छोटे से दफ्तर में बरबाद कर रहा है, जब सारे संसार में इतना सौन्दर्य बिखरा पड़ा है! क्यों नहीं वह यौवन का, जीवन का आनन्द उठाता? जीवन को केवल दो ही चीजें सुखी और सन्तुष्ट बना सकती हैं—प्रेम और कला! जीवन जीने के लिए है, सङ्घर्षों का सामना करने के लिए है। 'पता नहीं तुम पेरिस जाकर चित्र कला का अध्ययन क्यों नहीं करते? प्रतिभा की तुममें कमी नहीं', हेवर्ड ने अपने पत्र में लिखा था।

फ़िलिप भी तो इधर यही सोचा करता था। सब लोग कहते थे कि उसमें प्रतिभा है। हिडॅलबर्ग में उसके साथियों ने उसके चित्रों की प्रशंसा की थी; मिस विलकिन्सन तो उन्हें देखकर मुग्ध ही हो गयी थीं; वाटसन के परिवार ने भी—जो अजनबी थे—चित्रों की तारीफ की थी। फिर पेरिस जाकर चित्रकला का अध्ययन क्यों न किया जाय? क्यों अपने जीवन को इस गन्दे दफ्तर में बरबाद किया जाय?

केवल यही सोच कर कि उसकी कुल सम्पत्ति अब अट्ठारह सौ पाउंड से अधिक नहीं थी फ़िलिप हिचक जाता था। भावनाओं के साथ बह जाना उसकी आदत नहीं थी।

एक दिन मि० गुडवर्दी ने फ़िलिप से पूछा कि क्या वह पेरिस जाना पसन्द करेगा? फ़र्म को पेरिस में कुछ काम हर वर्ष रहता था और इसलिए साल में दो बार मि० गुडवर्दी एक क्लर्क के साथ पेरिस जाया करते थे। इस प्रस्ताव से फ़िलिप बहुत खुश हुआ।

और पेरिस से लौटने के कुछ दिनों बाद ही फ़िलिप ने उस फर्म से और अपने उस नीरस जीवन से विदा ले ली।

फ़िलिप घर वापस आ गया। उसके चाचा मिस्टर कैरी उसकी इस नयी योजना से कतई सहमत नहीं थे। हर कमजोर व्यक्ति की तरह उनका भी यह विश्वास था कि जो काम शुरू किया जाय उसी पर स्थिर रहना चाहिये। नये रास्तों और नये अनुभवों से वे डरते थे।

चाचा और चाची दोनों को फ़िलिप के कलाकार बनने के इरादे से धक्का-सा लगा। उनके विचार में फ़िलिप एक भले परिवार का लड़का था और कलाकार होना भले आदमियों का पेशा नहीं। इस पर भी फिर पेरिस जैसे शहर में रहना, जहाँ शायद ही कोई व्यक्ति सच्चरित्र हो।

'मैं तुम्हें पेरिस जाने की आज्ञा नहीं दे सकता।' चाचा ने सख्ती से निर्णय किया। चाचा की राय में पेरिस पाप और दुश्चरित्रता का केन्द्र था। 'तुम्हारी परवरिश एक भले परिवार में हुई है। तुम्हें पेरिस जाने की आज्ञा देकर मैं तुम्हारे माता-पिता की इच्छाओं के प्रति विश्वासघात नहीं करूँगा।'

'मुझे तो इस बात पर भी शक होने लगा है कि मैं भला हूँ भी कि नहीं,' फ़िलिप ने ढिठाई से उत्तर दिया।

इस बात को लेकर झगड़ा बहुत बढ़ गया। साल भर के बाद फ़िलिप इक्कीस वर्ष का होगा और तब उसे अपने धन पर कानूनी हक मिल सकेगा। तब तक तो चाचा का ही संरक्षण रहेगा और चाचा केवल इस बात पर तैयार थे कि वह फ़िलिप को उसी हालत में कुछ देंगे, अगर वह उसी फर्म में फिर से काम शुरू कर दे। अपने निश्चय के विरुद्ध चाचा कुछ भी सुनने को तैयार नहीं थे।

फ़िलिप को क्रोध आ गया—'आखिर रुपया तो मेरा है। आपको उसे बरबाद करने का कोई हक नहीं। मुझे आप पेरिस जाने से नहीं रोक सकते और न लन्दन लौटने को बाध्य कर सकते हैं!'

'अगर तुम मेरा कहा न करो तो मैं तुम्हें धन देने से इनकार कर सकता हूँ! इसका अधिकार मुझे अभी है!'

'मुझे कोई परवाह नहीं। मैंने निश्चय कर लिया है। मैं अपने कपड़े बेच दूँगा, किताबें बेच दूँगा, पिता से मिली सोने-चाँदी की चीजें बेच दूँगा पर पेरिस जाऊँगा अवश्य !'

तीन दिन तक चाचा-भतीजे में कोई बात नहीं हुई। चाची इस परिस्थिति से बहुत दुखी थीं। वह इन बातों पर बराबर सोचा करती थीं। उन्हें डर था कि फ़िलिप उनके पति के साथ-साथ उनसे भी नाराज है और इस विचार से उनका दिल दुख जाता था। वह फ़िलिप को दिल से प्यार करती थीं। उन्हें फ़िलिप की योजना से उतना विरोध नहीं था।

फ़िलिप ने हेवर्ड को भी लिखा था कि वह कला का अध्ययन करने के लिए पेरिस जाना चाहता है और हेवर्ड का उत्तर आ गया था। उसने फिलिप को कुछ परिचय-पत्र भी भेज दिये थे। फ़िलिप ने अपनी चाची से कह दिया कि पहली सितम्बर को वह पेरिस चला जायगा।

'लेकिन तुम्हारे पास धन तो है ही नहीं।'

'मैं आज ही टरकेनबरी अपना कुछ सामान बेचने जा रहा हूँ।'

चाची ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह थोड़ी देर बाद कपड़े पहनकर बाहर चली गयीं। जब वह कुछ देर बाद लौटीं तो फ़िलिप बैठा पढ़ रहा था। चाची ने फ़िलिप को एक लिफाफा दिया।

'यह क्या है ?' उसने पूछा।

'तुम्हारे लिए एक छोटा-सा उपहार।' चाची ने शरमाते हुए कहा।

फिलिप ने लिफाफा खोला। अन्दर से ग्यारह पाँच-पाउंड वाले नोट निकले और एक झोला जिसमें गिन्नियाँ भरी थीं।

'यह लगभग सौ पाउंड हैं !' चाची ने चुपचाप कहा।

फ़िलिप विचलित हो गया; उसकी आँखों में आँसू भर आये।

'यह आपकी बहुत बड़ी कृपा है, पर मैं यह न लूँगा।'

चाची की शादी के समय उनके पास तीन सौ पाउंड थे; अब उसमें से जो कुछ बचा था वह यही था।

'नहीं, फ़िलिप बेटा, इसे ले लो मुझे बहुत खुशी होगी। मुझे अफ़सोस है कि मेरे पास केवल इतना ही है!'

'लेकिन आपको इसकी जरूरत पड़ेगी।'

'नहीं, अब नहीं! मैं तो अब थोड़े दिन की ही मेहमान और हूँ!'

'ऐसा मत कहिये। आपको हमेशा जीना है; मैं आपके बिना नहीं रह सकूँगा!'

चाची ने अपना मुँह हाथों से ढँक लिया—वह जोर से रो पड़ी थीं। आँसू पोंछते हुए बोलीं—

'मैं पहले तो यही चाहती थी कि जब तक तुम्हारे चाचा रहें मैं जिन्दा रहूँ ताकि उन्हें अकेलापन न महसूस हो, उन्हें कष्ट न उठाने पड़ें। लेकिन अब सोचती हूँ कि तुम्हारे चाचा के लिए इसका कोई महत्व नहीं। मुझे कुछ हो भी गया तो वह दूसरा विवाह कर लेंगे। वह जीना चाहते हैं इसलिए मुझे पहले मर जाना चाहिये। इसमें मेरा स्वार्थ ही है। मैं अकेली न रह सकूँगी।'

फ़िलिप ने चाची को चूम लिया। उस अपार ममता के सामने उसे शरम-सी लगी। चाची के दिल में जो गम था उसका फ़िलिप को पहली बार आभास मिला।

'तुम ये रुपये लोगे न फ़िलिप? मैं जानती हूँ कि तुम्हारे लिए यह कुछ नहीं, पर तुम्हारे इसे स्वीकार करने से मुझे बहुत सुख मिलेगा। मैं हमेशा यही चाहती थी कि तुम्हारे लिए कुछ कर सकूँ। मेरे कभी सन्तान नहीं हुई और मैंने हमेशा बेटे की तरह तुमसे स्नेह किया। जब तुम छोटे थे तो मूर्खतावश मैं यह मनाती थी कि अगर तुम बीमार पड़ो तो मैं तुम्हारी सेवा-सुश्रुषा कर सकूँ। अब तो मुझे एक अवसर मिल सका है। आशा है कि एक दिन तुम बड़े कलाकार हो जाओगे और मुझे न भूलोगे।'

'आप बहुत अच्छी हैं, चाची जी!' फिलिप बोला—'मैं आपका बहुत एहसान मानता हूँ।'

'ओह! आज मैं कितनी खुश हूँ!' चाची की थकी हुई आँखों में सुख की जोत दौड़ गयी।

८

पेरिस !

फ़िलिप की इच्छा पूर्ण हो गयी थी। वह पेरिस पहुँच गया था। गाड़ी में सामान रखकर वह उस मामूली-सी बस्ती की तरफ़ चल पड़ा, जहाँ उसने अपने रहने के लिए एक कमरे का प्रबन्ध पहले से कर रखा था। गाड़ी में बैठे-बैठे उसने उन सड़कों को देखा जिनसे होकर वह गुजर रहा था। उसे लगा कि उन सड़कों पर और गलियों में जिन्दगी की उमंगें और रंगीनियाँ वहाँ के स्वतन्त्र वातावरण में बन्धनों से मुक्त होकर मुस्करा रही हैं। फ़िलिप के जवान दिल को इन्हीं की कामना थी—उसके हृदय में सुख और सन्तोष की लहर दौड़ गयी।

छोटे से मकान की पाँचवीं मंजिल पर फ़िलिप का कमरा था। कमरा बहुत ही छोटा था। एक बड़ा-सा पलंग पड़ा था, सिंगार मेज थी और उसी में कपड़ों की एक अलमारी थी। इन चीजों ने ही काफी जगह घेर ली थी। दीवार पर लगा हुआ कागज बहुत पुराना हो चुका था। और उसका रंग उड़ गया था। कमरे में कुछ घुटन महसूस होती थी फिर भी फ़िलिप को अपना यह कमरा बहुत अच्छा लगा।

हालाँकि काफी रात हो चुकी थी फिर भी फ़िलिप के दिल में इतना उत्साह और जोश था कि उसे नींद नहीं आयी। वह फिर बाहर निकल आया। कुछ दूर पर स्टेशन की बत्तियाँ रात के आसमानी सीने पर झिलमिला रही थीं। सामने के चौराहे पर खूब चहल-पहल थी। इधर से उधर धड़धड़ाती हुई ट्रामें चली जा रही थीं। फ़िलिप के दिल में सुख की एक ऊँची-सी लहर उठी और उसके चेहरे पर मुस्कान नाच उठी।

रात बहुत सुहावनी थी। सड़क के किनारे के रेस्तोराँ और कॉफीघर खचा-खच भरे हुए थे। बातचीत का हल्का-सा शोर हवा में तैर रहा था। फ़िलिप की आत्मा हर्ष के उन्माद से काँप गयी। वह बहुत रात बीते तक वहाँ बैठा रहा। जब वह अपने कमरे में लौटा और पलंग पर लेट गया तब भी उसे नींद नहीं आयी और देर तक रात की आवाज़ें उसके कानों में गूँजती रहीं।

हेवर्ड ने फ़िलिप को मिसेज़ ऑटर का एक परिचय-पत्र दिया था। दूसरे दिन उसे उनके यहाँ चाय पीने जाना था। मिसेज़ ऑटर 'आमित्रानो' नामक कला के एक स्कूल में कुछ काम करती थीं। वह स्वयं भी तीन साल से कला का अध्ययन कर रही थीं। कमरे में उनके बनाये हुए एक-दो चित्र रखे थे। फ़िलिप की अनुभवहीन आँखों को वे चित्र बहुत अच्छे मालूम पड़े।

'क्या मैं भी कभी इतने अच्छे चित्र बना सकूँगा?'

'क्यों नहीं? धैर्य और लगन से काम करेंगे तो सब हो जायेगा', मिसेज़ ऑटर ने बड़े आत्मसंतोष से कहा। वह स्वभाव से बहुत दयालु थीं और फ़िलिप की हर प्रकार से सहायता करने को तैयार थीं।

'कल नौ बजे तक स्कूल आ जाइये, तो मैं आपके काम करने का ठीक-ठीक प्रबन्ध कर दूँगी।'

दूसरे दिन फ़िलिप ठीक नौ बजे 'आमित्रानो' की चित्रशाला में पहुँच गया। स्टूडियो के बीच में एक नग्न स्त्री बैठी—वही आज का मॉडेल थी।

मिसेज़ ऑटर ने फ़िलिप से कहा—'यह जगह सबसे उत्तम है। यहीं बैठकर आप काम करें।'

जहाँ फिलिप को बैठकर काम करना था वहाँ उसके पास ही एक युवती भी काम कर रही थी।

'मिस्टर कैरी, यह हैं मिस प्राइस! मिस्टर कैरी का आज पहला दिन है यहाँ। इनकी सहायता करती रहना', मिसेज़ ऑटर ने परिचय कराते हुए मिस प्राइस से कहा।

फ़िलिप काम करने को तैयार हुआ। उसकी समझ में नहीं आया कि काम किस तरह शुरू किया जाय। 'मॉडेल' देखकर वह चकरा गया; उसने औरत

को नग्न कभी नहीं देखा था। उसने मुड़कर मिस प्राइस के बनाये हुए चित्र की तरफ देखा। मिस प्राइस दो दिन से उसी चित्र को बना रही थीं, लेकिन उनका चित्र अब भी बहुत भद्दा था और कागज भी गंदा हो गया था।

'ऐसा तो मैं भी बना सकता हूँ।' फ़िलिप ने अपने दिल में कहा।

फ़िलिप ने सोचा कि चित्र को सिर की ओर से शुरू करे। लेकिन जब उसने बनाना शुरू किया तो वह कुछ भी नहीं कर सका। देखकर चित्र खींचना उसे बहुत कठिन लगा, कल्पना से सोचकर तो वह बहुत आसानी से चित्र बना लेता था। फ़िलिप मिस प्राइस की तरफ देखने लगा। मिस प्राइस बड़ी लगन से अपने काम में जुटी हुई थीं। स्टूडियो में काफी गर्मी थी और मिस प्राइस के माथे पर पसीना आ गया था। वह थी तो युवती, पच्चीस-छब्बीस से ज्यादा क्या उम्र होगी उसकी—लेकिन खाल में जैसे खून था ही नहीं। चेहरा बड़ा था, आकृति कुछ चपटी-सी थी, आँखें छोटी-छोटी थीं। सुनहरे बाल कुछ सुन्दर थे, लेकिन बड़ी लापरवाही से कढ़े हुए थे। कपड़े गन्दे थे।

थोड़ी देर बाद मिस प्राइस ने फ़िलिप से पूछा—'कहो कैसा काम हो रहा है?'

'बिल्कुल नहीं। कुछ समझ में नहीं आ रहा है!'

'पहले ही दिन सब ठीक थोड़े ही हो जाता है।' और मिस प्राइस ने फ़िलिप को नाप लेने की और ठीक ढङ्ग से चित्र बनाने की विधि बतायी।

... मिस प्राइस की लगन तथा कला से प्रेम फ़िलिप को अच्छा लगा लेकिन उसकी कुरूपता उतनी ही भद्दी लगी। उसने मिस प्राइस को धन्यवाद दिया कि वह उसमें इतनी दिलचस्पी ले रही हैं। कुछ देर बाद एक दुबला-पतला युवक स्टूडियो में आया। उसका चेहरा घोड़े की तरह लम्बा था और नाक बहुत बड़ी थी।

'आज बड़ी देर से आये। क्या अभी सोकर उठे हो?' मिस प्राइस ने आगन्तुक से प्रश्न किया।

'हाँ! दिन बहुत सुहावना था, सोचा कुछ देर पलंग का आनन्द ले लूँ!'

फ़िलिप उसके विनोद पर मुस्करा उठा। लगता था कि आगन्तुक की तबीयत स्टूडियो में नहीं लगती।

'क्या तुम इंगलैण्ड से हाल में ही आये हो?' युवक ने फ़िलिप से पूछा।

'हाँ!'

'इस चित्रशाला में तुम कोई लाभदायक बात नहीं सीख सकोगे।' वह युवक बोला।

'वाह! यह सबसे बढ़िया स्कूल है कला के विद्यार्थियों के लिए। यहाँ पर कम से कम कला का अध्ययन गम्भीरता से तो होता है!' मिस प्राइस ने उसका उत्तर दिया।

'क्या कला का भी अध्ययन गम्भीरता से करना चाहिये?'

युवक बोला। मिस प्राइस ने उपेक्षा में कन्धे हिला दिये। उस युवक ने आगे कहा—'कला के अध्ययन के लिए सभी स्कूल बेकार होते हैं। यहाँ तो बस किताबी बातें सीखी जा सकती हैं।'

'तब तुम खुद यहाँ क्यों आते?' फ़िलिप ने प्रश्न किया।

'मेरा क्या! मैं तो सही बात जान-बूझ कर भी नहीं करता। मिस प्राइस से पूछो—वह ज्यादा पढ़ी लिखी हैं—मेरी बात का लैटिन में अनुवाद करके बता देंगी।' युवक ने व्यंग्य किया।

'मि० क्लटन! आप मेरी बात मत किया कीजिये!' मिस प्राइस नाराज होकर बोलीं।

'चित्रकला सीखना है तो अपना स्टूडियो लो, किराये के 'मॉडेल' रखो और बिना किसी की देख-रेख के चित्र बनाये जाओ।' क्लटन पर मिस प्राइस की झिड़की का कोई प्रभाव नहीं पड़ा था।

'यह तो बहुत आसान है!' फ़िलिप ने कहा।

'हाँ! लेकिन इसके लिए काफ़ी धन की जरूरत पड़ती है।'

इसके बाद क्लटन ने काम करना शुरू कर दिया।

फ़िलिप ने कनखियों से क्लटन की तरफ़ देखा। वह बहुत दुबला-पतला था; उसकी पतलून मोरी के पास से फटी हुई थी, जूते पुराने और फटे हुए थे।

'मि० क्लटन जरा चुप रहें तो मैं तुम्हारी थोड़ी-सी मदद करूँ !' मिस प्राइस ने फ़िलिप के पास आकर कहा ।

क्लटन ने घूमकर देखा—'मिस प्राइस मुझसे घृणा इसलिए करती हैं कि मुझमें अद्भुत प्रतिभा है ।'

मिस प्राइस को क्रोध आ गया—'बस तुम्हीं एक हो जो समझते हो कि तुम्हारे अन्दर प्रतिभा है !'

'मैं केवल अपनी राय को ही मूल्यवान मानता हूँ', क्लटन बोला ।

मिस प्राइस फ़िलिप को बताने लगीं कि उसने क्या गलतियाँ की हैं । वह यह नहीं समझा पायीं कि फ़िलिप उन दोषों का सुधार कैसे करे ।

'मुझे इतना समय देकर आप मुझ पर बहुत एहसान कर रही हैं', फ़िलिप ने कहा ।

'अरे कुछ नहीं । जब मैं नई-नई आयी थी तब और लोगों ने भी मेरी बहुत मदद की थी ।' मिस प्राइस शरमाते हुए बोलीं । क्लटन ने उन पर फ़िलिप से सम्बन्धित ताना कसा । मिस प्राइस बहुत नाराज हो गयीं ।

बारह बज गया था । खाने की छुट्टी हो गयी । क्लटन ने फ़िलिप से कहा—'हम लोग 'ग्राविये' में खाना खाते हैं । तुम भी मेरे साथ चलो ।' फ़िलिप साथ चलने को तैयार हो गया ।

सड़क पर क्लटन ने मजाक किया—'मिस प्राइस पर काफ़ी असर डाल दिया है तुमने; जरा संभल कर रहना !'

फ़िलिप हँस पड़ा । थोड़ी देर में दोनों एक सस्ते से रेस्तोराँ में पहुँच गये, जिसका नाम 'ग्राविये' था । यहाँ केवल एक फ्रैंक में खासा अच्छा खाना मिल जाता था—अंडा, गोश्त, पनीर और शराब । जिस मेज पर वे बैठे, उस पर दो तीन लोग पहले से थे ।

'तुमने अपना नाम तो बताया ही नहीं अभी तक !' क्लटन अचानक पूछ बैठा ।

'कैरी !' फ़िलिप ने उत्तर दिया ।

'आप लोग मेरे एक पुराने मित्र, कैरी से मिलिये। कैरी, आप मि० क्लेनैगन हैं और यह हैं मि० लॉसन !'

सब हँस पड़े और बातचीत फिर चलने लगी। सब एक साथ बोल रहे थे और शायद ही कोई किसी की बात सुन रहा था। न जाने कितने सारे विषयों पर वे बातें कर रहे थे। मोने, माने, रेन्वाय पिस्सारो, देगा आदि बड़े-बड़े कलाकारों के बारे में बात कर रहे थे वे लोग। हालाँकि वार्त्तालाप में फ़िलिप कोई खास भाग नहीं ले पा रहा था फिर भी वह बहुत खुश था। समय जल्दी बीत गया।

'आमित्रानो' की चित्रशाला में व्यवस्था यह थी कि सप्ताह में दो बार दो सफल और नामी कलाकार छात्रों के काम का निरीक्षण करने आते थे। मंगलवार को मिशेल रोलीं आते थे और शुक्रवार को फ्वाने। दोनों काफी अवस्था के प्रसिद्ध कलाकर थे।

उस दिन शुक्रवार था और फ्वाने के आने का दिन था। फ़िलिप जरा देर से स्टूडियो में पहुँचा था। फ्वाने मिसेज ऑटर के साथ छात्रों के बनाये चित्रों का निरीक्षण करते घूम रहे थे। फ़िलिप ने देखा मिस प्राइस बहुत तेजी से काम कर रही हैं। घबराहट से चेहरे का रंग फीका पड़ गया था उनका। फ़िलिप ने सोचा इस लड़की को कितना आत्माभिमान है। लेकिन स्टूडियो में कोई भी उसे पसन्द नहीं करता था, वह जान-जान कर जैसे सबको नाराज करती थी।

कुछ दूर पर एक और अँग्रेज युवती बैठी चित्र बना रही थी। रुथ चैलिस नाम था उसका—काली चमकदार आँखें जिनमें वासना अंगड़ाइयाँ लेती हुई झलकती थी, बहुत गोरा रङ्ग और दुबला मुँह ! फ्वाने उसका चित्र देख कर उसे गलतियाँ बता रहे थे। मिस चैलिस बहुत खुश नजर आ रही थी। इसके बाद फ्वाने क्लटन के चित्र के पास आये। चित्र के सामने कुछ देर विचारमग्न खड़े रहे। फिर उन्होंने कहा—'बहुत सुन्दर ! तुम्हारे अन्दर प्रतिभा है !'

फ्वाने वहीं बैठ गये और क्लटन को सलाह देने लगे। क्लटन कुछ न बोला और उनकी बातें सुनता रहा। फ्वाने क्लटन से बहुत सन्तुष्ट और प्रसन्न दिखाई देते थे। मिसेज ऑटर क्लटन को पसन्द नहीं करती थीं। उनकी सलाह

में नहीं आ रहा था कि क्रुटन के चित्र में क्या विशेषता है। वह खड़ी-खड़ी थक भी गयी थीं।

इसके बाद फ़िलिप का नम्बर आया। फ़िलिप बहुत डर रहा था। मिसेज ऑटर ने कहा, 'इन्हें यहाँ आये तो सिर्फ दो ही दिन हुए हैं। अभी यह बिल्कुल नये हैं।'

फ्वाने आगे बढ़ गये। मिसेज ऑटर ने फ्वाने से हल्के से कहा :

'यही वह लड़की है जिसके विषय में मैंने आपको बताया था।' मिस प्राइस को शिकायत थी कि फ्वाने उसके चित्रों पर कोई ध्यान नहीं देते हैं।

फ्वाने ने घृणा से मिस प्राइस की ओर देखा; उनकी आवाज में सख्ती थी—'तुम्हारा खयाल है कि मैं तुम्हारे चित्रों की ओर कोई ध्यान नहीं देता ? देखूँ, क्या बनाया है तुमने !' मिस प्राइस ने चित्र की ओर संकेत किया।

'क्या चाहती हो मैं कहूँ ? कहूँ चित्र अच्छा है ? नहीं ! यह बिल्कुल खराब है। अच्छी तरह खींचा गया है ? ऊँ हूँ ! इसमें कोई विशेषता है ? कोई नहीं। इसमें क्या गलती है ? इसमें सब कुछ गलत है ! इसको क्या करो ? इसे फाड़ कर फेंक दो ! अब सन्तोष हो गया तुम्हें ?'

मिस प्राइस का मुँह क्रोध से सफेद पड़ गया था।

'मेरी राय मानो तो कला छोड़ कर दर्जी बन जाओ। उसमें ज्यादा धन कमा सकोगी।' फ्वाने यह कहकर चले गये।

फ़िलिप ने सहानुभूतिपूर्ण शब्दों में कहा—'बड़ा बुरा हुआ। वह आदमी था कि जानवर !'

'रहने दो ! मुझे तुम्हारी सहानुभूति की जब जरूरत होगी तो तुमसे कह दूँगी,' मिस प्राइस तेजी से बाहर चली गयी। फ़िलिप खाना खाने रेस्तोरां चला गया।

एक दिन फ़िलिप जब स्टूडियो में आया तो बहुत खुश था। उसने और लॉसन ने मिलकर एक मकान किराये पर लिया था जिसमें एक छोटा-सा स्टूडियो भी था। काम करने की सुविधा उसमें थी और खर्च भी कम था। इधर

कुछ दिनों से फ़िलिप को धन की चिन्ता भी रहने लगी थी। चाची का दिया हुआ धन खत्म हो चुका था और अभी उसे खुदमुख्तार होने में तीन महीने बाकी थे। इस नये मकान ने उसे एक नया उत्साह प्रदान किया था।

'कहो क्या हाल है?' फ़िलिप ने हँसते हुए मिस प्राइस से पूछा।

'तुमसे क्या मतलब?'

'बिगड़ो मत! मैं तो तुमसे अच्छी बातें कर रहा हूँ।' फ़िलिप बहुत खुश था आज।

'मुझे तुम्हारी अच्छी बातों की जरूरत नहीं!'

'और लोग तो तुमसे नाखुश हैं ही—मुझसे भी क्यों झगड़ा कर रही हो?'

'और लोग मुझसे नाराज हैं तो तुम्हें क्या?'

'कुछ नहीं!'

फ़ैनी प्राइस इतनी लड़ाकू औरत थी कि सब उससे नाराज थे। फ़िलिप भी उससे खुश नहीं था लेकिन आज इतना खुश था कि वह किसी को भी नाराज नहीं करना चाहता था। मिस प्राइस को मनाते हुए उसने कहा—'अच्छा! जरा आकर मेरा चित्र तो देख लो; मुझे कुछ कठिनाई मालूम पड़ रही है।'

'मुझे फ़ुर्सत नहीं है!'

फ़िलिप को ताज्जुब हुआ। सलाह देने और गलती बताने को तो वह हमेशा तैयार रहती थी और फ़िलिप सोचता था कि इस बहाने वह मना लेगा उसे।

'जब तुम यहाँ नये आये थे तो मेरी बहुत परवाह करते थे। अब तो तुम्हारे दोस्त बन गये हैं और तुमने मुझे ठुकरा दिया है। मुझे भी तुम्हारी जरा सी चिन्ता नहीं। लॉसन से ही राय ले लिया करो!'

बात में कुछ सत्य तो था पर फ़िलिप को क्रोध आ गया।

'जैसे मैं परवाह करता हूँ तुम्हारी सलाह की। वह तो मैं तुम्हें खुश करने के लिए तुम्हारी राय पूछ लेता था।'

मिस प्राइस अचम्भे में रह गयी। दो आँसू आँखों से निकल पड़े। फ़िलिप को उस समय वह भद्दी दिखाई दी।

इसके बाद दो-तीन हफ्ते तक दोनों बात नहीं हुई। फ़िलिप को खुशी थी कि चलो पीछा छूटा! अजीब औरत थी वह! सारे दिन स्टूडियो में सबसे ज्यादा मेहनत से काम करती थी, फिर भी उसे कुछ नहीं आता था, उसके चित्र बेकार थे। वह शायद गरीब भी बहुत थी उसके पास सिर्फ एक भद्दी-सी कत्थई रङ्ग की फ्राक थी जिस पर धूल-मिट्टी के निशान भी खूब थे और कहीं-कहीं से तो वह फटने भी लगी थी।

एक दिन वह झिझकती हुई फ़िलिप के पास आयी और बोली—'मैं तुमसे कुछ बात करना चाहिती हूँ!'

'जरूर! मैं बारह बजे के बाद तुम्हारा इन्तजार करूँगा बाहर!'

काम खत्म हो गया तो फ़िलिप उसके पास आया। 'थोड़ी देर घूमने चलना पसन्द करोगे?' मिस प्राइस ने पूछा।

'जरूर!'

कुछ देर बाद वह बोली—'तुम्हें याद है तुमने उस दिन क्या कहा था मुझसे?'

'उसे अब भूल भी जाओ न! हमें लड़ाई तो नहीं लड़नी!'

'तुमसे मैं लड़ाई नहीं कर सकती! तुम्हीं तो केवल मेरे एक मित्र हो। मेरा विचार था तुम मुझे पसन्द करते हो—कि हम-तुम एक दूसरे को चाह सकते हैं। मुझे तुमसे तुम्हारे खराब पैर के कारण सहानुभूति थी।'

फ़िलिप अन्दर ही अन्दर क्रुद्ध हो गया। वह समझ गया कि फ़ैनी प्राइस का क्या मतलब है। वह भद्दी और कुरूप है और मेरा पैर खराब है; इसलिए वह समझती है कि हम एक दूसरे को पसन्द कर सकते हैं। यह सोचकर वह झल्ला गया।

'क्या तुम्हारा विचार है कि मैं अच्छे चित्र नहीं बना सकती?'

'यह मैं कैसे कह सकता हूँ? मैंने तो केवल तुम्हें 'आमित्रानो' में ही काम करते देखा है। उसके आधार पर कुछ भी कहना बेकार है।'

‘तो क्या घर आकर मेरे और चित्र देख सकोगे ?’

‘क्यों नहीं, अवश्य !’

सड़क से वे एक गन्दी गली में मुड़ गये। वहाँ छोटी-छोटी दूकानें थीं और सस्ते गन्दे मकान थे। कई सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद मिस प्राइस का कमरा आया। एक छोटी-सी कोठरी थी वह और उसमें घुटन बहुत ज्यादा थी। ठंड बहुत थी लेकिन कमरे में आग नहीं जल रही थी—शायद कभी भी नहीं जलती थी। बिस्तर यों ही पड़ा था। फ़र्नीचर भी बहुत थोड़ा था। जगह वैसे ही क्या कम गन्दी थी, उस पर चीजें बहुत बेतरतीबी से फैली पड़ी थीं। मिस प्राइस ने फ़िलिप को कोई बीस चित्र दिखाये।

‘तुम्हें पसन्द आये न ?’ उसने पूछा।

‘अभी ज़रा देख लूँ फिर बताऊँगा’, फ़िलिप सोचने का समय चाहता था। यह चित्र इतने खराब थे कि पाँच साल का बच्चा भी इनसे अच्छे चित्र बना सकता था। फ़िलिप चाहता तो नहीं था पर उसे झूठ बोलना ही पड़ा—

‘मेरे ख्याल से तो बहुत अच्छे हैं ये !’

‘पर और कुछ तो बताओ इनके बारे में।’

‘इतना मुझे कहाँ आता है कि चित्रों की आलोचना करूँ। यह सब चित्र बने बहुत अच्छे हैं।’ फ़िलिप ने अपनी घड़ी की तरफ़ देखते हुए कहा—‘बहुत देर हो गयी चलो, कहीं खाना खा लें।’

‘मेरा भोजन तो यहीं है’, मिस प्राइस ने कहा।

खाने की कोई भी चीज वहाँ दिखाई नहीं दे रही थी, लेकिन फ़िलिप ने कुछ न कहा। कमरे की घुटन के कारण उसका सिर दर्द करने लगा था।

इस तरह बहुत दिन बीत गये। एक दिन नौकर ने आकर फ़िलिप को एक लिफाफा दिया। ऊपर की हस्तलिपि से फ़िलिप अपरिचित था। फ़िलिप ने लिफाफा खोला।

पत्र मिस प्राइस का था। उसने लिखा था कि फ़िलिप पत्र देखते ही फौरन उसके घर आ जाय। वह अपने जीवन का संघर्ष और व्यथा ज्यादा नहीं सह

सकती। पत्र के नीचे यह भी लिखा था कि उसने तीन दिन से खाना नहीं खाया है।

फ़िलिप सन्न रह गया। मिस प्राइस ने बहुत दिनों से स्टूडियो आना तो बन्द कर ही दिया था। कुछ लोगों का कहना था कि वह इंगलैण्ड लौट गयी थीं। लेकिन आज इस पत्र को पाकर फ़िलिप शंका और डर से सिहर उठा। वह फ़ौरन उसके घर गया।

पता लगा कि वह दो दिन से घर के बाहर नहीं निकली थी। फ़िलिप मकान के केयर-टेकर के साथ ऊपर गया। दरवाजे पर दस्तक दी, आवाज़ लगायी लेकिन कोई जबाव नहीं मिला! दरवाजे में ताला लगा था और अन्दर जाया नहीं जा सकता था। फ़िलिप ने कहा कि दरवाजा तोड़ डाला जाय लेकिन इस पर केयर-टेकर राजी नहीं हुआ। अन्त में पुलिस के सिपाही के आने पर दरवाजा तोड़ा गया।

फ़िलिप चीख पड़ा और बरबस ही उसने अपनी आँखें ढँक लीं। मिस प्राइस का शव जमीन पर पड़ा था। गले में रस्सी का एक फन्दा था।

फ़िलिप के दिल पर इस दुर्घटना ने एक गहरी छाप डाल दी। उसे सबसे बड़ा दुःख इस बात का था कि फ़ैनी का वह जबरदस्त संघर्ष निष्फल रहा। उससे ज्यादा लगन, दृढ़ता और मेहनत से काम करना सम्भव नहीं था लेकिन उस तमाम आत्मविश्वास का फल कुछ भी नहीं निकला। अपने स्कूल के जमाने के उदास जीवन ने फ़िलिप के अन्दर आत्म-विश्लेषण की प्रवृत्ति पैदा कर दी थी और वह प्रवृत्ति अब उसके लिए पूर्णतया स्वाभाविक हो गयी थी। अपने ही विचारों और प्रतिक्रियाओं को वह खूब अच्छी तरह काट-छाँट सकता था। किसी अच्छे चित्र को देखकर लॉसन हर्ष से काँप उठता था; फ्लेनेगेन के ऊपर इस अनुभव की प्रतिक्रिया बिल्कुल दूसरी ही होती थी। उसी चित्र को देखकर फ़िलिप में जो भाव जागते थे उनमें बुद्धिवादी तटस्थता होती थी। फ़िलिप सोचने लगा कि अगर वास्तव में वह कलाकार होता तो उसे चित्र में, भावुकता में, जज्बातों में सौन्दर्य की झलक अवश्य दिखाई पड़ती और उसके बहाव में वह बिना कुछ सोचे-समझे बहने लगता। पर ऐसा उसके साथ नहीं

होता था। उसके मन में प्रश्न उठा—क्या वह वास्तव में कलाकार है? वह अच्छे चित्र खींच सकता था लेकिन केवल हाथ की सफ़ाई ही तो कला नहीं है। मुख्य बात तो यह है कि रङ्गों के माध्यम से वास्तविक सौन्दर्य की कल्पना को साकार किया जाय। उसमें वह भावुकता और कल्पना कतई नहीं थीं। वह चित्र दिमाग से बनाता था और उसे मालूम था कि सच्ची कला केवल दिल से उभरती है।

उसके पास अब केवल सोलह सौ पाउंड बच पाये थे और यह भी कुछ मालूम नहीं था कि कब वह अपनी कला से धन कमा सकेगा। उसे कड़े से कड़े कष्ट भोगने पड़ेंगे—अपार विपन्नता का सामना करना पड़ेगा, सिर्फ़ इस विश्वास पर कि एक दिन वह एक अमर और महान कलाकार बन जायगा। फैनी प्राइस को भी तो यही विश्वास था और न जाने कितने लोगों को यह विश्वास होता है लेकिन वह महानता और अमरत्व उनके नहीं होते। अस्वस्थ निराशा और अन्धकार उनके जीवन पर छा जाते हैं और उस जीवन का अन्त शराब या आत्म-हत्या से हो जाता है और फिर फ़िलिप को यह आभास होने लगा कि वह कभी चोटी का कलाकार नहीं बन सकेगा। तो क्या फिर एक भ्रम के लिए इतने कष्ट उठाये जायँ? क्यों जवानी को, जीवन के सुखों को उस वहम के लिए बरबाद किया जाय? बड़े लेखकों, कलाकारों के अन्दर कोई ऐसी शक्ति होती है जिसमें वह बिलकुल डूब जाते हैं; उनके लिए जिन्दगी से कला ज्यादा महान होती है। लेकिन फ़िलिप का विचार था कि जीवन जिन्दा रहने की चीज है—अध्ययन की नहीं। वह जीवन के तमाम अनुभवों से होकर निकलना चाहता था और हर क्षण में से अधिक से अधिक रस निकालना चाहता था।

फ़िलिप ने निश्चय कर लिया कि वह फ्वाने से सलाह लेगा कि उसके लिए कला का अध्ययन करते रहना ठीक है या नहीं।

जिस रेस्तराँ में फ्वाने भोजन करते थे उसके सामने फ़िलिप उनके बाहर आने का इन्तजार कर रहा था। थोड़ी देर में वे बाहर निकले; पहले तो फ़िलिप को झिझक लगी लेकिन फिर वह साहस बटोर कर बोला—

'मैं आपसे कुछ बातें करना चाहता हूँ!'

'कहिये !'

'जिस चित्रशाला में आप निरीक्षण करने जाते हैं उसमें मैं दो वर्षों से काम कर रहा हूँ। मैं आपसे पूछना चाहता हूँ कि क्या मैं कला का अध्ययन जारी रखूँ ?'

'मैं समझा नहीं !' फ्वाने का चेहरा बिल्कुल भावहीन था।

'मैं बहुत गरीब हूँ। अगर मुझमें प्रतिभा नहीं है तो मेरा यह सब करना बिल्कुल व्यर्थ है।'

'तुम्हें नहीं मालूम तुममें प्रतिभा है कि नहीं ?'

'मेरे समझने से क्या होता है ! मेरे कुछ मित्रों को तो यह दृढ़ विश्वास है, लेकिन मुझे मालूम है कि वह गलत रास्ते पर हैं।'

फ्वाने के चेहरे पर मुस्कराहट फैल गयी।

'क्या तुम पास में ही रहते हो ?'

फ़िलिप ने अपने मकान का पता बताया।

'तो चलो ! मैं तुम्हारे चित्र देखना चाहता हूँ !'

'अभी ?'

'हाँ ! क्यों नहीं ?'

दोनों फ़िलिप के घर की तरफ चल दिये। फ़िलिप के दिमाग में तरह-तरह के विचार चक्कर काट रहे थे। अगर फ्वाने ने यह कहा कि उसमें प्रतिभा है तो फिर तो चाहे कितनी ही निराशाएँ क्यों न हों—कितने ही कष्ट क्यों न उठाने पड़ें वह अपनी साधना में जुट जायगा। फ़िलिप का मकान आ गया ! वह एकदम से डर गया। उसने बहुत मेहनत की थी; सत्य अगर कड़ुवा था तो वह उसे नहीं जानना चाहता था। उसका बस होता तो वह फ्वाने को वहाँ से चले जाने के लिए कह देता। जैसे ही वह घर में घुसे केयर-टेकर ने फ़िलिप को एक लिफाफा दिया। ऊपर की हस्तलिपि से मालूम पड़ता था कि पत्र चाचा का है। दोनों फ़िलिप के कमरे में पहुँचे। फ़िलिप ने अपने सब चित्र फ्वाने के सामने रख दिये।

'तुम्हारे पास अपनी सम्पत्ति तो बहुत कम है न ?'

'जी, बहुत ही कम !' फिर कुछ रुककर फ़िलिप ने पूछा—'आपके प्रश्न से तो ज्ञात होता है कि आपने मेरे चित्रों के बारे में कोई धारणा बना ली है और वह ज्यादा अच्छी नहीं है !'

'तुम्हारे अन्दर कौशल की कमी नहीं। मेहनत करते रहे तो खासे भले चित्र-कार बन जाओगे। लेकिन इन चित्रों में प्रतिभा की झलक नहीं दिखाई पड़ती। तुम मध्यम श्रेणी के चित्रकार ही बन सकोगे !'

'आपने बड़ा कष्ट किया। उसके लिए अनेक धन्यवाद।'

फ्वाने उठने को तैयार हुए लेकिन कुछ सोचकर रुक गये और फ़िलिप के कन्धे पर हाथ रखकर बोले—

'अगर तुम मेरी राय मानो तो हिम्मत करके यह छोड़ दो और कुछ दूसरा व्यवसाय सीखो। काश कि किसी ने मुझे भी यही सलाह दी होती जब समय था, और मैं उसे मान जाता।' फ्वाने विचारमग्न हो गये थे।

फ़िलिप चकित रह गया। फ्वाने जैसे सफल और प्रसिद्ध कलाकार को अब तक यह खेद था !

फ्वाने व्यंग्य की हँसी हँसे और कमरे के बाहर चले गये। फ़िलिप ने चाचा का खत खोला। लिखा था कि चाची की मृत्यु हो गयी है।

दूसरे दिन फ़िलिप ब्लैकस्टेबिल् वापस पहुँच गया।

६

ब्लैकस्टेबिल में कुछ दिन रहने के बाद फ़िलिप एक बार फिर लन्दन के लिए रवाना हुआ। अपना भविष्य बनाने का उसका यह तीसरा प्रयास था।

चाची की मृत्यु पर, जब फ़िलिप ब्लैकस्टेबिल आया तो उसने देखा था कि चाचा पर चाची की मृत्यु का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा था। चाचा उन व्यक्तियों में से थे जो दूसरों से पाये हुए स्नेह, आदर और सहानुभूति को

अपना अधिकार समझते हैं—उसमें उन्हें कोई विशेषता दिखाई ही नहीं देती। उनका महत्त्व अपने ही लिए बहुत ज्यादा था। फ़िलिप को चाची की मृत्यु का नहीं, इस बात का खेद ज्यादा था कि उनका जीवन व्यर्थ बीता था—उनका स्नेह का प्यासा दिल कभी सन्तोष नहीं पा सका था।

उन्हीं दिनों में फ़िलिप को अपने भविष्य के बारे में भी निश्चय करना था। चाचा को इस बात को सुनकर काफी आश्चर्य हुआ था कि फ़िलिप ने कला का अध्ययन भी छोड़ दिया है और वह पेरिस लौटकर नहीं जा रहा है। चाचा परिवर्तन के कायल नहीं थे। उन्होंने फ़िलिप को कमजोर और नाकारा समझा। बात-बात में उन्होंने यह भी सलाह दी कि फ़िलिप अपने पिता की तरह डाक्टर क्यों नहीं हो जाता।

'ठीक यही बात मैं भी सोच रहा था!' फ़िलिप ने उत्तर दिया और यह निश्चित हो गया कि फ़िलिप लन्दन जाकर सेन्ट ल्यूक्स के अस्पताल में डाक्टरी का अध्ययन शुरू करेगा।

इसलिए फ़िलिप दूसरी बार लन्दन आ गया, अस्पताल के नजदीक ही एक छोटे से मकान में उसने रहने के लिए एक कमरा ले लिया। उसके ऊपर-वाली मंजिल में पाँचवें वर्ष का एक विद्यार्थी रहता था जिसका नाम ग्रिफिथ्स् था। दोनों में मैत्री नहीं हुई। ग्रिफिथ्स् ऑक्सफोर्ड यूनीवर्सिटी में पढ़ चुका था और इस तरह के युवक अपने को दूसरे छात्रों से ऊँचे वर्ग का समझते थे। ग्रिफिथ्स् देखने में बहुत सुन्दर जवान था—लम्बा कद, लाल घुँघराले बाल, नीली आँखें! उसके मित्रों की भी कमी न थी। अक्सर शाम को जब फ़िलिप अकेला अपने कमरे में पढ़ा करता था तो ऊपर से ग्रिफिथ्स् और उसके मित्रों के कहकहे उसके एकाकीपन को और ज्यादा उदास और ज्यादा सूना बना देते थे। वह पेरिस की खूबसूरत शामों की याद करके तड़प उठता था और उसे लगता था कि जैसे उसका अकेलापन उसे खा जायगा। शल्य-विज्ञान में, चीर-फाड़ में, चिकित्सा में उसका दिल नहीं लगता था। वह सोचने लगता था कि किसी बात का निश्चय कर लेना तो आसान है पर उसे निभाना कितना कठिन है।

लोगों से फ़िलिप की मित्रता भी कठिनाई से हो पाती थी। उसे इस बात की सदैव ही झिझक रहती थी कि जो बात वह कह रहा है उसमें उसके सुननेवालों को दिलचस्पी है या नहीं। इस उलझन के कारण ही वह अपने साथियों से ज्यादा बात भी नहीं कर पाता था। कुछ लोगों ने जिन्हें मालूम हुआ था कि फ़िलिप कलाकार भी रह चुका है, उससे कला पर बात करने का प्रयत्न किया पर फ़िलिप को शीघ्र ही पता लग गया कि उनका दृष्टिकोण रूढ़िवादी है और फ़िलिप को उनसे भी अरुचि हो गयी।

डन्सफोर्ड से उसकी मैत्री भी केवल इसलिए हुई कि सेन्ट ल्यूक्स में डन्सफोर्ड की जान पहिचान शुरू-शुरू में फ़िलिप से ही हुई थी। डन्सफोर्ड ने ही उस मैत्री को बढ़ाया। अक्सर शनिवार की शाम को वे दोनों साथ-साथ थियेटर देखने चले जाया करते थे। धीरे-धीरे डन्सफोर्ड और फ़िलिप की मैत्री काफी पक्की हो गयी।

पार्लेमेंट स्ट्रीट में एक चायखाना था जहाँ ये दोनों चाय पीने अक्सर जाया करते थे। बात यह थी कि डन्सफोर्ड उस चायखाने में काम करनेवाली एक लड़की को बहुत पसन्द करता था। फ़िलिप को उसमें कोई बात आकर्षक दिखाई नहीं देती थी। पतली-दुबली और लम्बी-सी लड़की थी, नितम्ब और वक्ष तो जैसे थे ही नहीं। हाँ, चेहरा उसका सुन्दर अवश्य था लेकिन फ़िलिप का ख्याल था कि केवल चेहरा सुन्दर होने से ही क्या होता है। शरीर में खून बहुत कम था; खून की कमी से उसके ओंठ और गाल तक पीले लगते थे।

डन्सफोर्ड लड़कियों से बात करने में बहुत शरमाता था और उसने फ़िलिप को उकसाया कि वही उस लड़की से बातों का क्रम शुरू करे।

'तुम्हारे बातचीत शुरू करने से मुझे मौका मिल जायगा!' डन्सफोर्ड ने कहा।

डन्सफोर्ड के कहने से फ़िलिप ने बातों-बातों में छेड़छाड़ की पर वह लड़की बस 'हाँ-ना' में उत्तर देकर चुप हो जाती थी। वह जान गयी थी कि दोनों युवक विद्यार्थी हैं और उसका उनसे कोई भला नहीं होना है। डन्सफोर्ड

देखता था कि एक दूसरे व्यक्ति पर, जो सूरत-शक्ल से जर्मन मालूम पड़ता था, वह बहुत कृपालु थी। जब वह दूकान में होता था तो वह लड़की उससे बात करने में इतनी मग्न हो जाती थी कि उसे दो-तीन बार पुकारना पड़ता था तब कहीं वह ध्यान देती थी। डन्सफोर्ड ने एक दिन फ़िलिप को बताया कि उस लड़की का नाम मिलड्रेड है।

एक दिन जब ये लोग चाय पीने पहुँचे तो उस जर्मन का कहीं पता न था। मिलड्रेड जब उन लोगों का 'ऑर्डर' लेने आयी तो फ़िलिप मुस्कराते हुए बोला—

'कहो! आज तुम्हारा मित्र दिखाई नहीं पड़ रहा है?'

'पता नहीं आप क्या कह रहे हैं?'

'मेरा मतलब उस व्यक्ति से है जिससे तुम खूब बातें किया करती हो!' फ़िलिप ने कहा।

'आपसे क्या? मेरी बातों में आप दखल देने वाले कौन हैं?' मिलड्रेड ने बिगड़कर कहा और फिर मुँह फेर कर चल दी।

'देखा पीठ घुमाकर चल दी!' डन्सफोर्ड फ़िलिप से बोला।

'मुझसे क्या मतलब!' फ़िलिप ने लापरवाही से उत्तर दिया।

लेकिन फ़िलिप को वास्तव में लगा बुरा। उसे चिढ़ लगी कि बिना कारण लड़की नाराज हो गयी। जब वह बिल लेकर आयी तो फ़िलिप ने कहा :

'क्या हमसे बोल-चाल बिल्कुल बन्द हो गयी?'

'आप ग्राहक हैं, आपकी सेवा मैं कर दूँगी लेकिन आपसे मुझे कहना-सुनना कुछ नहीं है।'

और फ़िलिप इस उत्तर से इतना क्रुद्ध हो गया कि उसने डन्सफोर्ड से कह दिया कि वह मिलड्रेड की कभी सूरत तक नहीं देखेगा।

मिलड्रेड में डन्सफोर्ड की दिलचस्पी तो जल्दी ही खत्म हो गयी क्योंकि उसे दिल-बहलाव के लिए कोई और लड़की मिल गयी। लेकिन मिलड्रेड के व्यवहार की उस तटस्थता ने फ़िलिप को परेशान कर दिया। उसके आत्म-सम्मान को चोट लगी। वह तड़प उठता था अपमान से, जब सोचता था कि

वह लड़की उससे घृणा करती है। उसके अन्दर प्रतिकार की भावना जाग पड़ी थी। वह बदले की इच्छा को बुरा तो मानता था लेकिन तीन-चार दिन प्रयत्न करके भी वह उस पर काबू न पा सका।

एक दिन शाम को डन्सफोर्ड से कोई बहाना करके वह फिर उसी चायखाने में पहुँच गया। मिलड्रेड उसे दिखाई दी पर उसका व्यवहार इतना ठंडा था कि फ़िलिप के अन्दर छिपी हुई कामना के स्रोत मचल उठे। वह लौट आया पर मिलड्रेड उसके दिमाग से न निकल सकी। वह अपनी इस मूर्खता पर क्रोध में हँसता था। अपने अपमान का बदला वह अब तक नहीं ले सका था और उसे निश्चय हो गया था कि उसे तब तक शांति नहीं मिलेगी जब तक वह इस अपमान का बदला न ले लेगा।

उसने तय किया कि वह अब रोज वहाँ जायगा और कोई बात ऐसी नहीं करेगा-कहेगा जिससे मिलड्रेड नाराज हो। लेकिन इसका भी कोई प्रभाव न पड़ा। उसकी ओर मिलड्रेड के व्यवहार में कोई अन्तर न पड़ा। वह लड़की उसकी ओर कोई ध्यान ही नहीं देती थी। शाम को जब वह चायखाने से निकला तो उसने निश्चय कर लिया कि वह फिर कभी वहाँ न जायगा।

दूसरे ही दिन चाय के समय से वह बेचैन होने लगा। वह उस चायखाने को—उस लड़की को भुलाने की चेष्टा करता रहा लेकिन अपनी इच्छा पर वह काबू न पा सका। तंग आकर वह अपने आपसे कह पड़ा—

'अगर मैं जाना ही चाहता हूँ तो क्यों न जाऊँ?'

अपने आपसे संघर्ष करते-करते सात बज गये और फिर वह चायखाने की ओर चल पड़ा।

'मैंने तो सोचा आज तुम आओगे ही नहीं।' लड़की उससे बोली।

फ़िलिप का दिल खुशी से कूद पड़ा। 'काम था, रुक जाना पड़ा।'

'तुम तो विद्यार्थी हो न?'

'हाँ।'

इतनी बात करके वह चुप हो गयी और अलग जाकर कोई सस्ता-सा उपन्यास पढ़ने लगी। दूकान में इस समय ग्राहक कम होते थे। फ़िलिप को

अपार हर्ष था; आज उसने खुद ही उससे पहले बात की। वह सोचने लगा कि अब उसे अवसर मिलेगा और वह उसे ऐसी खरी-खोटी सुनायेगा कि वह भी याद करे।

फ़िलिप ने मिलड्रेड की तरफ़ देखा। उसकी मुखाकृति वास्तव में बहुत सुन्दर थी लेकिन संगमरमर-सी बेजान और ठंडी। जेब में पड़े हुए कागज पर फ़िलिप उसका चित्र बनाने लगा और जब चला तो उसे मेज पर ही छोड़ गया।

दूसरे दिन जब फ़िलिप आया तो मिलड्रेड उसे देखकर मुस्करा दी।

'मुझे पता नहीं था कि तुम चित्र भी खींच लेते हो!'

'मैंने दो साल पेरिस में चित्रकला का अभ्यास किया है।'

जब वह चाय लेने गयी तो एक दूसरी वेट्रेस आकर बोली—'आपने मिस रोजर्स का चित्र तो बहुत अच्छा बनाया है। सूरत से बिल्कुल मिलता है।'

बिल देने के लिए फ़िलिप ने मिलड्रेड को पुकारा—'मिस रोजर्स!'

'अच्छा तो तुम मेरा नाम भी जान गये!'

'तुम्हारे मित्र ही ने चित्र का जिक्र करते वक्त बताया था।'

'वह भी चाहती है कि तुम उसका चित्र बनाओ। पर बनाना मत—मुसीबत में पड़ जाओगे क्योंकि फिर सब के सब यही चाहेंगे और चित्र बनाने का कोई अन्त न होगा।'

दूसरे दिन फ़िलिप बेचैन रहा। उसने सोचा कि दोपहर का भोजन भी वह चायखाने में ही करे लेकिन उस समय तो भीड़ होती है और मिलड्रेड से वह बात भी न कर सकेगा। लेकिन ठीक साढ़े चार बजे वह वहाँ चाय पीने तो पहुँच ही गया।

मिलड्रेड का ध्यान उसकी तरफ नहीं था; वह उसी जर्मन से बात कर रही थी। कभी-कभी वह हँस भी देती थी। फ़िलिप को लगा उसकी हँसी में कोई आकर्षण नहीं है।

फ़िलिप ने उसे आवाज दी लेकिन उसने कोई ध्यान नहीं दिया। फ़िलिप ने क्रोध में मेज को जोर से खटखटाया।

'आज बड़ी जल्दी में मालूम पड़ते हो!' मिलड्रेड की आँखों में उपेक्षा और लापरवाही थी।

'आज क्या बात है जो सुन भी नहीं रही हो?' फ़िलिप ने पूछा।

'अपना 'आर्डर' दीजिए न! आपसे बातें करने की मुझे फुर्सत नहीं है!'

'चाय और टोस्ट!' फ़िलिप ने बहुत नाराजी में कहा।

फ़िलिप बहुत क्रुद्ध हो गया था। मिलड्रेड चाय ले आयी।

'अगर तुम बिल भी अभी दे दो तो तुम्हें बुलाने की भी आवश्यकता नहीं पड़ेगी बाद में!' फ़िलिप ने कटाक्ष करते हुए कहा।

मिलड्रेड पर उसके क्रोध का या कटाक्ष का कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वह बिल लिखकर रख गयी और फिर उस जर्मन से जाकर बातें करने लगी। फ़िलिप क्रोध से जल रहा था। उसे लगा कि जैसे और लड़कियाँ भी उसका मजाक उड़ा रही हैं। उसे मिलड्रेड से जबरदस्त घृणा हो गयी। उसने सोचा कि सबसे अच्छा तो यह होगा कि उस रेस्तराँ में वह आना ही बन्द कर दे। लेकिन अभी उसने अपने अपमान का बदला तो लिया ही नहीं था।

दूसरे दिन फिर फ़िलिप वहीं पहुँचा और किसी और 'वेट्रेस' की मेज पर बैठ गया। मिलड्रेड अपने जर्मन मित्र से बड़ी संलग्नता से बात कर रही थी; उसने फ़िलिप की तरफ ध्यान भी नहीं दिया। कुछ दिन तक फ़िलिप ने यही किया। मिलड्रेड का जर्मन मित्र भी उन दिनों नहीं आ रहा था लेकिन इस पर भी उसको फ़िलिप में कोई दिलचस्पी नहीं थी। फ़िलिप सोचने लगा कि आखिर ऐसे कैसे और कब तक काम चलेगा।

दूसरे दिन फ़िलिप फिर मिलड्रेड की मेज पर जाकर बैठ गया। जब वह उसके पास आयी तो उसने 'गुड ईवनिंग' किया जैसे कोई बात ही नहीं हुई है। उसका चेहरा भावहीन था लेकिन उसका दिल जोर से धड़क रहा था। एकाएक वह बोला—

'किसी दिन मेरे साथ थियेटर चलोगी? बाद में हम लोग खाना भी साथ

ही खायेंगे ! मैं 'स्टाल्स्' के टिकट खरीद लूँगा ।' स्टाल्स् थियेटर में सबसे ऊँचा दर्जा होता था जिसमें वह शायद ही कभी गयी हो। फ़िलिप ने सोचा था कि इस लालच पर तो वह उछल ही पड़ेगी।

मिलड्रेड ने कोई उत्सुकता नहीं दिखाई—'मुझे कोई एतराज नहीं।'

'कब चल सकोगी ?'

'बृहस्पतिवार को मुझे जल्दी छुट्टी मिल जाती है।'

उसने फ़िलिप का निमंत्रण कुछ ऐसे स्वीकार किया मानो वह फ़िलिप पर कोई उपकार कर रही है। फ़िलिप थोड़ा खीझ उठा।

बृहस्पतिवार को फ़िलिप मिलड्रेड को एक बड़े रेस्तराँ में ले गया। मिलड्रेड बहुत खुश दिखाई दी।

'मुझे सच बड़ा आश्चर्य हुआ था जब तुमने मुझे थियेटर ले चलने को कहा।' वह बोली।

उसके बाद वे लोग ड्रामा देखने गये। वापस लौटते समय फ़िलिप ने पूछा—

'तुम खुश हो न ?'

'हाँ।'

'किसी दिन फिर साथ चलोगी ?'

'मुझे कोई एतराज नहीं।'

दोनों में कभी इससे ज्यादा बात हो ही नहीं पाती थी।

जब वह रात को बिस्तर पर लेटा तो उसे यह बात बिल्कुल असम्भव लगी कि वह मिलड्रेड से प्यार करता है। नाम ही कितना खराब था उसका ! वह ऐसी कोई सुन्दर भी नहीं थी। फ़िलिप को उसके दुबलेपन से नफरत थी। बिल्कुल साधारण-सी तो लड़की थी वह। इस पर वह कितनी रूखी और बदतमीज़ थी। कभी-कभी तो जी में आता था कि उसके कान मरोड़ दे। और फिर अचानक, पता नहीं क्यों, उसे मारने के विचार से या उसके छोटे छोटे खूबसूरत कानों की याद आते ही उसके अन्दर भावुकता की एक लहर दौड़

जाती थी। उसके अन्दर वासना जाग पड़ती थी—मिलड्रेड को अपने आलिंगन में बाँध लेने की एक अजीब-सी भूख। वह उसको पा जाना चाहता था।

उसका विचार था कि प्रेम एक महान सुख है जिसके कारण सारे संसार में बहार दिखाई दे सकती है—कि उस भावना से मनुष्य गद्‌गद् हो जाता है। लेकिन उसके इस प्यार में तो वह सुख नहीं था, इस प्रेम में तो आत्मा की भूख थी—एक वासना, जिससे उसके शरीर में पीड़ा होने लगती थी।

शनिवार की शाम को फ़िलिप ने थियेटर के टिकट खरीदे। मिलड्रेड को उस दिन अवकाश देर में मिलता था और तय यह हुआ था कि सवा सात बजे से फ़िलिप उसकी प्रतीक्षा दूकान के बाहर करेगा। उस दिन तीसरे पहर को भी फ़िलिप बात बिल्कुल पक्की करने के लिए चायखाने गया। जैसे ही वह चाय-खाने में घुसा उसने उस जर्मन को बाहर निकलते हुए देखा। उसका नाम मिलर था यह फ़िलिप अब तक जान चुका था। फ़िलिप को मिलर से ईर्ष्या थी लेकिन उसे सन्तोष भी इस बात का था कि मिलड्रेड स्वभावतः कठोर और शुष्क है उसमें प्यार और वासना जाग ही नहीं सकती है। फिर भी इस आशंका से वह काँप उठा कि मिलर की वापसी से उसका शाम का प्रोग्राम कहीं गड़बड़ न हो जाय।

मिलड्रेड उसकी चाय लेकर आयी।

'मुझे अफसोस है कि शाम को मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकूँगी!'

'क्यों?'

'नाराज मत होओ, मेरा दोष नहीं। कल रात मेरी चाची की तबीयत खराब हो गयी—उन्हें अकेले तो नहीं छोड़ा जा सकता।'

'कोई हर्ज नहीं—मैं तुम्हें घर पहुँचा आऊँगा।'

'लेकिन तुमने टिकट जो खरीद लिये हैं, उन्हें व्यर्थ बरबाद कर रहे हो।'

फ़िलिप ने टिकट जेब से निकाल कर फाड़ डाले।

'मुझे उस ड्रामा में कोई दिलचस्पी नहीं। मैंने तो तुम्हारे कारण ही टिकट लिये थे।'

'लेकिन तुम मुझे घर छोड़ने भी नहीं जा सकते।'

'क्यों ? क्या कुछ और मामला है ?'

'पता नहीं तुम क्या कह रहे हो ? मैं क्या करूँ अगर मेरी चाची बीमार है, इसमें मेरा क्या दोष ?'

मिलड्रेड फ़िलिप का बिल रख कर चल दी। फ़िलिप ने तय कर लिया कि बाहर निकलकर वह छिपकर यह देखेगा कि मिलड्रेड मिलर के साथ जाती है या नहीं। सात बजे से वह दूकान के बाहर खड़ा हो गया लेकिन मिलर उसे कहीं भी दिखाई नहीं दिया। दस मिनट के बाद मिलड्रेड दूकान के बाहर निकली। इसके पहले कि फ़िलिप छिप सके मिलड्रेड ने उसे देख लिया।

'यहाँ क्या कर रहे हो ?'

'कुछ नहीं—हवा खा रहा हूँ।'

'मैं समझती थी, तुम एक शरीफ़ आदमी हो, लेकिन तुम हो नीच ! मेरा पीछा करने के लिए यहाँ क्यों खड़े हो ?'

'शरीफ़ आदमी तो तुमसे बात करना भी पसन्द नहीं करेगा !' फ़िलिप के अन्दर क्रोध का तूफ़ान था। वह उसे इतना ही नाराज करना चाहता था जितना उसने फ़िलिप को दुख पहुँचाया था।

'मैंने कह तो दिया कि मैं घर जा रही हूँ और मैं तुम्हें अपना पीछा नहीं करने दूँगी।'

'आज मिलर से तुम्हारी मुलाक़ात हुई थी ?'

'इससे तुमसे क्या मतलब ? मैंने उसको कई दिनों से नहीं देखा है !

'वह आज दूकान में आया था। मैंने खुद उसे तीसरे पहर दूकान से बाहर निकलते देखा था।'

'तो क्या हुआ ? मैं उसके साथ घूम-फिर सकती हूँ। तुमसे इससे क्या मतलब ?'

कुछ देर रुक कर मिलड्रेड फिर बोली, 'और भविष्य में आपका मुझसे कोई सम्बन्ध भी नहीं !'

लाचार निराशा ने क्रोध का स्थान ले लिया फ़िलिप के हृदय में। बेबस होकर वह बोला—'मुझ पर इतना अत्याचार मत करो, मिलड्रेड। मैं तुमसे

प्रेम करता हूँ। अपना इरादा बदल दो। मिलर तुम्हारी ज़रा भी परवाह नहीं करता। मैं और टिकट ले लूँगा—हम लोग अब भी कहीं चल सकते हैं।'

'नहीं, कभी नहीं!'

एक बार उसने मिलड्रेड की तरफ देखा। उसका दिल पीड़ा से फटा जा रहा था। तेजी से चलती हुई भीड़ में मिलड्रेड की आखें मिलर को ढूँढ़ने का बेकार प्रयत्न कर रही थीं।

'अगर तुम आज मेरे साथ नहीं चलोगी तो मैं फिर कभी तुम्हारी सूरत तक नहीं देखूँगा।'

'तो किसे परवाह है! तुमसे छुट्टी तो मिल जायगी।'

'अच्छा तो बिदा!'

फ़िलिप मुड़ा और लंगड़ाता हुआ दूसरी तरफ चल दिया। उसे दिल में आशा थी कि मिलड्रेड उसे वापस बुलायेगी। अगले लैम्प-पोस्ट पर वह कुछ देर रुका और उसने मुड़कर देखा। वह वापस जाने को तैयार था—वह सब कुछ भुला सकता था, वह किसी भी उपेक्षा और अपमान के लिए राजी था। लेकिन मिलड्रेड जा चुकी थी।

उस रात वह ठीक से न सो सका। अगले दिन इतवार था। वह अपनी किताबें पढ़ने लगा लेकिन उसके विचार कहीं न जमते थे। उसे हर क्षण मिल-ड्रेड का ख्याल आता रहता था और वह कुछ नहीं पढ़ पा रहा था। तंग आकर वह घूमने निकल पड़ा लेकिन आज तो इतवार था, सब दूकानें बन्द थीं और सड़क बिल्कुल सुनसान थी। एक भारी थकान उसके ऊपर छा गयी और वह घर लौट कर सो गया।

बड़े दिन की छुट्टियाँ भी आ रही थीं। सब विद्यार्थी छुट्टियों में बाहर जा रहे थे। फ़िलिप के चाचा ने भी उसे ब्लैकस्टेबिल आने का निमंत्रण दिया था लेकिन फ़िलिप ने परीक्षा का बहाना बनाकर निमंत्रण अस्वीकार कर दिया था। वास्तव में, वह मिलड्रेड से दूर नहीं जाना चाहता था। इन सब परेशानियों को भुलाने का प्रयत्न करने के लिए वह अध्ययन में लग गया।

परीक्षा समाप्त हो गयी। फ़िलिप को विश्वास था कि वह उत्तीर्ण हो जायगा,

लेकिन दूसरे दिन जब परीक्षा-फल निकला तो उसे अपना नम्बर कहीं नहीं दिखाई दिया। फ़िलिप को बहुत आश्चर्य हुआ, उसने तीन बार परीक्षा-फल की सूची को पढ़ा, लेकिन कुछ नहीं। डन्सफोर्ड उसके साथ था।

'मुझे बड़ा अफसोस है कि तुम फेल हो गये।'

'अरे कोई हर्ज नहीं। जुलाई में तो फिर परीक्षा होगी।'

जैसे ऊपर से तो फ़िलिप यही दिखाने का प्रयत्न कर रहा था कि उसके फेल होने का उसे कोई दुख नहीं लेकिन अन्दर ही अन्दर उसे एक विशाल, विस्तृत अकेलेपन का आभास हो रहा था। उसे लगा कि वह बेकार है—निकम्मा है। उसे इस समय सहानुभूति की सख्त आवश्यकता थी और मिलड्रेड से एक बार मिलने के लोभ पर वह विजय नहीं पा रहा था। सहानुभूति के दो शब्दों की भी आशा फ़िलिप को उससे नहीं थी लेकिन वह उसको बस देख भर लेना चाहता था। उस चायखाने में फिर जाने में फ़िलिप का अपमान तो अवश्य था लेकिन अब आत्म-सम्मान की भी उसे क्या आवश्यकता? फ़िलिप अपने मन में दोहराता रहा—'मुझे उससे मिलना पड़ेगा। मैं उससे जरूर मिलूँगा!'

उसकी इच्छा इतनी प्रबल हो गयी कि वह एक गाड़ी लेकर वहाँ भागा-भागा गया। कुछ देर बाहर खड़ा खड़ा वह कुछ सोचता रहा फिर अन्दर चला गया। उसके मेज पर बैठते ही मिलड्रेड उसके पास आयी।

'चाय और टोस्ट!' फ़िलिप ने रुखे स्वर में कहा। फ़िलिप ठीक से बोल भी नहीं पा रहा था—उसे डर था कि वह रो न पड़े।

'मैं तो समझी थी तुम मर चुके हो।' मिलड्रेड ने उत्तर दिया।

वह मुस्करा रही थी—सच मुस्करा रही थी। वह शायद उस कड़वी विदाई को बिल्कुल भूल चुकी थी, जो फ़िलिप के दिल पर भार बन कर रह गयी थी।

'मैं समझता था कि अगर तुम्हें मुझसे मिलना है तो तुम पत्र लिखोगी।'

'पत्र लिखने के आलावा भी मुझे बहुत से और काम हैं।' मिलड्रेड ने रूखा सा उत्तर दिया।

यह कहकर मिलड्रेड चाय लेने चली गयी। फ़िलिप अपने भाग्य को कोस रहा था कि क्यों वह इस लड़की के बन्धन में पड़ गया जो कभी एक मीठी बात भी नहीं कह सकती।

'क्या मैं कुछ देर यहाँ बैठ सकती हूँ?' चाय की चीजें रखते हुए मिलड्रेड बोली।

'हाँ!'

'इतने दिन कहाँ गायब रहे?'

'यहीं लन्दन में था।'

'मैं समझी थी कि कहीं बाहर चले गये। तो फिर यहाँ क्यों नहीं आये?'

फ़िलिप की आँखें, शरीर और आत्मा की भूख से जल रही थीं। उसने उत्तर दिया—'तुम्हें याद नहीं उस बार मैंने तुमसे कहा था, कि मैं अब तुम्हारी सूरत तक नहीं देखूँगा।'

'तो अब क्या कर रहे हो?'

फ़िलिप जानता था कि मिलड्रेड ऐसी बातें बिना इरादे के स्वाभाविक रूप से ही करती है। अब भी उसकी बातें उसका अपमान कर रही थीं—उसे पीड़ा पहुँचा रही थीं। फ़िलिप चुप रहा।

'उस दिन तुमने बहुत बुरा किया। मैं तो समझती थी कि तुम बहुत नेक हो।'

'मुझे यूँ न सताओ, मिलड्रेड। मैं तुम्हारी कठोरता सह नहीं सकता!'

'तुम अजीब आदमी हो। मैं तुम्हें समझ नहीं पाती!'

'समझना क्या है? मैं तो इतना बड़ा मूर्ख हूँ कि तुम्हें हद से ज्यादा प्यार करता हूँ और तुम रत्ती भर परवाह नहीं करतीं मेरी!'

'तुम्हें दूसरे दिन अपने दुर्व्यवहार की क्षमा माँगने तो आना चाहिये था।'

सच वह बहुत बेरहम थी। फ़िलिप को इच्छा हुई कि उसके गले में चाकू भोंक दे और इसी के साथ-साथ उसने यह भी चाहा कि उसके चेहरे पर चुम्बनों की बौछार कर दे।

'काश, मैं तुम्हें बता सकता कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ!'

'लेकिन तुमने अभी तक तो क्षमा भी नहीं माँगी मुझसे !'

फ़िलिप के जी में आया कि वह उससे कह दे—'भाड़ में जाओ तुम !' इतना क्रोध था उसे; लेकिन हिम्मत नहीं हुई। उसकी वासना ने उसके तमाम क्रोध को चूर-चूर कर डाला। वह उसे बस देख भर लेने के लिए सब कुछ करने को तैयार था।

'मुझे बहुत अफसोस है—मिलड्रेड—मुझे क्षमा कर दो !' यह कहने में फ़िलिप ने महान कष्ट का अनुभव किया।

'मैं अब तुम्हें बताऊँ कि उस दिन तुम्हारे साथ न चलने का मुझे बहुत दुख हुआ। मिलर बहुत नीच निकला और मैंने उसे दुत्कार दिया।'

फ़िलिप स्तम्भित रह गया।

'तो मिलड्रेड, आज फिर चलोगी न मेरे साथ ? हम लोग कहीं साथ-साथ खाना भी खायेंगे।'

'आज नहीं। चाची मेरी राह देखेंगी !'

'मैं उन्हें तार से सूचना दे दूँगा कि तुम देर से लौटोगी। भगवान के लिए चली चलो—मैं तुमसे बहुत-सी बातें करना चाहता हूँ।'

'अच्छा ! चली चलूँगी। मैं भी बहुत दिनों से कहीं बाहर नहीं गयी हूँ।'

फ़िलिप खुशी से पागल हो गया।

मार्च के अन्त में शरीर-विज्ञान की परीक्षा में फ़िलिप फिर असफल रहा। उसने परिश्रम तो काफी किया था लेकिन परीक्षा के समय फ़िलिप बुरी तरह घबरा गया और उत्तर भी ठीक से न दे सका। इस बार तो फ़िलिप भी यह समझता था कि वह पास नहीं हो सकेगा। वह परीक्षा-फल देखने भी अस्पताल तक नहीं गया।

लेकिन फ़िलिप को ज्यादा चिन्ता नहीं थी। उसे उसके अतिरिक्त और भी चिन्ताएँ थीं। वह सोचता था कि क्या मिलड्रेड में प्रेम करने की भावना है ही नहीं ? वह तो सब में होती है—उसमें भी अवश्य होगी। केवल उसे जाग्रत कर सकने का प्रश्न था। उसे विश्वास था कि एक ऐसा दिन अवश्य आयेगा

जब मिलड्रेड का बर्फ सा ठंडा दिल भी पिघलेगा और मिलड्रेड के शरीर और दिल दोनों में प्यार पाने की इच्छा जाग उठेगी। फ़िलिप उस अवसर की प्रतीक्षा बहुत बेसब्री से कर रहा था।

मिलड्रेड के अन्दर प्यार की चेतना पैदा करने के लिए फ़िलिप ने क्या कुछ नहीं किया। वह उसकी हर बात की तरफ पूरा-पूरा ध्यान देता था, जब वह दिन भर काम करने के बाद थक जाती थी तो उसे बहलाने के लिए उसे घुमाता-फिराता था। अपने पेरिस के मित्रों की प्रेम-कहानियाँ उसे बड़े विस्तार से सुनाता था और वहाँ के सुहावने जीवन का खूब रंगीन वर्णन करता था। वह उसे ऐसे-ऐसे रूमानी किस्से सुनाता था कि जिससे और कोई युवती तो सचमुच तड़प उठती। अगर कभी वह नाराज हो जाती थी तो फ़िलिप ऐसा व्यवहार करता था कि जैसे उसे उसकी बात बुरी ही नहीं लगी। जब वह वादा करके मुकर जाती थी तो भी फ़िलिप मुस्कराता रहता था। वह कभी उसे यह न मालूम होने देता था कि वह उसे कितनी पीड़ा पहुँचा रही है। अपने दिल पर पत्थर रखकर वह उसे सुखी रखना चाहता था।

और ऐसा नहीं था कि मिलड्रेड में परिवर्त्तन न हुआ हो हालांकि उसका मिलड्रेड को स्वयं भी कोई ज्ञान नहीं था, फिर भी वह फ़िलिप से अपने दिल की बातें कहने की आदी-सी हो गयी थी। वह अब उसके काफी निकट आ गया था और मिलड्रेड उससे बेरोक-टोक खूब बातें करती थी।

एक दिन उसने कहा—'तुम मुझे उस समय तक बहुत अच्छे लगते हो जब तक कि तुम मुझसे प्रेम करना नहीं शुरू कर देते।'

ऐसी बातें चाकू की तरह फ़िलिप के सीने में घुस जाती थीं लेकिन मिलड्रेड को नाराज करने के डर से वह हमेशा हँस कर बात टाल देता था।

एक दिन मिलड्रेड ने स्वयं ही यह प्रस्ताव रखा कि फ़िलिप उसे भोजन कराने के लिए कहीं ले जाय। फ़िलिप हर्ष से झूम उठा, आज मिलड्रेड ने खुद ही इच्छा प्रकट की है साथ चलने की। फ़िलिप ने इसको कितना बड़ा सौभाग्य समझा!

'अच्छा, उसके बाद फिर कहाँ चलना पसन्द करोगी ?' फ़िलिप ने उत्सुकता से उससे पूछा।

'कहीं नहीं। आज मैं तुमसे बस बातें करना चाहती हूँ। तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं ?'

भला फ़िलिप को क्या आपत्ति होती वह तो बहुत ज्यादा सुखी था आज। 'बस' में बैठे-बैठे फ़िलिप ने मिलड्रेड का हाथ अपने हाथों में थाम लिया—मिलड्रेड ने हाथ हटाया नहीं।

'लगता है, तुम मुझे कुछ-कुछ पसन्द करने लगी हो !'

'तुम तो सच पागल ही हो। मैं तुम्हें पसन्द करती हूँ, तभी तो तुम्हारे साथ यहाँ बैठी हूँ।'

थोड़ी देर में वे लोग एक रेस्तोराँ में पहुँच गये जहाँ वे अक्सर जाया करते थे। मैनेजर ने उन्हें देखकर अभिवादन किया।

'आज खाने का 'ऑर्डर' मैं दूँगी', मिलड्रेड बोली।

फ़िलिप को वह आज बहुत सुन्दर लग रही थी।

खाना खाने के बाद मिलड्रेड बोली—'तुम्हें आश्चर्य तो हुआ होगा जब मैंने यहाँ आने का प्रस्ताव अपने आप ही किया ?'

'मुझे तो अपार हर्ष हुआ था।'

'फ़िलिप, वास्तव में मुझे तुमसे कुछ कहना था !'

फ़िलिप ने उसकी तरफ़ देखा; उसे लगा जैसे उसका दिल बैठ जायगा।

'तो कह डालो न !' फ़िलिप ने मुस्कराते हुए कहा।

'तुम बहुत ज्यादा परेशान और दुखी मत होना···मैं शादी करने-वाली हूँ।'

'सच ?' फ़िलिप इसके अतिरिक्त और कुछ न कह सका। जो बात आज हुई थी उसके बारे में वह पहले भी सोचा करता था। उसे आशंका थी कि किसी भी दिन मिलड्रेड उससे कह देगी कि वह शादी करनेवाली है और तब वह उस कल्पना मात्र की पीड़ा से कराह उठता था; वह सोचता था कि आत्महत्या

क्यों न कर ले। लेकिन इस समय उसके हृदय में कोई भाव नहीं उठा, कोई प्रतिक्रिया नहीं हुई। फ़िलिप फटी-फटी आँखों से इधर-उधर देखता रहा।

'तुमने तो बधाई भी नहीं दी मुझे!'

'हाँ, शायद मुझे देनी तो चाहिये थी। किससे शादी कर रही हो?'

'मिलर से!'

'मिलर से! उसे तो तुमने महीनों से नहीं देखा है।'

'पिछले सप्ताह में एक दिन वह आया था और तभी उसने मुझसे विवाह करने का प्रस्ताव किया था। वह आजकल बहुत धन पैदा कर रहा है और उसका भविष्य बहुत उज्ज्वल है।'

फ़िलिप थोड़ी देर चुप रहा। 'वह तो शायद होना ही था! जिसके पास धन ज्यादा हो उसी से तुम्हें विवाह करना चाहिये! किस दिन है विवाह?'

'अगले शनिवार को। मैंने नौकरी छोड़ने का नोटिस भी दे दिया है।'

फ़िलिप ने एकाएक एक बड़ी गहरी थकान का अनुभव किया। वह मिलड्रेड के पास से भाग जाना चाहता था। 'बिल' देकर वह बोला—

'मैं तुम्हें अभी गाड़ी में बिठा दूँगा! ट्रेन की तुम्हें ज्यादा देर प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ेगी।'

'क्यों तुम साथ नहीं चलोगे?' मिलड्रेड बोली।

'मैं न चल सकूँगा, मुझे क्षमा करो।'

'जैसी तुम्हारी मर्जी। कल चाय के समय तो आओगे?'

'नहीं।'

मिलड्रेड की गाड़ी चल दी। फ़िलिप भी बस में बैठकर घर पहुँच गया। बिस्तर पर लेटकर उसने पाईप जलाया। उसने कोई पीड़ा या दुख का अनुभव नहीं किया। तकिये पर सिर रखते ही उसे बहुत गहरी नींद आ गयी।

१०

लॉसन से फ़िलिप की मित्रता पेरिस के दिनों से ही थी। अब वह एक सफल चित्रकार हो गया था। और लंदन में रहने आ गया था। कुछ दिन पहले दोनों की फिर से मुलाकात हो गयी थी।

फ़िलिप के सिर से मिलड्रेड के प्रेम का भूत उतरने लगा था। पिछले दिनों की बातें याद करके उसके दिल में घृणा भर जाती थी। उसकी समझ में नहीं आता था कि कैसे इतना अपमान सहकर भी वह मिलड्रेड को प्यार करता रहा था। अब उसकी याद भी आ जाने से उसके हृदय में घृणा और क्रोध उमड़ पड़ता था। वह अपने गहरे वासनापूर्ण प्रेम के बन्धनों से स्वतन्त्र हो गया था। उसे लगता था कि साँप की तरह उसने भी केंचुल बदल दी, उसे मानो नये जीवन का दान मिला था। अगर प्रेम उसी तरह का पागलपन था तो वह कभी भी प्रेम नहीं करना चाहता था।

'फ़िलिप ने जीवन एक नये जोश से शुरू किया। वास्तव में उसका पुन-र्जन्म हुआ था।

इन्हीं दिनों फ़िलिप की एक नयी मैत्री हुई। लॉसन उन दिन एक लड़की का चित्र बना रहा था। उसी के लिए लॉसन ने एक दिन दावत भी दी। फ़िलिप भी उसमें निमंत्रित था। 'मॉडेल' के साथ एक और औरत आयी थी, जिसका नाम मिसेज नेसबिट था। मिसेज नेसबिट से फिलिप की खाने के समय खूब बातें हुई। थोड़ी-सी देर में फ़िलिप को उनकी ही जबानी उनके बारे में काफी बातें मालूम हो गयीं—उनकी अवस्था पच्चीस से अधिक नहीं है, पति से उनका सम्बन्ध-विच्छेद हो चुका है, वह सस्ते उपन्यास लिखती हैं जिससे उनकी जीविका चलती है और उनके बच्चे का पालन-पोषण होता है। उन्होंने

फ़िलिप को अपने यहाँ चाय पीने को बुलाया। फ़िलिप समय पाने पर उनके यहाँ गया, और उन्होंने उसका इतना स्वागत किया कि वह अक्सर वहाँ जाने लगा।

मिसेज नोरा नेसबिट स्वावलंबी महिला थीं। देखने में भी कुछ अजीब-सी लगती थीं। सुन्दर तो वह बिल्कुल नहीं थीं; आँखों में चमक थी, गाल की हड्डियाँ उठी हुई थीं, रंग बहुत गोरा था, गाल सुर्ख थे, भवें और बाल घने और काले थे और इस सब का देखने वाले पर एक अजीब प्रभाव पड़ता था। मिसेज नेसबिट में कहीं कुछ आकर्षक था अवश्य, उतना ही आकर्षक मिसेज नेसबिट का चरित्र भी था। उन्हें जीविका कमाने के लिए तरह-तरह का और काफी परिश्रम करना पड़ता था लेकिन कठोर से कठोर परिस्थिति में भी वह हँसती ही रहती थीं और इतनी विनोदप्रिय थीं कि मुसीबत में भी ओठों पर मुस्कान रहती थी। कभी-कभी कहीं कुछ गड़बड़ हो जाता था और धन उनके पास खत्म हो जाता था; तब वह अपनी चीजें गिरवी रखकर खर्च चला लेती थीं लेकिन माथे पर कभी शिकन नहीं आती थी।

फ़िलिप को इनके इस प्रकार के जीवन से काफी दिलचस्पी थी। अपने संघर्षों की कहानियाँ सुनाकर वह फ़िलिप का दिल बहलाया करती थीं। मिसेज नेसबिट का जीवन-दर्शन उनके अपने शब्दों में यह था—'भविष्य के बारे में मैं कभी नहीं सोचती। जब मेरे पास तीन सप्ताह का मकान का किराया रहता है और इसके अतिरिक्त एक-दो पाउंड रहते हैं तब तक चिन्ता करने की क्या आवश्यकता? जीना तो असम्भव ही हो जाय अगर वर्तमान के साथ-साथ भविष्य के लिए भी चिन्तित हो जाऊँ! मुसीबत जब आती है तो कुछ न कुछ हो ही जाता है।'

धीरे-धीरे फ़िलिप को उनके साथ रोज चाय पीने की आदत-सी पड़ गयी। इसीलिए कि वह उन पर बोझ न बन जाय फ़िलिप हमेशा कोई न कोई चीज साथ ले जाया करता था। फ़िलिप के लिए नारी और पुरुष का यह सम्बन्ध बिल्कुल नया था। उसे अच्छा लगता था कि कोई तो है जिसे वह अपना

व्यथाएँ सुना सकता है। उस समय तक वे एक दूसरे को नोरा और फ़िलिप कह कर सम्बोधित भी करने लगे थे। घनिष्ठता बहुत बढ़ गयी थी।

एक दिन फ़िलिप ने नोरा को मिलड्रेड से अपने प्रेम की कथा सुनायी और अन्त में कहा—'मैं सच बहुत प्रसन्न हूँ कि वह सब खत्म हो गया।'

'तुम्हें बहुत कष्ट उठाना पड़ा होगा—बड़ी पीड़ा हुई होगी।'

नोरा ने सहानुभूति दिखाने को अपना हाथ फ़िलिप के कन्धे पर रख दिया। फ़िलिप ने हाथ चूम लिया—नोरा ने शीघ्र ही अपना हाथ हटा लिया।

'क्यों तुम्हें बुरा लगा?'

नोरा ने उसकी तरफ़ अजीब तरह से देखा—'नहीं तो!'

फ़िलिप ने उठकर उसे अपने नजदीक समेट लिया और आलिंगन में बाँधकर उसका मुँह चूम लिया। अपने को छुड़ाने का नोरा ने कोई प्रयत्न नहीं किया।

'यह क्यों किया तुमने?' नोरा ने पूछा।

'क्योंकि इससे मुझे सुख मिला है।'

नोरा की आँखों में दया की झलक दौड़ गयी और फ़िलिप के बालों को सहलाती हुई वह बोली—'अपनी मित्रता को मित्रता ही रहने देते तो शायद अच्छा होता।'

नोरा की आँखों में जैसे रस भरा हुआ था। उन्हें देखकर फ़िलिप का दिल सिहर उठा—उसकी आँखों में आँसू आ गये।

'नोरा, तुम मुझे प्यार तो नहीं करती हो न?' इस नये सुख से डरते हुए फ़िलिप ने उससे प्रश्न किया।

'तुम बड़े वो हो! यह भी कोई सवाल है?'

फिलिप ने उसको अपने सीने के और निटक खींचकर उसे कसकर चूम लिया और शरमाते हुए, मुस्कराते हुए नोरा उसके प्रेमपाश में डूब गयी।

फ़िलिप को यह नया सुख ठोस और वास्तविक मालूम पड़ता था। उसके सुख की सीमा न रही! वे दोनों प्रेमी होने के साथ-साथ मित्र भी थे। नोरा में मातृत्व की जो भावना थी उसे फ़िलिप को प्यार करने में बहुत सन्तोष मिलता

था, उसकी देखरेख करने में बहुत आनन्द प्राप्त होता था। वह फ़िलिप को बहुत चाहने लगी थी।

फ़िलिप को वैसे उससे प्रेम नहीं था। उसे वह अच्छी लगती थी। उसके साथ रहने में, बात करने में उसे सुख मिलता था। नोरा ने फ़िलिप के अन्दर आत्म-विश्वास और साहस फिर से जगा दिया था और उसके जख्मों को सहला दिया था। वह इस बात से भी बहुत प्रसन्न था कि नोरा उसका बहुत ख़याल रखती है। वह उसकी आशावादिता से और साहस से बहुत प्रभावित था।

नोरा में दूसरों को खुश रखने का नारीसुलभ गुण पर्याप्त मात्रा में था। उसने फ़िलिप से कहा कि पेरिस छोड़ने में उसने बहुत साहस और बुद्धिमानी का परिचय दिया था। नोरा ने उसकी इन बातों की इतनी प्रशंसा की कि फ़िलिप आनन्द से झूम उठा। फ़िलिप तो अपने आप यह भी तय नहीं कर पाया था कि पेरिस छोड़ने में उसने बुद्धिमानी की या कमजोरी दिखाई। नोरा ने उसके अक्सर क्रुद्ध हो जाने, रूठ जाने की आदत को भी छुड़वाने का प्रयत्न किया।

एक दिन फ़िलिप बोला—'तुम मुझसे वह करा लेती हो जो तुम चाहती हो !'

'क्यों—तुम्हें बुरा लगता है ?'

'नहीं तो ! मैं भी तो वही करना चाहता हूँ जो तुम चाहती हो।'

फ़िलिप को नोरा से जो सुख प्राप्त होता था, उसका उसे पूरा ज्ञान था। उसने फ़िलिप को वह सब कुछ दे दिया था जो कोई भी पत्नी अपने पति को दे सकती है और सबसे बड़ी बात यह थी कि यह सम्बन्ध फ़िलिप के लिए कोई बन्धन नहीं था। वह उसकी प्रिय मित्र थी—ऐसी मित्रता उसे किसी आदमी से आज तक नहीं मिली थी और उनके शारीरिक सम्बन्ध ने जैसे उस मित्रता को सीमेंट की तरह जोड़कर ठोस भी बना दिया था। फ़िलिप की सब इच्छाएँ संतुष्ट हो जाती थीं और इसलिए उसका सुख सम्पूर्ण था और उसका व्यक्तित्व ठोस होने लगा था। वह जब कभी मिलड्रेड और उस पागल बना देनेवाली वासना

के बारे में सोचता था तब उसके दिल में मिलड्रेड के लिए जबरदस्त घृणा भर जाती थी।

फ़िलिप की परीक्षा निकट आ रही थी और नोरा का उससे उतना ही सम्बन्ध था जितना फ़िलिप का। वह फ़िलिप से अधिक परीक्षाफल जानने के लिए व्यग्र थी। जब फ़िलिप ने नोरा से जाकर कहा कि वह तीनों परीक्षाओं में उत्तीर्ण हो गया है तो उसकी आँखों में खुशी के आँसू आ गये। नोरा के प्रेम और सहानुभूति ने फ़िलिप को आन्तरिक सुख पहुँचाया था और वह हर्ष से झूम उठा था।

एक दिन फ़िलिप जब सोकर उठा तो उसके सिर में भयङ्कर पीड़ा हुई और उसकी तबीयत खराब हो गयी। उसे सर्दी लग रही थी और उसके शरीर के जोड़-जोड़ में दर्द हो रहा था। मकान मालकिन उसका सुबह का नाश्ता कमरे में लायी लेकिन तबीयत खराब होने के कारण, वह केवल एक प्याला चाय ही पी सका। थोड़ी देर बाद ग्रिफिथ्स कमरे में आया। साल भर से वह दोनों उसी मकान में रहते आये थे मगर अब तक आपस में उनकी विशेष बातचीत कभी नहीं हुई थी।

'सुना, तुम्हारी तबीयत कुछ खराब है। क्या बात है ?'

फ़िलिप को कुछ झिझक लगी, उसने बहाना किया कि कोई खास बात नहीं है।

'अच्छा, मैं तुम्हारा बुखार तो नाप ही लूँ !'

'कोई आवश्यकता नहीं।'

'हटो भी !' और ग्रिफिथ्स ने थर्मामीटर फ़िलिप के मुँह में लगा दिया। थोड़ी देर बाद वह डाक्टर डीकन को बुलाने चला गया। ग्रिफिथ्स की बोलचाल और चाल-ढाल में इतनी दया, गम्भीरता और आकर्षण था कि फ़िलिप उसे बहुत पसन्द किये विना नहीं रह सका। जाने के पहले ग्रिफिथ्स ने उसको पलंग पर आराम से लिटा दिया। फिर वह उससे यह कहकर चल दिया—

'तुम पलंग पर ही आराम करना; मैं अभी डाक्टर को लिवा लाता हूँ।'

डाक्टर ने आकर यह बताया कि फ़िलिप को इनफ्लूएन्ज़ा है। उन्होंने

सलाह दी कि फ़िलिप अगर अस्पताल में भर्ती हो जाय तो अच्छा हो, मगर फ़िलिप ने मना कर दिया। डाक्टर ने आपत्ति की कि यहाँ सेवा-सुश्रुषा नहीं हो सकेगी।

'इनकी देख-भाल मैं कर लूँगा,' ग्रिफिथ्स ने फौरन कहा।

डाक्टर नुस्खा लिखकर चले गये। ग्रिफिथ्स जाकर दवा बनवा लाया। इसके अतिरिक्त वह थोड़ी देर को भी फ़िलिप के कमरे से नहीं हटा। वह अपने कमरे से अपनी किताबें भी ले आया और फ़िलिप के बराबर वाले कमरे में बैठा पढ़ता रहा, ताकि अगर फ़िलिप को किसी चीज की आवश्यकता हो या तबीयत बिगड़े तो वह उसके पास फौरन पहुँच सके।

शाम को फिलिप की तबीयत ज्यादा खराब हो गयी और ज्वर बढ़ जाने से रात भर उसे सन्निपात रहा। सुबह जब उसने आँखें खोलीं तो देखा कि ग्रिफिथ्स एक आरामकुर्सी से उठकर आग जला रहा है। वह अपने सोने के कपड़े पहिने हुए था।

'यह क्या कर रहे हो ?'

'क्या मैंने तुम्हें जगा दिया ? मैं तो बहुत खामोशी से आग जलाने का प्रयत्न कर रहा था।'

'तुम सोये क्यों नहीं ? अब बजा क्या है ?'

'लगभग पाँच। मैंने सोचा कि तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं है, तुम्हारे पास ही रात काटनी चाहिये।'

'इतनी भलाई तुम मेरे साथ क्यों कर रहे हो ! कहीं तुम्हें कुछ हो गया तो ?'

'तब तुम मेरी देख-भाल कर लेना, दोस्त !' ग्रिफिथ्स ने हँसते हुए कहा।

सुबह फ़िलिप के मना करते हुए भी ग्रिफिथ्स ने उसके हाथ-मुँह धोये। उसके बाद उसके बिस्तर को ठीक किया और उसे आराम से लिटा दिया।

'मैं समझ नहीं पाता कि तुम इतने अच्छे क्यों हो ?' फ़िलिप बोला।

'अच्छा क्या, डाक्टर होने वाला हूँ न। मरीजों की सेवा करने की आदत

डाल रहा हूँ।' यह कहकर वह खुद कपड़े बदलने और नाश्ता करने चला गया।

फ़िलिप पाँच दिन बीमार पड़ा रहा। नोरा और ग्रिफ़िथ्स ने मिलकर उसको ठीक कर लिया। ग्रिफ़िथ्स एक गम्भीर और सुशील व्यक्ति था और मात्र उसके व्यक्तित्व से दूसरों को प्रोत्साहन मिलता था। फ़िलिप को माता या बहनों का स्नेह कभी प्राप्त नहीं हुआ था और इस कारण ग्रिफ़िथ्स की स्नेहपूर्ण मैत्री का उस पर गहरा प्रभाव पड़ा था। जब फ़िलिप अच्छा होने लगा तो ग्रिफ़िथ्स उसके कमरे में बैठा-बैठा उसे अपनी प्रेमकथाएँ सुनाया करता था जिससे फ़िलिप का दिल बहलाता था। ग्रिफ़िथ्स कई लड़कियों से एक साथ प्रेम कर सकता था और कभी किसी झंझट में नहीं पड़ा था। वह बहुत मस्त आदमी था। अपने बारे में कही हुई उसकी कहानियाँ बहुत ही मनोरंजक होती थीं। वह बुरी तरह से कर्ज में था और उसे अपना खर्च चलाने के लिए अपनी चीजें गिरवीं तक रख देनी पड़ती थीं लेकिन फिर भी वह हमेशा हँसमुख और उदार रहता था। मस्त और आवारा लोगों से, जो लंदन के बेशुमार शराबखानों में काफी संख्या में पाये जाते हैं, उसकी काफी दोस्ती थी। चरित्रहीन औरतें, ठग, गिरहकट, बदमाश उससे अपने दिल की बात कहने में नहीं हिचकते थे, उसकी खातिर करते थे, जरूरत पड़ने पर उसे कर्ज भी दे देते थे। वह बार-बार परीक्षाओं में असफल होता था लेकिन उसे इसका ग़म नहीं था। उसके पिता भी जो स्वयं एक डाक्टर थे, उस पर नाराज तो होते थे, डाँट भी देते थे लेकिन उससे कभी ज्यादा क्रुद्ध नहीं हो पाते थे। इतना प्यारा था ग्रिफ़िथ्स का व्यक्तित्व—इतना स्नेहपूर्ण और आकर्षक!

फ़िलिप ग्रिफ़िथ्स का बहुत आदर करता था। ग्रिफ़िथ्स में ऐसा कुछ था जिसकी फ़िलिप अपने अन्दर कमी महसूस करता था। बीमारी खत्म होने के समय तक दोनों में प्रगाढ़ मैत्री हो गयी थी। फ़िलिप ग्रिफ़िथ्प को अक्सर शराबखाने में ले जाता था जहाँ फ़िलिप का मित्र लॉसन और शेयरों का दलाल मैकलिस्टर बैठा करते थे। लॉसन ने ग्रिफ़िथ्स को बहुत पसन्द किया और उसका चित्र बनाने की इच्छा भी प्रकट की। बातों-बातों में मैकलिस्टर अक्सर इस बात

की चर्चा किया करता था कि सट्टे से कितना रुपया पैदा किया जा सकता है। फ़िलिप को यह नया व्यापार बहुत अच्छा लगा जिसमें बात की बात में बड़ी-बड़ी रकमें कमायी जा सकती थीं। दूसरे, इधर फ़िलिप का खर्च भी बहुत बढ़ गया था। यदि सट्टे से वह कुछ रुपया कमा सके तो बस, क्या कहना!

'देखो अब आगे अगर अच्छे शेयर बिके तो तुम्हें बताऊँगा,' मैकालिस्टर ने फ़िलिप की उत्सुकता देखकर कहा।

फ़िलिप को इस कल्पना से ही बहुत सुख पहुँचता कि वह इस प्रकार मुफ्त में चालीस-पचास पाउंड कमा सकेगा। तब तो वह नोरा को 'फ़र' का एक कोट भी उपहार के रूप में भेंट कर सकेगा। उसने एक दूकान पर ऐसा एक कोट पसन्द भी कर लिया था। मुफ़्त में इतना धन कमाने का स्वप्न सच बहुत सुहवाना लगता था।

११

एक दिन जब फ़िलिप अस्पताल से अपने कमरे में कपड़े बदलने के लिए लौटा तो मकान मालकिन ने सूचना दी—

'आप से मिलने के लिए एक महिला इन्तजार कर रही है।'

फ़िलिप को आश्चर्य हुआ नोरा ही हो सकती थी—लेकिन नोरा के यहाँ तो वह स्वयं चाय पीने जा ही रहा था। यह यहाँ क्या करने आयी है इस समय?

फ़िलिप कमरे में आया। उस औरत को देखकर वह अचम्भे में एक कदम पीछे हट गया। वह मिलड्रेड थी। फ़िलिप को देखते ही वह एकदम से उठ पड़ी। वह कुछ न बोली। फ़िलिप आश्चर्य में कह पड़ा—

'तुम हो! आखिर तुम चाहती क्या हो?'

मिलड्रेड ने कोई उत्तर नहीं दिया। वह रो पड़ी। फ़िलिप का मन

हुआ कि वह कमरे से निकलकर भाग जाय। लेकिन मिलड्रेड की मुद्रा में बहुत दीनता थी।

'मैं तो सोचता था कि अब तुम्हें शायद ही कभी देख सकूँ!'

'अच्छा होता कि मैं मर गयी होती।' मिलड्रेड ने सिसकते हुए उत्तर दिया।

फ़िलिप जहाँ खड़ा था वहीं खड़ा रहा। वह अपने दिल में उठते हुए भावनाओं के ज्वार पर काबू पाने का प्रयत्न कर रहा था।

'आखिर तुम्हें हुआ क्या है?'

'मेरे पति ने मुझे छोड़ दिया।'

फ़िलिप का दिल मचल उठा। उसे तत्काल इस बात का ज्ञान हुआ कि वह मिलड्रेड से अब भी उतना ही प्रेम करता है। आज वह उसके सामने निस्सहाय, निराश्रय और शक्तिहीन खड़ी थी। फ़िलिप ने चाहा कि उसे अपनी बाहों में समेट कर आँसुओं से भीगे हुए उसके चेहरे पर चुम्बनों की बौछार कर दे। कितने दिन हो गये थे उससे बिछुड़े हुए!

'अच्छा आराम से बैठ तो जाओ!'

उसने एक गिलास में थोड़ा ह्विस्की-सोडा मिलाकर उसे दिया। मिलड्रेड उसे चुपचाप पी गयी। उसने अपनी बड़ी-बड़ी उदास आँखों से फ़िलिप की तरफ देखा। वह पहले से ज्यादा दुबली हो गयी थी।

'काश, तब मैंने तुमसे विवाह कर लिया होता', कुछ देर बाद मिलड्रेड बोली।

न जाने क्यों उसके इस वाक्य से फ़िलिप को बेइन्तहा खुशी हुई। फिलिप उससे दूर खड़ा न रह सका; उसने निकट आकर मिलड्रेड के कन्धे पर हाथ रख दिया।

'मुझे बहुत अफ़सोस है कि तुम इतनी तकलीफ में हो।'

मिलड्रेड ने अपना सिर फ़िलिप के सीने पर टेक दिया। वह फफक कर रोने लगी। फ़िलिप ने उसको कई बार चूमा। मिलड्रेड थोड़ी शान्त हुई।

'तुमने मेरे साथ हमेशा उपकार किया है, फ़िलिप ! तभी विपत्ति के समय मैं तुम्हारे पास आयी ।'

'अच्छा, विस्तार से बताओ कि हुआ क्या ?'

'मैं नहीं बता सकूँगी तुम्हें ! मुझे शरम आती है ।' मिलड्रेड फिर से रो पड़ी ।

'तुम मुझे सब कुछ बता सकती हो । मैं तुम्हें किसी बात के लिए दोषी नहीं समझूँगा ।'

मिलड्रेड ने अपनी दुखभरी कहानी फ़िलिप को सुनायी । बीच-बीच में वह इतनी जोर से सिसक पड़ती थी कि फ़िलिप उसकी बात भी ठीक तरह नहीं सुन पाता था ।

'पिछले सोमवार को मेरे पति मुझसे यह कहकर चले गये कि वह बृहस्पतिवार तक लौट आयेंगे लेकिन जब शुक्रवार तक भी वह न लौटे तब मैंने पत्र लिखा कि आखिर बात क्या है । पत्र का तो कोई उत्तर नहीं आया पर उनके वकील ने मुझे लिखा कि न केवल उनसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं बल्कि उन पर मेरा कोई अधिकार भी नहीं । अगर उन्हें ज्यादा सताऊँगी तो वह मेरे खिलाफ़ मुकदमा चला देंगे ।'

'लेकिन यह तो बकवास है । कोई पति अपनी पत्नी के साथ ऐसा व्यवहार नहीं कर सकता । क्या तुम लोगों में झगड़ा हुआ था ?'

'हाँ ! इतवार को उन्होंने मुझसे कहा था कि वह मुझसे तंग आ गये हैं । लेकिन ऐसा तो पहले भी कह दिया करते थे और मैं समझती थी कि इस बार भी वह लौट आयेंगे । वह डर गये थे इस बात से कि मेरे बच्चा होनेवाला था । मैं उनसे यह बात काफी दिनों तक छिपाये रही, लेकिन वह कहते थे कि यह सब मेरा ही दोष है । वह बहुत ही बुरे आदमी निकले । न उन्होंने मेरे लिए कुछ धन ही छोड़ा और ऊपर से मकान का किराया भी मेरे ऊपर ही छोड़ कर चल दिये ।'

फ़िलिप स्तम्भित था—सारी बात कुछ अजीब-सी थी ।

'क्या तुम घर अपने पति के पास लौटना पसन्द करोगी ? मैं तुम्हारे पति से मिलकर कुछ फैसला करने का प्रयत्न करूँगा ।'

'इसकी कोई सम्भावना नहीं । मैं उन्हें खूब जानती हूँ ।'

'फिर भी तुम मेरे वकील से तो मिल ही लो । वह तुम्हें इस विषय में अच्छी राय दे सकेंगे ।' फिलिप को याद आया कि मिलड्रेड के पास कुछ भी नहीं है—उसने उसे पाँच पाउंड दिये ।

'फ़िलिप, तुम बहुत अच्छे हो । क्या तुम मुझे अब भी उतना ही चाहते हो ?'

'बिलकुल ।'

मिलड्रेड ने अपने ओठ फ़िलिप की तरफ बढ़ा दिये—फिलिप ने उन्हें चूम लिया । मिलड्रेड के इस आत्मसमर्पण से जैसे उसका वह सारा पुराना दर्द और ग़म धुल गया ।

फिलिप इस बीच में नोरा के बारे में बिलकुल भूल ही गया था । आठ बजे एक तार आया—लिखा था—

'आये क्यों नहीं ? नोरा ।'

फ़िलिप की समझ में नहीं आया कि वह क्या करे । नोरा से मिलने की भावना मात्र से आज उसके दिल में ग्लानि भर गयी ।

नोरा की मुखाकृति की उसने कल्पना की और वह सोचने लगा कि उसका चेहरा कितना भद्दा और कुरूप है । उसे पत्र भी लिखने की तबीयत नहीं हुई, क्योंकि पत्र में उसे सम्बोधन में 'प्रिय नोरा' तो लिखना ही पड़ता और इतना भी अब उसे गवारा नहीं था । उसने तार से ही जवाब दे दिया ।

दूसरे दिन वह बेसब्री से मिलड्रेड की प्रतीक्षा कर रहा था । उसने चार बजे आने को कहा था ।

'वकील से मिली थी ?' मिलड्रेड के आते ही फिलिप ने प्रश्न किया ।

'हाँ ! उन्होंने भी यही कहा कि इसमें कुछ नहीं हो सकता !'

'लेकिन यह तो असम्भव है । उन्होंने कोई कारण तो बताया होगा ।'

मिलड्रेड ने फिलिप को वह पत्र वापिस कर दिया जो उसने कल अपने वकील को उसके बारे में दिया था।

'मैं तुम्हें कल बता नहीं सकी। मैं वकील से मिली ही नहीं थी। मिलर ने मुझसे विवाह ही नहीं किया था। उसके पत्नी और बच्चे अभी हैं। इसीलिए तो मैं अपनी चाची के पास नहीं जा सकी।'

फिलिप का हृदय पीड़ा और द्वेष से तिलमिला उठा। उसने अपनी काँपती हुई आवाज पर काबू पाने का प्रयत्न करते हुए कहा—'तुम उसके साथ गयी ही क्यों थीं?'

'कह नहीं सकती। मुझे पहले पता ही कब था कि वह शादीशुदा आदमी है! जब उसने मुझसे यह कहा था तो मैंने उसे खूब खरीखोटी सुनाई थी। लेकिन कुछ दिनों बाद वह फिर दूकान पर आया और उसने जब दूसरी बार मुझसे साथ चलने को कहा तो न जाने क्यों मैं उसे मना नहीं कर सकी!'

'क्या तुम उससे प्रेम करती थीं?'

'यह भी पता नहीं। उसने मुझसे कहा था कि वह मुझे खर्च के लिए हर हफ्ते सात पाउंड दिया करेगा—वह कहता था कि वह प्रति सप्ताह पन्द्रह पाउंड कमाता है। लेकिन वह सब झूठ था। फिर मुझे नौकरी करना और चाची का दुर्व्यवहार सहना भी असह्य हो गया था। इसलिए मैं उसकी बात मान गयी। कम से कम उस निराश जीवन से तो छुटकारा मिलने की आशा थी।'

फिलिप उसके पास से हट गया और उसने अपना मुँह हाथों से ढँक लिया।

'क्या तुम मुझसे नाराज हो गये?'

'नहीं! लेकिन मुझे बहुत पीड़ा हुई है।'

'क्यों?'

'क्योंकि मैं तुमसे बहुत प्रेम करता था। मैंने तुम्हारा प्यार पाने की हर कोशिश की थी और मैं समझने लगा था कि तुम में प्यार करने की शक्ति है ही नहीं। पीड़ा इस बात से हो रही है कि उसके लिए तुमने मेरे प्रेम को ठोकर मार दी। उससे तुम्हें ऐसा क्या मिला था?'

'मुझे भी बहुत दुख है, फिलिप! सच कहती हूँ कि बाद में मुझे बहुत पश्चाताप हुआ।'

मिलड्रेड उसके पास तक गयी और उसने उसका चुम्बन ले लिया—'तुम अब भी चाहो तो मैं तुम्हारी हर इच्छा पूरी कर सकती हूँ।'

फिलिप को लगा कि जैसे उसका दिल थम गया हो।

'तुम बहुत अच्छी हो पर अब मैं ऐसा नहीं कर सकता।'

'क्या तुम मुझसे अब प्रेम नहीं करते?'

'करता हूँ।'

'तो हम लोग फिर से अपने जीवन को सुखी क्यों न बनायें?'

फिलिप ने अपने को उसके आलिंगन से मुक्त कर लिया।

'नहीं—अब नहीं! वह आदमी अब हमेशा हमारे बीच में दीवाल बनकर खड़ा रहेगा। उसकी छाया तक हमें न मिलने देगी।'

'तुम मेरे बहुत अच्छे मित्र हो, फिलिप!'

वे लोग देर तक बातें करते रहे। अन्त में फिलिप ने मिलड्रेड को इस बात पर राजी कर लिया कि वे दोनों कहीं बाहर भोजन करके थियेटर जायँ। मिलड्रेड पहले ऐसा करने से झिझक रही थी। लगता था कि जैसे वह फिलिप का मन रखने के लिए चलने को तैयार हुई है। मिलड्रेड के चरित्र की यह नयी भावुकता फिलिप को बहुत अच्छी लगी।

मिलड्रेड को धन की आवश्यकता थी। वह मिलर से कुछ भी सहायता लेने को तैयार नहीं थी। फिलिप ने उसे फिर दस पाउंड दिये। फिलिप इतना खर्च नहीं कर सकता था। उसे पैसा बचाने की सख्त जरूरत थी। उसे अपनी सम्पत्ति को तब तक तो चलाना ही था जब तक कि वह डाक्टरी न पास कर ले। और फिर एकदम नौकरी भी तो नहीं मिल जायगी। वह मिलड्रेड से भी कुछ नहीं कह सकता था। कहीं वह उसे भी अनुदार और कंजूस न समझ ले। इस पर मिलड्रेड गर्भवती भी तो थी।

'कब तक बच्चा होने की सम्भावना है?'

'यही मार्च के शुरू में।'

'लगभग तीन माह है।'

प्रसव के समय तक के लिए मिलड्रेड के लिए मकान लेना ही था। फ़िलिप ने नजदीक ही दो कमरों का प्रबन्ध कर लिया।

इधर फ़िलिप यह भी सोचता रहा था कि नोरा उसे पत्र अवश्य लिखेगी। लेकिन नोरा बिल्कुल मौन रही। इससे फ़िलिप को चिढ़ लगी—शंका भी हुई। पिछले जून से वे दोनों लगभग रोज ही मिलते थे। यह तो अजीब-सा था कि वह एकाएक उससे बिना कारण मिलना बन्द कर दे। फ़िलिप को डर लगा कि कहीं नोरा ने अभाग्यवश उसे कभी मिलड्रेड के साथ तो नहीं देख लिया। वह नोरा को दुख नहीं देना चाहता था और उसने निश्चय किया कि वह उसके यहाँ जायगा। उसने नोरा को दोष भी दिया कि क्यों उसने आपस में घनिष्ठता इस हद तक बढ़ने दी। उसे इसकी कल्पनामात्र से घृणा हुई कि उनके सम्बन्ध अब भी उतने ही घनिष्ठ रहें।

लेकिन फिर भी फ़िलिप नोरा के घर गया। बहुत डरते हुए उसने मकान के दरवाजे पर दस्तक दी। फ़िलिप सोचता था कि वह नोरा के प्रति अत्याचार कर रहा है—उसे डर था कि नोरा नाराज अवश्य होगी। सबसे अच्छी बात तो यह होगी कि वह उससे साफ़-साफ़ कह दे कि मिलड्रेड लौट आयी है और वह अब भी मिलड्रेड से उतना ही प्रेम करता है। साथ ही साथ वह यह भी सोचता था कि नोरा को इससे कितना कष्ट होगा। वह जानता था कि नोरा उसे बहुत चाहती है। इस प्यार के लिए वह नोरा का उपकार मानता था। नोरा को दुख पहुँचाना उसे सर्वथा अनुचित लगा।

जब फ़िलिप कमरे में घुसा तो नोरा लिख रही थी। उसके कदमों की आहट सुनते ही वह खड़ी हो गयी।

'मैं समझ गयी थी कि तुम्हीं होगे। इतने दिन कहाँ छिपे रहे?'

वह फ़िलिप के पास मुस्कराती हुई आयी और उसके गले में बाँहें डाल दीं। उसे देख कर नोरा को बहुत प्रसन्नता हुई थी। फ़िलिप ने उसे चूम लिया। अपनी घबड़ाहट छिपाने के लिए उसने बहाना किया कि वह फौरन चाय पीना चाहता है। नोरा चाय बनाने की तैयारी करने लगी।

'मैं बहुत व्यस्त था आजकल', फ़िलिप ने बहाना किया।

नोरा आज बहुत खुश थी। उसे अपने एक छोटे से उपन्यास के पन्द्रह पाउंड मिले थे, जिसकी उसे बिल्कुल आशा नहीं थी। उसने प्रस्ताव रखा कि वे दोनों कहीं जाकर घूम आयें।

फ़िलिप सोचता था कि नोरा थोड़ा-बहुत नाराज अवश्य होगी, लेकिन वह तो बहुत ही प्रसन्न दिखाई दे रही थी। फ़िलिप का दिल बैठ गया। वह कैसे उसे कटु सत्य बता सकेगा?

नोरा ने फ़िलिप को ऐसे प्यार से चाय पिलायी मानो किसी बच्चे को खिला-पिला रही हो।

'मुझे कुछ अच्छी-अच्छी बातें बताओ!'

'बोलो, क्या बताऊँ?'

'कम से कम यही कि तुम मुझसे बहुत प्रेम करते हो।'

'यह तो तुम जानती ही हो।'

फ़िलिप को हिम्मत नहीं पड़ती थी कि वह उसे सही बात बता दे। आज तो कम से कम वह उससे उसका सुख और शांति नहीं ही छीनेगा। बाद में वह पत्र से उसे बता देगा—यह करना ज्यादा सरल भी होगा।

फ़िलिप ने नोरा को चूम लिया लेकिन उस समय भी उसे मिलड्रेड की और उसके पतले, जर्द ओठों की याद आ गयी। मिलड्रेड का ध्यान उसे हमेशा ही रहता था—अदृश्य, लेकिन छाया से भी ज्यादा ठोस।

'आज बहुत खामोश हो!' नोरा ने पूछा।

'तुम खुद इतना बोलती हो कि मैं बात करना भूलता जा रहा हूँ।'

जब नोरा बातें करती थी तो वह फ़िलिप को मिलड्रेड से कहीं ज्यादा अच्छी लगती थी—वह ज्यादा बुद्धिमान थी, विनोदप्रिय थी और उससे बात करने में ज्यादा सुख मिलता था। नोरा अच्छी थी, ईमानदार थी, साहसी थी और फ़िलिप को यह सोचते हुए दुख होता था कि मिलड्रेड में ऐसा कोई गुण नहीं है। बुद्धिमानी इसी में है कि वह नोरा को न छोड़े—वह उसे ज्यादा सुखी बना सकेगी। लेकिन फिर भी वह अपने पूरे व्यक्तित्व से मिलड्रेड को चाहता

था। प्यार किये जाने से प्यार करना ज़्यादा महत्वपूर्ण जो है! वह उन पतले, ठंडे, ज़र्द ओठों के एक चुम्बन पर हज़ार नोरा न्योछावर कर सकता था।

जब वह चलने लगा तो नोरा बोली—'कल तो आओगे न?'

'हाँ।'

फ़िलिप जानता था कि वह न आ सकेगा लेकिन इनकार करने का उसे साहस नहीं हुआ। उसने निश्चय कर लिया कि वह तार भेजकर मना कर देगा।

जो कमरे फ़िलिप ने मिलड्रेड के लिए किराये पर लिये थे, वे उसे बहुत पसन्द आये और दोपहर तक वह फ़िलिप के साथ अपना सामान लेकर वहाँ चली गयी। नोरा का ध्यान फ़िलिप को आया और वह अपने पर मन ही मन क्रुद्ध हो गया। वह मिलड्रेड के साथ बहुत खुश था। उसने मिलड्रेड का सामान खोल कर खुद ही ठिकाने से लगाया—भला इस नाज़ुक हालत में वह मिलड्रेड को काम कैसे करने देता! उसे बड़ा सुख और सन्तोष था कि उसी के कारण फिर से मिलड्रेड का घर बस रहा है और वह अब चैन से रह सकेगी। फ़िलिप को मिलड्रेड की छोटी से छोटी सेवा करने में खुशी होती थी। उसने मिलड्रेड के जूते खोलकर उसके पैरों में स्लीपर पहना दिये।

'मेरा इतना सब काम करके तुम मेरी आदत खराब कर रहे हो।'

मिलड्रेड बड़े प्यार से फ़िलिप के बालों को सहला रही थी। फ़िलिप ने उसके हाथों को चूम लिया :

'तुम्हारे यहाँ होने से मुझे बहुत सुख है, मिलड्रेड।'

थोड़ी देर बाद फ़िलिप ने मिलड्रेड से कहा—'मैंने चाय बना तो दी है लेकिन तुम्हारे साथ पी नहीं सकूँगा। आधे घंटे में लौट कर आता हूँ—मजबूरी है।'

फ़िलिप सोच रहा था कि अगर मिलड्रेड ने पूछ लिया कि वह कहाँ जा रहा है तो वह क्या उत्तर देगा? लेकिन मिलड्रेड ने कुछ न पूछा। शाम तो वह मिलड्रेड के साथ ही बितायेगा यह फ़िलिप ने निश्चय कर लिया था।

उसने सोचा था कि वह नोरा के यहाँ बहुत कम समय रुकेगा और उसी समय में वह नोरा को सब कुछ बता भी देगा।

'मैं बहुत थोड़ी देर ठहर सकूँगा—आज बहुत व्यस्त हूँ।' कमरे में घुसते ही फ़िलिप ने नोरा से कहा।

यह सुनते ही नोरा उदास हो गयी—'क्यों क्या बात है ?'

फ़िलिप ने बहाना किया कि अस्पताल में कोई उत्सव होने वाला था, जिसमें उसका जाना अनिवार्य था। फ़िलिप झूठ बोलने का आदी नहीं था। उसे नोरा पर क्रोध आया, जिसके कारण उसे झूठ बोलना पड़ रहा था।

'कोई बात नहीं! कल तो हम सारे दिन साथ रह सकेंगे', नोरा ने कहा।

फ़िलिप चकरा गया। कल इतवार था और उसने सोचा था कि वह सारे दिन मिलड्रेड के साथ बितायेगा।

'मुझे बहुत अफ़सोस है, लेकिन कल तो मैं बिल्कुल खाली नहीं हूँ।'

फ़िलिप जानता था कि इस बात से नोरा नाराज हो जायगी।

'लेकिन कल मैंने कुछ लोगों को खाना खाने बुलाया है। तुम्हें तो मैं हफ्ते भर पहले ही बता चुकी थी।'

'सच, मैं तो यह बिल्कुल ही भूल गया था। और अब आ भी नहीं सकूँगा। किसी और से आने के लिए कह दो न!'

'कल तुम क्या कर रहे हो ?'

'यह तुम मुझसे न पूछती तो अच्छा होता।' फ़िलिप कुछ-कुछ चिढ़ने लगा था।

'क्या तुम मुझे बताना नहीं चाहते ?'

'वह बात नहीं; लेकिन छोटी-छोटी बातों का उत्तर देना बुरा लगता है।'

नोरा ने अपने बढ़ते हुए क्रोध पर एक बार काबू पाने का प्रयत्न करते हुए कहा—

'मुझे निराश मत करो, फ़िलिप! कल तुम्हें जरूर आना है—मैं इस दिन की बहुत प्रतीक्षा कर रही थी।'

'मैं स्वयं भी आना बहुत पसन्द करता लेकिन यह बिलकुल असम्भव है।'

'क्या मेरे लिए एक बार भी अपने को काम से मुक्त न कर पाओगे?'

'नहीं, नोरा, ऐसा नहीं हो सकेगा,' फ़िलिप की आवाज में हल्की सी चिढ़ थी।

'अच्छा बताओ तो कि तुम्हें ऐसा कौन सा काम आ पड़ा है?'

'कल ग्रिफिथ्स की दो बहनें आ रही हैं—मैंने उनके साथ घूमने का वादा कर लिया है,' फ़िलिप ने जल्दी में यही बहाना गढ़ पाया।

'बस! ग्रिफिथ्स किसी और को साथ के लिए पकड़ लेगा।'

'नहीं नोरा। मैं उन लोगों को वचन दे चुका हूँ।'

'लेकिन पहले तो तुमने मुझसे वादा किया था।'

'अच्छा होगा कि तुम इतना जोर न दो।'

नोरा उबल पड़ी—'तुम बहाना बना रहे हो। तुम आना ही कब चाहते हो? मैं देख रही हूँ कि कुछ दिनों से तुम्हारा व्यवहार मेरी ओर से बदला हुआ है।'

'अच्छा तो मैं चल रहा हूँ।' फ़िलिप ने कुछ देर चुप रह कर कहा।

'तो कल नहीं आओगे?'

'नहीं।'

'अच्छा तो आप अब यहाँ कभी आने का कष्ट न करें।' अन्तिम वाक्य नोरा ने बहुत क्रोध में कहा था।

फ़िलिप कमरा छोड़कर चला गया। वह इस बात से बहुत खुश था कि नोरा का और उसका सम्बन्ध इतनी आसानी से खत्म हो गया। रास्ते में उसने मिलड्रेड के लिए कुछ फूल खरीदे।

शाम को मिलड्रेड के साथ भोजन करने में फ़िलिप को अत्यन्त सुख मिला और उस कमरे के वातावरण में उसे घर की सी शांति का अनुभव हुआ।

खाना खाने के बाद मिलड्रेड ने फ़िलिप से कहा—'कल मैं अपने एक मित्र के यहाँ जा रही हूँ और सारे दिन वहां रहूँगी।'

फ़िलिप का दिल बैठ गया। 'लेकिन कल के लिए तो मुझे एक निमंत्रण था जिसे मैंने अस्वीकार कर दिया। मैंने सोचा था कि कल का सारा दिन मैं तुम्हारे साथ ही बिताऊँगा।'

फ़िलिप ने सोचा कि वह अगर उससे सचमुच में प्रेम करती है तो कभी उसे छोड़कर नहीं जायगी। फ़िलिप को मालूम था कि ऐसी परिस्थिति में नोरा निमंत्रण अस्वीकार करके भी उसी के साथ रहना पसन्द करती।

'अब तो मुझे जाना ही चाहिये—मैंने बहुत दिन पहले उनसे वादा कर लिया था। अपना निमंत्रण अस्वीकार करके तुमने गलती की।'

फ़िलिप चुप था लेकिन मिलड्रैंड की उदासीनता से उसके दिल में कडुवाहट भर गयी थी।

सोमवार को फ़िलिप के पास नोरा का पत्र आया; लिखा था—

'प्रिय फ़िलिप,

मुझे दुःख है कि शनिवार को मैं तुमसे नाराज हो गयी थी। मुझे क्षमा कर दो। आशा है, शाम को अवश्य आओगे। मैं तुमसे प्रेम करती हूँ।

तुम्हारी ही
नोरा'

फ़िलिप चक्कर में पड़ गया। वह तो इस बात पर बहुत खुश था कि उसे नोरा के प्रेम से बहुत आसानी से मुक्ति मिल गयी थी। लेकिन इस पत्र को देखकर वह फिर झंझट में पड़ गया। ग्रिफिथ्स् की सलाह तो थी कि पत्र का उत्तर ही न दिया जाय लेकिन फ़िलिप ने बहुत सोच विचार कर उत्तर दिया। उसने स्पष्ट लिख दिया कि उनका वह पुराना सम्बन्ध अब बिल्कुल चल नहीं सकता; वह अब उसके यहाँ कभी नहीं जा सकेगा।

फ़िलिप ने नोरा को पत्र तो डाल दिया लेकिन उस पत्र से नोरा के दिल पर कितनी चोट लगेगी, इसकी कल्पना मात्र से फ़िलिप को बहुत दुख हुआ। फिर भी फ़िलिप को यह सन्तोष अवश्य था कि अब तो कम से कम उसे नोरा के प्यार के बन्धन से मुक्ति मिल जायगी।

जब शाम को, हर दिन की भाँति, फ़िलिप अपने कमरे में कपड़े बदलने पहुँचा तो उसने वहाँ नोरा को देखा।

'आधे घंटे से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हूँ। क्या अन्दर चली आऊँ ?'

फ़िलिप को लगा कि वह शरम और घबराहट से जमीन में गढ़ जाय। नोरा की आवाज में क्रोध की तनिक भी झलक नहीं थी—वह ऐसी प्रसन्न दिखाई दे रही थी कि मानो उनमें कभी झगड़ा हुआ ही नहीं।

'हाँ-हाँ ! अवश्य।' फ़िलिप ने चेहरे पर मुस्कराहट लाने की चेष्टा करते हुए कहा।

कमरे में आते ही नोरा उलहना देते हुए बोली 'तुम बड़े खराब हो। ऐसा बुरा पत्र क्यों लिखा तुमने मुझे ? अगर मैं उसे सच मान लेती तो जानते हो मेरी हालत कितनी खराब होती ?'

फ़िलिप ने गम्भीरता से उत्तर दिया—'जो कुछ मैंने लिखा था, वह सत्य तो था ही।'

'बेकार बातें मत करो, फ़िलिप ! उस दिन के व्यवहार के लिए मैंने लिख-कर तुम से क्षमा माँग ली, अब स्वयं आयी हूँ माफी मांगने', नोरा फ़िलिप के पास गयी और उसने अपने हाथ उसकी तरफ बढ़ा दिये—'अब तो माफ कर दो !'

फ़िलिप ने उसका हाथ तो थाम लिया लेकिन वह उससे आँखें नहीं मिला सका—'अब समय निकल गया, नोरा।'

'क्या अब तुम मुझसे बिल्कुल प्रेम नहीं करते ?'

'नहीं, नोरा।'

'तो तुम अपने आपको मुझसे छुड़ाने का बहाना ढूँढ़ रहे थे।'

फ़िलिप ने उत्तर नहीं दिया। नोरा रो रही थी।

'तुम्हें दुख पहुँचाते हुए मुझे भी बहुत पीड़ा हो रही है लेकिन मैं कुछ भी करने में असमर्थ हूँ।'

नोरा बैठी रोती रही। उसे मालूम था कि फ़िलिप ने कभी उससे उतना प्रेम नहीं किया जितना वह फ़िलिप से करती थी। लेकिन फ़िलिप ने उसके उदास

और वीरान जीवन में फिर से उत्साह और हर्ष की लहरें दौड़ा दी थीं। ऐसे मधुर अनुभव का लुप्त हो जाना किसे असह्य न होता। बाँध तोड़कर आँसू बरस पड़े। लेकिन नोरा का जीवन तो संघर्षों में बीता था; वह भावुकता में कुछ देर के लिए खो तो सकती थी लेकिन हमेशा के लिए उसमें डूब नहीं सकती थी। जो दुख उठाते हैं, उन्हें मन को समझाना भी आता है।

'मुझे बहुत अफ़सोस है कि मैं कुछ देर को यों मचल गयी। जो कुछ हुआ उसकी मुझे बिल्कुल आशा नहीं थी।'

'मुझे भी बहुत खेद है, नोरा! जो कुछ तुमने मेरे हित में किया उसके लिए मैं सदैव कृतज्ञ रहूँगा।'

नोरा उठ खड़ी हुई। वह वहाँ से चली जाना चाहती थी। लेकिन जाते-जाते वह फ़िलिप की तरफ गौर से देख कर बोली :—

'लेकिन यह सब हुआ क्यों?'

फ़िलिप ने एकदम निश्चय कर लिया कि उसे नोरा को सब कुछ बता ही देना चाहिए—

'मैं चाहता हूँ कि तुम यह अच्छी तरह समझ लो कि जो कुछ हुआ है उसमें मेरा बिल्कुल वश नहीं। मिलड्रेड फिर से मेरे जीवन में आ गयी है।'

'तो तुमने मुझे पहले ही यह क्यों नहीं बताया? इतना जानने का तो अधिकार मुझे था ही।'

'मुझे डर लगता था!'

जब नोरा गाड़ी में बैठकर लौटने लगी तो फ़िलिप ने कहा—'चलो, मैं तुम्हें छोड़ आऊँ।'

रास्ते भर दोनों में बात नहीं हुई। जब नोरा के घर पर वे दोनों उतरे तो फ़िलिप ने कहा—'मुझे क्षमा कर देना, नोरा!' फ़िलिप ने देखा कि उसकी आँखों में आँसू चमक रहे हैं लेकिन मुस्कराते हुए नोरा ने उत्तर दिया—

मैं तुम्हें दोष नहीं देती। तुम मेरी इतनी चिन्ता मत करना, मैं ठीक हो जाऊँगी।' और नोरा अपने घर में घुस गयी।

फ़िलिप गाड़ी का भाड़ा चुकाकर मिलड्रेड के मकान की तरफ चल पड़ा।

उसका दिल बहुत उदास था—वह अपने आप से नाराज होना चाहता था—अपने आप को धिक्कारना चाहता था। मगर क्यों? वह समझ नहीं सका कि उन परिस्थितियों में वह और कर ही क्या सकता था। रास्ते में उसे ध्यान आया कि मिलड्रेड को अंगूर बहुत अच्छे लगते हैं। फलवाले की दूकान से उसने कुछ अंगूर खरीद लिये। मिलड्रेड की छोटी से छोटी इच्छा पूरी करने में उसे बहुत सुख मिलता था।

तीन महीने के बाद एक अस्पताल में मिलड्रेड ने एक लड़की को जन्म दिया। फ़िलिप उसे देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। लेकिन न जाने क्यों वह इस बात से झिझक रहा था कि नर्स बराबर में खड़ी हुई है। अस्पताल के लोगों को तो यह मालूम था कि मिलड्रेड का पति भारतवर्ष में नौकरी कर रहा है।

थोड़ी देर में नर्स कुछ देर को चली गयी और फ़िलिप ने झुककर मिलड्रेड को चूम लिया।

'मैं बहुत खुश हूँ कि सब कुछ ठीक से हो गया', बड़े प्यार से फ़िलिप बोला।

मिलड्रेड ने लेटे ही अपने हाथ फ़िलिप के गले में डाल दिये—'तुम बहुत अच्छे हो, फिल!'

'अब मुझे लगता है कि जैसे अब तुम, सच, मेरी हो गयी हो। मैं इस बात का न जाने कब से इन्तजार कर रहा था।'

नर्स के आने की आहट हुई और फ़िलिप सँभल कर बैठ गया।

तीन सप्ताह बाद मिलड्रेड और उसकी बच्ची कुछ दिनों के लिए ब्राइटन रहने चले गये। फ़िलिप उन्हें पहुँचाने स्टेशन तक गया। मिलड्रेड अब बिल्कुल स्वस्थ हो गयी थी। फ़िलिप को इस बात पर आश्चर्य और दुख दोनों होते थे कि मिलड्रेड अपने बच्चे के प्रति बिल्कुल उदासीन है। यह नहीं था कि वह उसकी ठीक से देख-भाल न करती हो लेकिन अपनी लड़की से मिलड्रेड को कोई खास प्रेम नहीं था। फ़िलिप पर वह हँसती—'तुम तो उसका इतना लाड़ करते हो मानो तुम्हीं उसके पिता हो!'

चलते समय फ़िलिप ने कहा—'वहाँ जाकर पत्र अवश्य डालना। मैं तुम्हारी प्रतीक्षा बेसब्री से करूँगा।'

'देखो परीक्षा में जरूर उत्तीर्ण हो जाना।' मिलड्रेड ने चलते-चलते कहा।

परीक्षा में अब केवल दस दिन रह गये थे। उसने खूब कसकर परिश्रम किया। वह उत्तीर्ण अवश्य होना चाहता था क्योंकि पिछले दिनों में उसने बहुत धन खर्च कर दिया था—विशेषतः पिछले चार महीने में तो मानों रुपये बहाये थे उसने। फिर इस परीक्षा में पास हो जाने से अगले वर्ष से उसकी पढ़ाई ज्यादा मनोरंजक हो जायेगी। वह यह भी नहीं चाहता था कि मिलड्रेड को यह मालूम पड़े कि वह परीक्षा में असफल रहा।

परीक्षा में वह उत्तीर्ण हो गया। हर्ष से वह झूम उठा, उसने मिलड्रेड को फ़ौरन तार से सूचना दी। अगले दिन उसने एक पत्र भी लिखा और उसके साथ पाँच पाउंड का एक नोट रख दिया। पत्र में उसने मिलड्रेड से पूछा कि क्या वह एक-दो दिन के लिए ब्राइटन आ सकता है? मिलड्रेड का उत्तर आया। फ़िलिप बड़ी अधीरता से प्रतीक्षा कर रहा था इस उत्तर की। मिलड्रेड ने लिखा था कि वह इतवार को एक दिन के लिए आ सकता है।

इतवार को फ़िलिप ब्राइटन चला गया। वह बहुत खुश था। उस दिन मौसम भी तो बहुत सुहाना था। मिलड्रेड प्लेटफ़ार्म पर फ़िलिप का इन्तजार कर रही थी। अपने नये कपड़ों में वह बहुत सुन्दर और स्वस्थ लग रही थी। फ़िलिप के दिल में प्यार नाच रहा था—पागल बच्चे की तरह!

फ़िलिप ने मिलड्रेड को ग्रिफ़िथ्स् के बारे में बहुत कुछ बताया। ग्रिफ़िथ्स के रूप का, गुणों का फिलिप ने खूब बखान किया। उसने बताया कि ग्रिफ़िथ्स कितना उदार, सहृदय और विनोदप्रिय है; जब उन दोनों में मैत्री भी नहीं थी, तब भी ग्रिफ़िथ्स ने बीमारी में उसकी दिल से सेवा-सुश्रुषा की थी।

'मैं सुन्दर आदमियों को बिल्कुल पसन्द नहीं करती, मिलड्रेड ने कहा। यह सब सुनते समय उसके चेहरे पर उदासीनता के भाव थे लेकिन उसके दिल में इस नये व्यक्ति के बारे में अधिक जानने की प्रबल जिज्ञासा थी।

'वह ऐसा व्यक्ति है, जिसे पसन्द करना ही पड़ता है। वह तुमसे मिलना भी चाहता है। मैंने उससे भी तुम्हारे विषय में बहुत सी बातें की हैं।'

'क्या कहा है, तुमने उससे मेरे बारे में ?'

केवल ग्रिफिथ्स ही एक व्यक्ति था जिससे फ़िलिप ने मिलड्रेड और उसके लिए अपने प्रेम की बहुत-सी बातें बतायी थीं। बार-बार फ़िलिप ने ग्रिफिथ्स को मिलड्रेड के व्यक्तित्व के बारे में बताया था।

दिन भर ब्राइटन में रहने के बाद रात को फ़िलिप लन्दन वापस जाने के लिए स्टेशन लौटा। हाथ में हाथ डाले वे दोनों साथ चल रहे थे। उसने कहा कि वह मिलड्रेड के साथ कुछ दिनों के लिए फ्रांस घूमने जाना चाहता है। फ़िलिप ने पेरिस में होटल में रहने का प्रबन्ध भी कर लिया था।

'पेरिस चलोगी न ?' फ़िलिप ने पूछा।

'हाँ !' मिलड्रेड ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

'तुम्हें मालूम नहीं मैं किस बेसब्री से पेरिस चलने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ ! पता नहीं बाकी दिन कैसे कटेंगे। मुझे कभी-कभी शंका होती है कि कहीं ऐसा कुछ न हो जाय जिसके कारण हम लोग न जा सकें। मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ; तुम्हें कैसे बताऊँ !'

वे स्टेशन पहुँच गये थे। गाड़ी छूटने ही वाली थी। फ़िलिप जल्दी से मिलड्रेड का चुम्बन लेकर गाड़ी में बैठ गया।

अगले शनिवार को मिलड्रेड ब्राइटन से लौट आयी उस दिन शाम को वे दोनों अकेले ही रहे। फ़िलिप अपने सुख को किसी से बँटाना नहीं चाहता था। मिलड्रेड भी बहुत खुश थी। रात को जब वे थियेटर से लौट रहे थे तो मिलड्रेड फ़िलिप से बिल्कुल सटी हुई बैठी थी।

'तुम बहुत खुश हो न ?'

मिलड्रेड ने कोई उत्तर नहीं दिया—फ़िलिप का हाथ अपने हाथों में लेकर हल्के से दबा लिया। फ़िलिप को महान सुख का अनुभव हुआ।

'कल मैंने ग्रिफिथ्स को खाने के लिए निमंत्रित किया है।'

'यह तुमने बहुत अच्छा किया। मैं भी उससे मिलना चाहती थी।'

फ़िलिप मिलड्रेड और ग्रिफिथ्स, दोनों को बहुत चाहता था और उसकी इच्छा थी कि दोनों भी एक दूसरे को अच्छी तरह जान लें।

इतवार की रात को फ़िलिप और मिलड्रेड होटल में भोजन करने पहुँचे। ग्रिफिथ्स अभी तक आया नहीं था—उन्हें उसकी कुछ देर प्रतीक्षा करनी पड़ी।

'अपनी अगणित प्रेमिकाओं में से किसी के पास बैठा मौज कर रहा होगा। उसे समय का कब ध्यान रहता है!' फ़िलिप ने कहा।

लेकिन कुछ ही देर में ग्रिफिथ्स आ गया। देखने में बड़ा सुन्दर लग रहा था—लम्बा इकहरा बदन, घुँघराले बाल, नीली आँखें, लाल ओंठ। सिर का गर्वीला उठान विजेताओं जैसा मालूम पड़ता था। फ़िलिप ने देखा कि ग्रिफिथ्स के आकर्षण का मिलड्रेड पर काफी प्रभाव पड़ा है। उसने एक अजीब से सन्तोष का अनुभव किया।

ग्रिफिथ्स ने मुस्करा कर अभिवादन किया। मिलड्रेड से हाथ मिलाते हुए उसने कहा—'मैंने आपकी बहुत तारीफ़ सुनी है।'

'उससे ज्यादा मैंने आपकी प्रशंसा सुनी थी,' मिलड्रेड ने उत्तर दिया।

'मैं तुम दोनों को एक दूसरे के बारे में बता चुका हूँ कि अब तुम्हारी मित्रता आसानी से और गहरी हो जानी चाहिये।' फ़िलिप ने कहा। मिलड्रेड ग्रिफिथ्स के खूबसूरत दाँतों की तरफ़ देख रही थी—तन्मयता से।

ग्रिफिथ्स बहुत खुश था। वह डाक्टरी की अन्तिम परीक्षा पास कर चुका था और एक अस्पताल में हाउस सर्जन भी नियुक्त हो गया। मई के शुरू में उसे नौकरी पर जाना था। थोड़े दिनों के लिए वह छुट्टी मनाने अपने घर भी जा रहा था। लंदन में उसका यह अन्तिम सप्ताह था। इस अन्तिम सप्ताह में वह खूब मौज करना चाहता था। इधर-उधर की गप्पें मारने में ग्रिफिथ्स बहुत कुशल था। ऐसी ही बातें वह आज भी कर रहा था। उसकी बातों में कोई तत्व नहीं था लेकिन उसके वार्त्तालाप का ढंग इतना आकर्षक था कि उन बातों में भी सुननेवाले को मजा आ जाता था।

मिलड्रेड को फ़िलिप ने इतना सजीव और खुश कभी नहीं देखा था।

वह आज खूब हँस रही थी और उसे इतना सुखी देखकर फ़िलिप भी बहुत प्रसन्न था।

बातों के बीच में ग्रिफ़िथ्स ने मिलड्रेड से कहा—'आपको मैं किस तरह सम्बोधन किया करूँ? मिसेज मिलर कहना तो ठीक नहीं है और फ़िलिप आपको केवल 'मिलड्रेड' ही कहता है।'

'तो वह तुम्हें जान से तो मार नहीं देगी अगर तुम भी उसे 'मिलड्रेड' कह कर पुकारो।' फ़िलिप बोला।

'तब तो इन्हें भी मुझे 'हैरी' कहना पड़ेगा।'

फ़िलिप अधिकतर बातचीत में खामोश रहा—वह सोच रहा था कि दूसरों को सुखी देखकर कितना हर्ष होता है। उन तीनों में से कोई शराब पीने का आदी नहीं था, लेकिन बातों-बातों में आज वे काफी पी गये थे। फिर क्या था, ग्रिफ़िथ्स ने वह-वह किस्से और चुटकुले सुनाये कि मिलड्रेड हँसते-हँसते लोट-पोट हो गयी और फ़िलिप को भी बड़ा आनन्द आया। उन लोगों को आश्चर्य हुआ जब रेस्तोराँ बन्द होने का समय भी आ गया और बत्तियाँ बुझने लगीं। वहाँ से उठते मिलड्रेड ने ग्रिफ़िथ्स से कहा—'कल मैं चाय पीने फ़िलिप के यहाँ आ रही हूँ—तुम भी आना।'

'अच्छा!' ग्रिफ़िथ्स ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

लौटते वक्त सारे रास्ते मिलड्रेड ग्रिफ़िथ्स के ही बारे में बातें करती रही।

'मुझे बहुत खुशी है कि तुमने उसे इतना पसन्द किया। पहले तो उससे मिलने को भी उत्सुक नहीं थीं,' फ़िलिप ने कहा।

'वह तुम्हारा बहुत अच्छा दोस्त है, फ़िलिप,' मिलड्रेड ने अपने ओंठ फ़िलिप की ओर चुम्बन के लिए बढ़ा दिये। ऐसा वह बहुत कम करती थी।

'आज की शाम बहुत खुशी से कटी, फ़िलिप, इसके लिए धन्यवाद!'

'हिश्त!' फ़िलिप भी बहुत ज्यादा सुखी था आज।

अपने मकान पर गाड़ी से उतरते हुए मिलड्रेड ने हँसते हुए कहा—

'हैरी से कह देना कि वह मुझे बहुत अच्छा लगा।'

'अच्छा!' फ़िलिप हँस दिया—'गुड नाइट!'

अगले दिन जब फ़िलिप और मिलड्रेड कमरे में चाय पी रहे थे तो ग्रिफ़िथ्स भी आ गया और आराम से एक कुर्सी पर बैठ गया। मिलड्रेड की और उसकी बातें फिर शुरू हो गयीं, फ़िलिप अधिकतर मौन ही रहा। लेकिन इस पर भी फ़िलिप सुखी था। वह उन दोनों से बहुत प्रेम करता था और इसलिए अगर मिलड्रेड और ग्रिफ़िथ्स भी एक दूसरे से इतने आकर्षित थे तो यह तो बहुत अच्छी बात थी। उसे इस बात की बिल्कुल चिंता नहीं थी कि मिलड्रेड का सारा ध्यान ग्रिफ़िथ्स की तरफ ही है—उसके हृदय में ईर्ष्या का कोई भी भाव नहीं पैदा हुआ। उसकी मनोस्थिति उस पति की तरह थी जिसे अपनी पत्नी के प्रेम पर पूरा भरोसा होता है और उसके किसी अजनबी से हँसकर बात करने का बुरा नहीं मानता।

लेकिन थोड़ी देर में घड़ी की तरफ देखकर फ़िलिप ने कहा—'अब चलो, मिलड्रेड, कहीं भोजन करने चला जाय। काफ़ी देर हो गई।'

जरा रुककर ग्रिफ़िथ्स बोला—'अच्छा, अब मुझे भी जाना चाहिये। काफ़ी देर हो गई है।'

मिलड्रेड ने प्रश्न किया—'क्यों? आज रात तुम्हें कोई काम है?'

'नहीं तो!' ग्रिफ़िथ्स ने कहा।

फ़िलिप को यह कुछ बुरा लगा।

'तो तुम हमारे साथ ही क्यों नहीं भोजन करते शाम को?' मिलड्रेड बोली।

ग्रिफ़िथ्स ने फ़िलिप की ओर देखा। फ़िलिप उसकी तरफ बड़ी गम्भीरता से घूर रहा था।

'कल रात ही तो मैंने तुम लोगों के साथ खाना खाया था। मेरे आने से तुम लोगों को बाधा मालूम होगी।'

'नहीं-नहीं!' मिलड्रेड ने जोर देते हुए कहा—'फ़िलिप, इनसे चलने को कहो न!'

'अगर यह चलना चाहें तो अवश्य चलें!' फ़िलिप ने कहा।

'अच्छा ! मैं जरा कपड़े बदल लूँ !' यह कहकर ग्रिफिथ्स कपड़े बदलने चला गया।

'तुमने उसे खाने का निमंत्रण क्यों दिया?' फ़िलिप ने जरा झुंझलाते हुए कहा।

'मैं क्या करती ? जब उन्होंने कहा कि वह शाम को बिल्कुल मुक्त है तब भी उन्हें निमंत्रित न करना कितना भद्दा लगता।'

'ओह ! मगर तुम्हीं ने तो प्रश्न किया था कि वह रात खाली है या नहीं !' फ़िलिप ने चिढ़कर कहा। शाम को फ़िलिप मिलड्रेड के साथ अकेले ही रहना चाहता था। मिलड्रेड ने ग्रिफ़िथ्स का झगड़ा न जाने क्यों लगा दिया।

मिलड्रेड ने जरा सख्ती से कहा—'मुझे भी तो कुछ मनोरंजन चाहिये। तुम्हारे साथ अकेले हमेशा रह कर भी तो मैं थक जाती हूँ।'

ग्रिफिथ्स नीचे उतर रहा था। फ़िलिप अपने कमरे में तैयार होने चला गया। वे लोग पास के एक इतालियन रेस्तरां में भोजन करने गये। क्रोध के कारण फ़िलिप मौन रहा पर उसे लगा कि उसके क्रोध का प्रभाव बुरा पड़ेगा। उसने अपनी नाराजी छिपाने का प्रयत्न किया। अपने दर्द को भुलाने के लिए उसने काफी शराब पी और बातें भी काफी कीं। मिलड्रेड भी उसे खुश करने की कोशिश कर रही थी मानो जो कुछ वह पहले कह चुकी थी उसका उसे पछतावा हो। फिलिप ने सोचा कि सम्भवतः उसकी वह ईर्ष्या केवल एक भ्रम और मूर्खता थी।

भोजन के बाद वे एक नाटक देखने गये। मिलड्रेड फ़िलिप का हाथ पकड़े हुए थी और इससे फ़िलिप को बहुत सुख मिल रहा था। लेकिन एकदम से फिलिप को लगा कि मिलड्रेड का दूसरा हाथ ग्रिफिथ्स के हाथों में है और वह भयंकर पीड़ा और ईर्ष्या से तिलमिला उठा। शायद वे एक दूसरे से प्रेम करने लगे हैं ? वह नाटक में कुछ भी नहीं देख सका। दिल में उठती हुई शङ्का, क्रोध, ईर्ष्या और दुख ने फ़िलिप को जैसे अन्धा बना दिया था। बड़े प्रयत्न से वह किसी तरह दिल की बात छिपाये रहा। अचानक उसकी इच्छा हुई कि वह

अपने को और ज्यादा सताये और दुख पहुँचाये। प्यास का बहाना करके वह बाहर चला आया। वह उन दोनों को अकेला छोड़ देना चाहता था।

'मैं भी चलूँगा। मुझे भी प्यास लगी है,' ग्रिफिथ्स ने कहा।

'नहीं तुम बैठो—तब तक मिलड्रेड से बातें करो! मैं अभी आया।'

पता नहीं फ़िलिप ने ऐसा क्यों कहा? उन दोनों को अकेला छोड़कर फ़िलिप अपना दुख असह्य बनाना चाहता था।

फ़िलिप 'बार' में नहीं गया। वह एक ऐसी जगह छिप गया जहाँ से उन दोनों को देख सके। दोनों में से कोई स्टेज की तरफ नहीं देख रहा था। वे एक दूसरे की आँखों में मुस्करा रहे थे। ग्रिफिथ्स कुछ कह रहा था और मिलड्रेड जैसे उसके एक-एक अक्षर को बड़े ध्यान से सुन रही थी। फ़िलिप के सिर में बड़े जोर की पीड़ा हुई। वह वहाँ खामोश खड़ा रहा। वह जानता था कि अगर वह लौटेगा तो उनकी बातों में बाधा पड़ेगी। वे लोग उसके बिना बहुत खुश थे और वह पीड़ा से तड़प रहा था—बुरी तरह तड़प रहा था। समय बीता पर वह लौटा नहीं। यह निश्चित था कि दोनों में से किसी को उसकी अनुपस्थिति नहीं खली होगी। और भोजन और थियेटर के पैसे भी उसी ने खर्च किये थे! वे लोग उसे कितना बेवकूफ बना रहे थे!

फ़िलिप के जी में आया कि उन्हें वहीं छोड़कर घर लौट जाय लेकिन उसकी हैट और ओवरकोट तो वहीं पड़ा था और फिर ऐसा करने पर बाद में उसे उन लोगों को बहुत कुछ समझाना पड़ता। जब वह लौटा तो उसे लगा कि जैसे मिलड्रेड की आँखों में चिढ़ की झलक हो।

'बड़ी देर में लौटे।' ग्रिफिथ्स ने मुस्कराते हुए कहा।

'मुझे कुछ परिचित व्यक्ति मिल गये थे और उनसे बातें करते देर हो गयी।'

थोड़ी देर में वे लोग उठ खड़े हुए। ग्रिफिथ्स ने मिलड्रेड से कहा—'चलो हम लोग दोनों तुम्हें घर छोड़ देंगे।'

फ़िलिप को लगा कि जैसे मिलड्रेड ने ही स्वयं उसके पीछे यह जाल रचा होगा, जिससे उस रात को वह फ़िलिप के साथ अकेली न रह सके, कुछ देर

को भी। रास्ते में गाड़ी में फ़िलिप को लगा कि ग्रिफ़िथ्स और मिलड्रेड एक दूसरे का हाथ थामे हुए हैं। फ़िलिप सोच रहा था कि उन लोगों ने अकेले में मिलने की कोई चाल अवश्य सोची होगी। वह भी कितना मूर्ख था कि उसने इन लोगों को जानकर भी अकेला छोड़ दिया था।

मिलड्रेड को उसके घर छोड़कर ग्रिफ़िथ्स और फ़िलिप उसी गाड़ी में अपने घर की तरफ़ चले। रास्ते में ग्रिफ़िथ्स ने खूब बातें कीं लेकिन फ़िलिप मौन रहा। एकाएक फ़िलिप ग्रिफ़िथ्स से पूछ बैठा—'क्या तुम मिलड्रेड से प्रेम करते हो?'

'मैं! अरे वाह दोस्त, बिल्कुल नहीं! क्या यही बात तुम इतनी देर से सोच रहे थे?' ग्रिफ़िथ्स ने हँसते हुए कहा।

फ़िलिप जानता था कि ग्रिफ़िथ्स झूठ बोल रहा है, लेकिन वह ग्रिफ़िथ्स से यह मनवा भी तो नहीं सकता था कि वह मिलड्रेड से प्रेम करता है। फ़िलिप को एकदम ऐसा लगा कि जैसे वह बहुत उदास और कमजोर हो गया है।

'तुम्हें कोई अन्तर नहीं पड़ता, हैरी। तुम तो कई लड़कियों से प्रेम करते हो। लेकिन उसे मुझसे मत छीनो। वह मेरी जिन्दगी है, मैं उसके बिना मर जाऊँगा।'

आँसुओं के भार से आवाज टूट गयी। उसे अपने से बहुत ग्लानि हो गयी थी।

'तुम जानते हो, मैं तुम्हें दुख नहीं पहुँचा सकता। मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ। मैं तो यों ही मजाक कर रहा था। अगर मालूम होता कि इससे तुम इतने दुखी हो जाओगे तो यह भी न करता।' ग्रिफ़िथ्स ने कहा।

'क्या यह सच है?' फ़िलिप ने पूछा।

'मैं तुम्हें वचन देता हूँ, मुझे मिलड्रेड की रत्ती भर परवाह नहीं है।'

फ़िलिप ने सन्तोष की साँस ली। गाड़ी उनके घर के दरवाजे पर रुक गयी थी।

दूसरे दिन फ़िलिप बहुत खुश था। वह मिलड्रेड को ज्यादा परेशान नहीं

करना चाहता था इसलिए तय यह हुआ था कि सिर्फ शाम को वह उससे मिलेगा।

रात को भोजन के लिए चलते समय फ़िलिप ने मिलड्रेड से कहा—'अब तो पेरिस चलने के केवल तीन दिन रह गये हैं! ग्यारह बजे की गाड़ी से चल सकोगी न?'

'जैसा तुम चाहो!'

फ़िलिप सोच रहा था कि पेरिस में तो कम से कम मिलड्रेड उसकी अपनी ही होगी। वह भूखी आँखों से उसको निहार रहा था।

'कल रात तो हैरी से बड़े प्रेम से बातें हो रही थीं!'

'मैंने कहा था न तुमसे कि मैं उससे प्रेम करती हूँ', मिलड्रेड ने हँसते हुए उत्तर दिया।

'बस यही खैरियत है कि वह तुमसे जरा भी प्रेम नहीं करता।'

'तुम्हें कैसे मालूम?'

'मैंने उससे पूछा था!'

मिलड्रेड फ़िलिप को थोड़ी देर तक देखती रही। उसकी आँखों में एक हल्की सी चमक खेल गयी।

'क्या तुम उसका पत्र पढ़ना पसन्द करोगे जो मुझे आज सुबह ही मिला।'

यह कहते हुए मिलड्रेड ने फ़िलिप को एक खुला हुआ लिफाफा दे दिया। अन्दर ग्रिफिथ्स का ही पत्र था—आठ सफे का। उसमें लिखा था कि वह मिलड्रेड को जी जान से प्यार करता है। जब से उसने मिलड्रेड को देखा है, वह दीवाना हो गया है। लेकिन वह ऐसा नहीं चाहता, क्योंकि वह जानता है कि फ़िलिप भी उससे बहुत प्रेम करता है। लेकिन दिल पर उसका कोई काबू नहीं। उसने मिलड्रेड की बहुत प्रशंसा की थी। अन्त में उसने मिलड्रेड को इस बात के लिए धन्यवाद दिया था कि वह उसके साथ कल दोपहर को भोजन करने को तैयार थी। वह उसे देखने के लिए अधीर था।

फ़िलिप ने देखा कि पत्र कल रात को लिखा गया था।

पत्र पढ़ते समय फ़िलिप के दिल के अन्दर ही अन्दर पीड़ा तिलमिला रही

थी, लेकिन फ़िलिप ने मिलड्रेड को यह नहीं मालूम होने दिया कि उसे तनिक सा भी आश्चर्य हुआ है। मुस्कराते हुए उसने मिलड्रेड को पत्र लौटा दिया—

'कहो, तो आज दोपहर के खाने में आनन्द आया ?'

'हाँ। खूब !'

उसे लगा कि उसके हाथ काँप रहे हैं—उसने मेज के नीचे उन्हें छिपा लिया।

'देखो, ग्रिफ़िथ्स पर ज्यादा भरोसा मत करना उसके लिए प्रेम एक खेल है।'

'तुम यह जानते हुए भी कि मैं ग्रिफिथ्स से प्रेम करती हूँ, बहुत सावधान हो', कुछ देर बाद मिलड्रेड ने कहा।

'तो तुम क्या समझती थीं कि क्रोध और दुख में रोता, सिर पीटता ?'

'मैं तो समझती थी कि तुम मुझसे बहुत नाराज होगे।'

'आश्चर्य तो यही है कि मुझे तनिक-सा भी क्रोध नहीं है। यह तो होना ही था। तुम दोनों को मिलाना ही मेरी मूर्खता थी। फिर ग्रिफिथ्स मुझसे हर बात में ज्यादा आकर्षक है—सूरत-शक्ल में, बातचीत में। वह तुमसे ऐसी बातें कर सकता है जिससे तुम्हारा मनोरंजन हो।'

'पता नहीं इस बात से तुम्हारा क्या मतलब है लेकिन मैं उतनी मूर्खा नहीं हूँ, जितना तुम समझते हो। तुम क्या अपने आपको मुझसे ज्यादा ऊँचा और महान् समझते हो ?'

'मुझे अफ़सोस है कि तुम इतनी-सी बात से नाराज हो गयी। मैं तो केवल इस तरह से बात सुलझाने का प्रयत्न कर रहा था जिससे झगड़ा न बढ़े। तुम्हारा उससे आकर्षित होना तो स्वाभाविक ही था; मुझे तो इस बात का खेद है कि उसी ने तुमको उकसाया। उसे मालूम था कि मैं तुमसे कितना प्रेम करता हूँ। मुझसे वादा करके भी उसने तुम्हें पत्र लिखा; यह उसने बहुत अनुचित किया।'

'उसकी बुराई करके तुम मुझे उसके विरुद्ध भड़का नहीं सकते !' मिलड्रेड ने कहा।

फ़िलिप थोड़ी देर चुप रहा। उसके मस्तिष्क में तरह-तरह के विचार आँधी की तरह मचल रहे थे लेकिन वह बहुत सावधानी और धैर्य से बात करने का प्रयत्न कर रहा था।

'अगर तुम उससे प्रेम करती हो तो इसमें तुम्हारा क्या वश! मैं जैसे सह सकूँगा, सह लूँगा। जब हम तुम पेरिस चले जायँगे तो तुम ग्रिफ़िथ्स को भूल जाओगी। अगर तुम उसे भूल जाने का प्रयत्न करोगी तो ऐसा करना बहुत कठिन भी नहीं होगा। फिर तुमसे इतनी आशा करने का अधिकार तो है ही मुझे।'

मिलड्रेड कुछ देर चुप रही। वे दोनों चुपचाप भोजन कर रहे थे। कुछ देर बाद वह बोली—

'मैं शनिवार को पेरिस नहीं चल सकूँगी। डाक्टरों की राय नहीं है।'

फ़िलिप जानता था कि यह झूठ है लेकिन उसने उत्तर दिया—'तो फिर कब चल सकोगी?'

मिलड्रेड ने कुछ घबराते हुए उत्तर दिया—'मैं तुमसे साफ़ ही कह दूँ, मैं तुम्हारे साथ न जा सकूँगी।'

'मुझे मालूम था कि तुम यही कहोगी। लेकिन अब तो बहुत देर हो गयी है—मैंने तो टिकट भी ले लिये हैं।'

'तुम्हीं ने तो कहा था कि चलना या न चलना मेरी इच्छा पर निर्भर है और अब मैं नहीं जाना चाहती।'

'तो अब मैंने भी अपना विचार बदल दिया है। तुम्हें मेरे साथ चलना ही है।'

मिलड्रेड बहुत देर तक चुप रही। 'हमारे साथ चलने से लाभ क्या होगा? मैं उसे नहीं भूल सकती। तुम्हें मेरे साथ होने से कोई आनन्द नहीं मिल सकेगा।'

'यह तुम मुझ पर छोड़ दो! तुम्हें इससे क्या?' फ़िलिप ने उत्तर दिया।

मिलड्रेड का चेहरा क्रोध से लाल हो गया—'लेकिन यह तो अन्याय है।'

'इससे क्या!' फ़िलिप ने लापरवाही से उत्तर दिया।

'मैं तो समझती थी कि तुम भले आदमी हो!'

'तो तुम गलत समझती थी,' फ़िलिप अपने इस उत्तर से बहुत खुश हुआ और हँस पड़ा।

'भगवान के लिए हँसो मत! मुझे बहुत अफ़सोस है, फ़िलिप, लेकिन मैं तुम्हारे साथ चल नहीं सकूँगी।'

'तो तुम अब यह बिल्कुल भूल गयी कि जब तुम तकलीफ़ में थी तो मैंने तुम्हारे लिए क्या नहीं किया? तुम्हारे बच्चा पैदा होने पर मैंने खर्च किया, डाक्टर की फीसें मैंने दी, ब्राइटन जाने के लिए तुम्हें धन मैंने दिया। तुम्हारी और तुम्हारे बच्चे की परवरिश मेरे रुपये से होती है। तुम जो कपड़े पहने हो, उसकी एक-एक कत्तल मेरे पैसे से खरीदी हुई है!' फ़िलिप की आवाज में क्रोध की सख्ती और पीड़ा की जलन थी।

'अगर तुम शरीफ़ आदमी होते तो मुझे यह कहकर जलील नहीं करते,' मिलड्रेड बोली।

'चुप रहो! अगर मैं शरीफ़ आदमी होता तो तुमसे सम्बन्ध न रखता, तुम्हारे साथ अपना समय बर्बाद नहीं करता। मुझे कोई परवाह नहीं कि तुम मुझे चाहती हो या नहीं—तुम मुझे अब और ज्यादा बेवकूफ़ नहीं बना सकती। तुम्हें पेरिस चलना है मेरे साथ। बाद को अगर कुछ हो, उसका मैं उत्तरदायी नहीं।'

मिलड्रेड का चेहरा भी क्रोध से तमतमा उठा। उसकी बोली में भद्दापन आ गया जिसे वह छिपाने का प्रयत्न करती थी।

'मैंने तुम्हें कभी पसन्द नहीं किया लेकिन तुम खुद ही जबरदस्ती मेरे निकट आने का प्रयत्न करते रहे हमेशा। अगर मैं भूखी भी मरूँगी तो भी तुम्हें अपने को छूने तक न दूँगी।'

फ़िलिप चुप रहा। उससे खाना बिल्कुल नहीं खाया जा रहा था। उसने एक सिगरेट जला ली और चुप बैठा रहा। मिलड्रेड भी मौन बैठी हुई सफेद मेजपोश की तरफ़ घूरे जा रही थी अगर वे अकेले होते तो फ़िलिप उसको

आलिंगन में बाँधकर चूम लेता। लेकिन समय बीतता गया और वे दोनों एक दूसरे से नहीं बोले।

फ़िलिप ने 'बिल' के दाम देते हुए कहा—

'चलो, अब चलें न?'

मिलड्रेड ने उत्तर नहीं दिया। वह चुपचाप उठ खड़ी हुई।

'तुम ग्रिफ़िथ्स से कब मिल रही हो?'

'कल!' मिलड्रेड ने उदासीनता से उत्तर दिया।

'उससे भी बात कर लेना।'

अचानक उसने अपना 'बैग' खोला और एक बिल निकाल कर फ़िलिप को दिया—'यह मेरे नये कपड़ों का बिल है!'

'तो मैं क्या करूँ?'

'मैंने कल दर्जी को रुपये देने का वादा जो किया है।'

'तुम समझती हो कि इतनी बात होने पर मैं तुम्हें कुछ भी दूँगा?'

मिलड्रेड ने बिगड़ते हुए कहा—'तो मैं हैरी से ही माँग लूँगी!'

'जरूर-जरूर! वह तुम्हारी मदद अवश्य करेगा। उसे सात पाउंड तो मुझे ही उधार के वापस देना है और फिर वह तो इतना कंगाल है कि उसकी लग-भग हर चीज गिरवी रखी जा चुकी है।'

'यह सब कहकर तुम मुझे डराना चाहते हो? मैं खुद कमा सकती हूँ।'

'यही तो तुम्हें करना भी चाहिये। अब मैं तुम्हें एक कौड़ी भी न दूँगा।'

मिलड्रेड को फौरन ध्यान आया कि उसे परसों मकान का किराया देना है, बच्चे की नर्स को वेतन देना है लेकिन वह कुछ न बोली। रेस्तोराँ से बाहर निकल कर फ़िलिप बोला—

'तुम्हारे लिए गाड़ी मँगा दूँ। मैं तो जरा पैदल ही टहलूँगा।'

'मेरे पास तो बिल्कुल पैसे नहीं हैं।'

'तो पैदल चली जाओ, थकान नहीं लगेगी!' फ़िलिप ने कटाक्ष किया—'कल चाय के समय तुमसे मिलूँगा।'

यह कहकर फ़िलिप चल दिया। थोड़ी देर में उसने देखा कि मिलड्रेड वहीं

खड़ी है—बेवस ! वह लौटा और उसने हँसते हुए दो शिलिंग मिलड्रेड के हाथ में रख दिये—'गाड़ी लेकर घर लौट जाओ !'

इसके पहले कि मिलड्रेड कुछ कह सके, फ़िलिप जा चुका था।

दूसरे दिन फ़िलिप अपने कमरे में बैठा सोच रहा था कि मिलड्रेड आयेगी या नहीं। वह रात को ठीक से सो भी नहीं सका था और उसका दिन बड़ी कठिनाई से कटा था। तीसरे पहर वह अपने कमरे में आकर लेट गया।

दरवाजे पर एक हल्की-सी दस्तक हुई। फ़िलिप ने उठकर दरवाजा खोला। मिलड्रेड चौखट पर खड़ी थी।

'अन्दर आ जाओ।'

मिलड्रेड के अन्दर आते ही फ़िलिप ने किवाड़ भेड़ दिये। वह झिझकते-हुए बोली—'कल जो दो शिलिंग तुमने दिये थे, उसके लिए धन्यवाद !'

'कोई बात नहीं,' फ़िलिप ने कहा। मिलड्रेड के चेहरे पर हल्की-सी मुस्कराहट थी। लगता था मानो वह उसे मनाना चाहती हो।

'अगर तुम अब भी चाहते हो कि मैं तुम्हारे साथ पेरिस चलूँ, तो मैं चलने को तैयार हूँ।'

फ़िलिप के दिल में विजय के उल्लास की लहर दौड़ गयी लेकिन वह क्षणिक थी। उसके स्थान पर उसके मन में शंका उठी—'धन के कारण ?'

'हाँ ! किसी हद तक हैरी मेरी सहायता नहीं कर सकता। मुझे भी नौकरी मिलने में समय तो लगेगा ही। फिर इतने सब लोगों का लेना-देना है।'

'इसके अतिरिक्त और भी कोई कारण है ?' फ़िलिप ने पूछा।

'हाँ ! हैरी कहता है कि तुमने हम दोनों के साथ बहुत उपकार किये हैं। उससे तुमने सच्ची मित्रता निभायी है और मेरे साथ वह किया है तुमने जो शायद और कोई नहीं कर सकता था। उसने अपने बारे में वही कहा जो तुमने मुझसे कहा था—उसका कोई ठीक नहीं। उसके अस्थिर प्रेम के लिए तुम्हें छोड़ देना मूर्खता होगी।'

'तो क्या सच तुम मेरे साथ चलना चाहती हो ?' फ़िलिप ने पूछा

'मुझे कोई आपत्ति नहीं।'

फ़िलिप ने मिलड्रेड की ओर देखा। उसके चेहरे पर दुःख के भाव स्पष्ट थे कहने को तो विजय फ़िलिप को ही हुई थी लेकिन कैसे—कितनी? फ़िलिप अपनी इस जीत पर व्यंगात्मक हँसी हँस पड़ा। मिलड्रेड ने उसकी तरफ़ आश्चर्य से देखा लेकिन वह बोली कुछ नहीं।

'मैं कितनी उमंगों से, आशाओं से तुम्हारे पेरिस जाने की प्रतीक्षा कर रहा था। सोचता था कि इतने दुःखों के बाद तो मुझे सुख मिल जायगा…'

फ़िलिप ने अपना वाक्य पूरा नहीं किया। अचानक ही मिलड्रेड जोर से फूट-फूटकर रोने लगी। फ़िलिप ने कभी किसी को इतने वेग से रोते नहीं देखा था। उसे बहुत दुःख हुआ और उसका दिल पीड़ा से तिलमिला उठा। अनजाने में ही फ़िलिप ने उठकर मिलड्रेड को अपने बाहुपाश में बाँधकर चूम लिया।

'क्या तुम बहुत दुःखी हो?' फ़िलिप ने प्रश्न किया।

आँसुओं के बीच में मिलड्रेड ने उत्तर दिया—'मैं तो मर गई होती तो अच्छा होता।'

'प्रेम करने में कितना कष्ट है और फिर भी लोग प्रेम करना चाहते हैं!'

मिलड्रेड रोते-रोते थक गयी थी और अब अचेत-सी कुर्सी पर पड़ी थी।

'मुझे नहीं मालूम था कि तुम ग्रिफिथ्स से इतना प्रेम करती हो।'

ग्रिफिथ्स के प्यार की सीमा को फ़िलिप अच्छी तरह जानता था, लेकिन आश्चर्य तो उसे मिलड्रेड की भावुकता पर हुआ था। उसे इस बात का बिल्कुल पता न था कि मिलड्रेड के प्यार में इतनी उत्तेजना भी हो सकती है। उसे क्या पता था कि मिलड्रेड के बर्फ़-से ठंडे दिल में आग के सोते छिपे हुए हैं। फ़िलिप को लगा कि जैसे उसके दिल में कोई तार टूट गया हो।

'मैं तुम्हें दुःखी नहीं करना चाहता, मिलड्रेड। अगर तुम न चलना चाहो तो मत चलो। रुपये मैं तुम्हें बराबर देता रहूँगा।'

'नहीं, मैंने तुमसे चलने को कह दिया है और मैं अवश्य चलूँगी।'

'लेकिन इससे लाभ ही क्या जब कि तुम ग्रिफिथ्स से इतना प्रेम करती हो।'

मिलड्रेड ने आँखें मूँद लीं—लगता था कि जैसे वह बेहोश हो जायगी। एकाएक फ़िलिप के दिमाग में एक बड़ा अजीब-सा विचार आया।—

'तुम ग्रिफिथ्स के साथ पेरिस क्यों नहीं हो आती ?'

'कैसे जा सकती हूँ ? हम लोगों के पास धन ही नहीं है।'

'मैं तुम्हें दूँगा।'

'तुम !' मिलड्रेड आश्चर्य से चकरा गयी।

'हाँ !' फिलिप ने यह कह तो दिया लेकिन दिल में उसने भयंकर पीड़ा महसूस की। इसके साथ ही उस दर्द ने फिलिप के दिल में एक अजीब-सी भावना को जन्म दिया। मिलड्रेड उसकी तरफ चकित होकर देख रही थी।

'लेकिन तुम्हारे रुपये से हैरी तो जाना नहीं पसन्द करेगा।'

'नहीं, तुम्हारे कहने से वह जाने को तैयार हो जायगा।'

जितना ही मिलड्रेड ने विरोध किया उतना ही फिलिप ने इस बात पर आग्रह किया। फिर भी वह दिल से यही चाहता था कि मिलड्रेड मना कर दे।

'मैं तुम्हें पाँच पाउंड दे दूँगा। इतने में तुम शनिवार से सोमवार तक पेरिस मजे से घूम सकोगी।'

'ओह फिलिप ! सच !' हर्ष में मिलड्रेड बोली—'अगर तुम हमें जाने में सहायता दोगे तो मैं बाद में तुम्हें खूब प्यार करूँगी, मैं तुम्हारे लिए कुछ भी कर दूँगी। क्या सच तुम हमें रुपये दोगे ?'

'हाँ !' फिलिप ने उत्तर दिया।

मिलड्रेड जैसे बिल्कुल ही बदल गयी थी अब—वह खूब खुश थी, हँस रही थी। उसने झुककर फिलिप का हाथ अपने हाथों में ले लिया।

'तुमसे अच्छा आदमी मैंने आज तक नहीं देखा, फिलिप, लेकिन बाद को तुम मुझसे नाराज तो नहीं हो जाओगे ?'

फिलिप ने सिर हिला दिया। उसके ओठों पर मुस्कराहट थी लेकिन दिल में एक भयंकर पीड़ा।

मिलड्रेड वहाँ से जाने को तैयार हो गयी। फिलिप ने कहा—'ग्रिफिथ्स से कह देना कि मैं अब उससे मिल न सकूँगा। मुझे उस पर क्रोध नहीं है, लेकिन उससे मिलने में मुझे दुःख होगा।'

मिलड्रेड चली गयी।

शनिवार की दोपहर को फ़िलिप अपने कमरे में लेटा हुआ पढ़ रहा था। किताब के शब्द उसकी आँखों के सामने तैर रहे थे—उसकी समझ में कुछ भी नहीं आ रहा था। वह सोचने लगा कि उसने उन लोगों को रुपये देने का वादा ही क्यों किया? लेकिन अब मना करने की हिम्मत भी तो उसमें नहीं थी। दिल में तड़पते हुए दर्द के कारण किताब में लिखे हुए वाक्य भी आँखों के सामने टूट-फूटकर बिखरे जा रहे थे। फ़िलिप ने सोचा कि वह घर से बाहर चला जाय और रात तक न लौटे। तब देखो कैसे वे दोनों बार-बार उसके दरवाजे तक आयेंगे धन लेने और निराश लौट जायँगे। उनकी निराशा देख कर कितनी खुशी होगी उसे!

लेकिन वह ऐसा नहीं कर सका। वह उन्हें रुपये देगा। उसे भी देखना है कि यह लोग कितनी नीचता कर सकते हैं। वह कुछ नहीं पढ़ पा रहा था। वह आँखें मूँदकर लेट गया। उसका पीड़ा से भरा दिल मिलड्रेड की प्रतीक्षा कर रहा था।

मकान मालकिन ने आकर कहा, 'मिसेज मिलर आयी हैं।'

'उन्हें भेज दो अन्दर!' फ़िलिप उठ बैठा। वह नहीं चाहता था कि मिल-ड्रेड को उसके महान् दुख का जरा सा भी पता लग पाये। उसके दिल में इच्छा उठी कि वह मिलड्रेड के सामने झुक जाये और उसे रोकने की कोशिश करे लेकिन वह जानता था कि उसके पत्थर-से दिल पर कोई प्रभाव भी नहीं पड़ेगा।

'कहो, जा रही हो न?' फ़िलिप ने मुस्कराने की चेष्टा करते हुए मिलड्रेड से पूछा।

'हाँ! हैरी बाहर खड़ा है। उसने पूछा है कि क्या वह कुछ देर को तुमसे विदा माँगने के लिए मिल सकता है?'

'न! मैं उससे नहीं मिलूँगा।' फ़िलिप चाहता था कि मिलड्रेड यहाँ से जल्दी से जल्दी चली जाय।

'यह लो, पाँच पाउंड है। अब तुम जाओ।'

मिलड्रेड ने फ़िलिप को धन्यवाद दिया और वह चलने लगी।

'तुम लौट कब रही हो ?'

'सोमवार को।'

'तब तो आकर मिलोगी न ?' फ़िलिप नहीं चाहता था कि उसकी आवाज़ में कोई भी भावना हो पर क्या करता।

'अवश्य !' मिलड्रेड ने कहा और वह चली गयी।

खिड़की से फ़िलिप ने देखा कि वे दोनों गाड़ी में बैठ कर चल दिये थे। वह चारपाई पर लेट गया और उसने अपना मुँह हाथों से ढँक लिया। वह रोना नहीं चाहता था; जब आँखों में आँसू आ ही गये तब भी उसने उन्हें रोकने की पूरी चेष्टा की, दाँत भींच लिये—मुट्ठियाँ बाँध लीं, लेकिन दर्द की सिसकियाँ बरबस ही छूट पड़ीं।

सोमवार भी आ गया। फ़िलिप को ग्रिफ़िथ्स से नफ़रत हो गई थी लेकिन सब कुछ होते हुए भी मिलड्रेड के लिए उसका प्रेम, उसकी वासना अब भी उतनी ही प्रबल थी। वह कोई भी समझौता उससे करने को तैयार था, चाहे उसे कितना ही नीचा क्यों न देखना पड़े। वह अपनी अतृप्त इच्छाओं को किसी भी कीमत पर पूरा करना चाहता था।

शाम को इच्छा के विरुद्ध वह मिलड्रेड के मकान की तरफ़ चल पड़ा। उसने देखा कि मकान में अँधेरा है। उसे आश्चर्य हुआ। इसी तरह मङ्गल और बुध भी निकल गये। फ़िलिप ने मिलड्रेड को पत्र भेजे लेकिन पत्र वापिस लौट आये। मिलड्रेड अभी लौटी न थी। फ़िलिप के क्रोध का ठिकाना न रहा। इस बार भी मिलड्रेड ने उसे धोखा दिया। यह फ़िलिप को असह्य था। उसने दिल में कहा, दोहराया, कि वह मिलड्रेड से घृणा करता है! उसके विचार से ग्रिफ़िथ्स ही के कारण यह सब हुआ था। फ़िलिप सोचने लगा कि वह अगर ग्रिफ़िथ्स की हत्या कर दे तो कितना अच्छा हो, कितना संतोष मिले! क्रोध और पीड़ा से फ़िलिप पागल हो गया था। उसने दुख को भुलाने के लिए खूब शराब पीनी शुरू कर दी।

बृहस्पतिवार को फ़िलिप सोकर उठा तो डाक देखने लगा। उसमें से एक लिफ़ाफ़े पर ग्रिफ़िथ्स की हस्तलिपि थी। पत्र में लिखा था—

'प्रिय फ़िलिप,

समझ में नहीं आता कि कैसे तुम्हें पत्र लिखूँ पर लिखना पड़ रहा है। मुझे मालूम है कि तुम मुझसे बहुत ज्यादा नाराज होगे। मैं मानता हूँ कि मिलड्रेड के साथ जाकर मैंने बहुत गलती की, लेकिन मैं मजबूर था। अब सब कुछ खत्म हो चुका है और मुझे बहुत पश्चाताप है। मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे क्षमा कर दो और मुझसे एक बार मिल लो। मेरी आत्मा पर से बोझ इस तरह उतर जायगा। मैंने सोचा था कि तुम नाराज नहीं हो वरना तुम हम लोगों को रुपया ही क्यों देते। मैं घर लौट आया हूँ और मिलड्रेड अभी ऑक्सफ़ोर्ड में ही है। वह बुधवार तक लन्दन लौट आयेगी।

पत्र का उत्तर अवश्य देना। आशा है, कि तुम मुझे क्षमा कर दोगे।

तुम्हारा ही,
हैरी।'

फ़िलिप ने क्रोध में पत्र को फाड़ डाला। इस पत्र का उत्तर देने का उसका कोई इरादा नहीं था। बुरा काम करना एक बात है लेकिन बाद में उस पर पश्चाताप करना उससे भी अधिक घृणित है। ग्रिफ़िथ्स के क्षमा माँगने में उसे कायरता और कपट का आभास मालूम हुआ। फ़िलिप चाहता था कि एक दिन उसे भी किसी तरह ग्रिफ़िथ्स को नुक़सान पहुँचाने का अवसर मिल जाय।

लेकिन मिलड्रेड लौट आयी होगी। उसका ध्यान आते ही जैसे वह सब कुछ भूल गया। उसने जल्दी से कपड़े पहिने, चाय पी और मिलड्रेड के मकान के लिए सवारी ले ली। फ़िलिप को लगा कि गाड़ी बहुत धीरे-धीरे चल रही है। इतना भी धैर्य नहीं था उसे! वह सब कुछ भूल कर उसके प्रेम में खो जाना चाहता था—उसको एक बार अपनी बाँहों में भर लेने की इच्छा में फ़िलिप के तमाम दुख डूब जाते थे।

'मिसेज मिलर हैं?' मकान पर पहुँचते ही उसने पूछा।

'वह तो चली गयीं।' नौकरानी ने उत्तर दिया।

फ़िलिप ने हैरानी से उसकी तरफ़ देखा।

'वह घंटे भर हुए यहाँ से अपना सब सामान लेकर चली गयीं।'

'क्या तुमने उन्हें मेरा पत्र दिया था?' थोड़ी देर अवाक् रहने के बाद फ़िलिप ने पूछा।

फ़िलिप समझ गया था कि मिलड्रेड ने उसे एक बार फिर धोखा दिया है। वह निराश होकर अपने घर लौट आया। ऐसा तो मिलड्रेड को करना ही था—उसने कभी भी फ़िलिप की परवाह नहीं की थी। मिलड्रेड में न दया थी, न प्रेम था, न उदारता थी। फ़िलिप के लिए यह पीड़ा असह्य हो गयी। उसने सोचा कि वह क्यों न आत्महत्या कर ले। लेकिन अपने इस विचार से वह विद्रोह कर उठा। उसकी आत्मा ने उससे कहा कि दुख आगे-पीछे दूर हो जायगा। अगर वह प्रयत्न करे तो उसे भुला भी सकता है। अपने जीवन को उस कुलटा के लिए खत्म कर देना कोरी मूर्खता ही होगी। धीरे-धीरे वह अपनी प्रबल इच्छाओं पर काबू पा लेगा। फ़िलिप ने सोचा कि वह कुछ दिनों के लिए लन्दन से बाहर चला जाय तो अच्छा हो। यहाँ के वातावरण में उसे पुरानी दर्दनाक घटनाएँ याद आकर बार-बार सताती रहेंगी। उसने अपने चाचा को तार दे दिया और कुछ दिनों के लिए वह ब्लैकस्टेबिल चला गया।

१२

अगले वर्ष की पढ़ाई शुरू होने के दो दिन पहले फ़िलिप लन्दन लौट आया।

फ़िलिप ने चार कमरों का एक छोटा सा मकान किराये पर ले लिया और उसे अपने आवश्यकतानुसार सजा भी लिया। अपने बैठने के कमरे में उसने अपने मित्र लॉसन और अन्य कलाकारों के चित्र टाँगे; इन चित्रों में खुद उसका बनाया हुआ भी एक चित्र था, जिससे उसे याद आता रहे कि कभी वह भी एक चित्रकार था। उसका वह चित्र एक स्पेनिश लेखक का था जिसने कला की साधना के लिए हर प्रकार के कष्ट उठाये थे लेकिन जिसे सफलता नहीं मिली

थी। पता नहीं अब उस लेखक का क्या हाल होगा ? जो प्रतिभा न होते हुए भी कला की साधना करते रहते हैं उनसे ज्यादा अभागा कोई दूसरा नहीं होता। वह लेखक भी बेचारा संघर्षों से ऊबकर किसी असाध्य रोग का शिकार हो गया होगा या निराश होकर उसने आत्महत्या कर ली होगी—यह सोचकर फ़िलिप को अब भी दुख हुआ।

फ़िलिप ने अपने पुराने मित्र—लॉसन और हेवर्ड को अपने नये मकान में निमंत्रित किया। दोनों ने उसके मकान की खूब तारीफ की और फ़िलिप इससे बहुत खुश हुआ। देर तक वे मौज करते और खाते-पीते रहे।

फ़िलिप की पढ़ाई के विषय भी अब काफी मनोरंजक हो गये थे। इसके अतिरिक्त वह अस्पताल का कुछ काम करके थोड़ा-बहुत कमा भी लेता था। इस नये वातावरण में फ़िलिप बहुत प्रसन्न था।

ग्रिफ़िथ्स को वह अक्सर दूर से देखा करता था। फ़िलिप के दिल में अब उसके प्रति उतना क्रोध नहीं था—वह उसकी तरफ से बिल्कुल उदासीन था। उन दोनों के आपस के एक मित्र रैम्सडेन ने दोनों में मेल कराने का प्रयत्न भी किया लेकिन फ़िलिप इस बात के लिए बिल्कुल तैयार नहीं था। रैम्सडेन से ही उसे ग्रिफ़िथ्स और मिलड्रेड के सम्बन्धों का पता लगा।

'हैरी तो भगवान से मनाता है कि वह उस औरत से कभी न मिला होता,' रैम्सडेन ने कहा।

'अच्छा!' लगता था जैसे फ़िलिप ने बहुत लापरवाही से उत्तर दिया है, लेकिन किसे मालूम, उसका दिल कितनी तेजी से धड़क रहा था!

धीरे-धीरे रैम्सडेन ने सारी कथा फ़िलिप को सुनायी। ग्रिफ़िथ्स और मिलड्रेड पेरिस न जाकर ऑक्सफोर्ड में ही रहे थे। उन दो दिनों ने जैसे मिलड्रेड के दिल में प्रेम की आग को शांत करने की बजाय और भड़का दिया था। ग्रिफ़िथ्स तो घर लौट गया था सोमवार को लेकिन मिलड्रेड ने सोच लिया था कि अब वह फ़िलिप के पास वापिस नहीं जायगी—फ़िलिप से उसे चिढ़ थी। मिलड्रेड को इतना उत्तेजित देखकर ग्रिफ़िथ्स को खुशी नहीं हुई थी। उसके साथ ग्रिफ़िथ्स के दो दिन भी सुख से नहीं कटे थे; न तो वह दिल से मिलड्रेड को प्यार ही

करता था और न करना ही चाहता था। वहाँ से लौट आने के बाद मिलड्रेड ने ग्रिफिथ्स को एक लम्बा पत्र लिखा था—उत्तेजना और भद्दे प्रेम-प्रदर्शन से परिपूर्ण। ग्रिफिथ्स को ऐसे कई पत्र मिले और जब उसने कोई उत्तर नहीं दिया तो मिलड्रेड ने तार दे-देकर उसे परेशान करना शुरू किया। तंग आकर ग्रिफिथ्स को पत्र लिखना पड़ा लेकिन उसने मीठे शब्दों में उसे साफ-साफ लिख दिया कि वह उससे प्रेम नहीं करता। परन्तु मिलड्रेड ने उसका पीछा न छोड़ा। लन्दन लौटने पर भी वह ग्रिफिथ्स के पीछे लगी रही। एक बार तो ऐसा हुआ कि मिलड्रेड ग्रिफिथ्स के घर पहुँच गयी। ग्रिफिथ्स इतना तंग आ चुका था कि अब वह मिलड्रेड से छिप-छिप कर रहता था। जब रात को ग्रिफिथ्स लौटा तो मिलड्रेड को देखते ही वह फिर वहाँ से भाग खड़ा हुआ और उसने रैम्सडेन के यहाँ रात काटी। बाद को पता लगा था कि मिलड्रेड ग्रिफिथ्स के मकान की सीढ़ियों पर बैठी-बैठी सारी रात रोती रही थी।

'कुछ पता है कि अब वह क्या कर रही है?' फिलिप ने पूछा।

'सुना है, कहीं नौकरी मिल गयी है उसे। भगवान की दया से अब उसे इतनी फुरसत नहीं मिलती कि वह हैरी को तंग कर सके,' रैम्सडेन ने उत्तर दिया।

इसके बाद फिलिप ने एक दिन सुना कि बहुत तंग आकर ग्रिफिथ्स को मिलड्रेड से साफ-साफ कह देना पड़ा था कि वह उससे बिलकुल ऊब चुका है और अब वह भविष्य में उसका पीछा न करे। इसके बाद फिलिप ने मिलड्रेड के बारे में और कुछ नहीं सुना। लन्दन के विशाल जनसमुदाय में मिलड्रेड का छोटा-सा व्यक्तित्व खो गया।

बसन्त के मौसम में फिलिप को छः महीने के लिए अस्पताल में एक नयी नौकरी मिल गयी। उसका काम था कि हाउस सर्जन के साथ वह रोज सुबह के समय पहले मर्दाने और फिर जनाने वार्ड में रहे। वह रोगियों की भी देख-रेख करता था और उसे बड़ा हर्ष होता था जब रोगियों को उसकी सेवाओं से सुख मिलता था। उसके अन्दर उनके प्रति झूठी सहानुभूति नहीं थी, लेकिन

वह उनको दिल से पसन्द करता था और उसके इस छलरहित व्यवहार के कारण मरीज भी उसे बहुत चाहने लगे थे।

इसी समय भाग्यवश फ़िलिप का एक नया मित्र बना। एक दिन सुबह हाउस-डाक्टर ने उससे एक नये रोगी का विवरण-पत्र बनाने को कहा। यह नया रोगी एक पत्रकार था, उसका नाम थॉर्प एथेलनी था और उसकी अवस्था लगभग अड़तालीस वर्ष की थी। उसे पीलिया रोग हो गया था। जो प्रश्न उसके रोग के सम्बन्ध में फ़िलिप ने उससे किये उनके जवाब उसने बड़ी शिष्टता से दिये। उसकी बातों से ज्ञात होता था कि वह पढ़ा-लिखा, सभ्य और सुसंस्कृत है। फ़िलिप को लोगों के हाथ गौर से देखने की आदत थी। उसे आश्चर्य हुआ कि एथेलनी के हाथ छोटे-छोटे और मुलायम थे। उँगलियाँ पतली और लम्बी थीं। उसकी आँखें नीली थीं, नाक ऊँची थी, छोटी-नोकीली और भूरी दाढ़ी थी और सिर पर जो थोड़े से बाल थे वे लम्बे और घुँघराले थे।

'तो आप पत्रकार हैं ? किन पत्रों में लिखते हैं आप ?'

'सभी पत्रों में। कोई ऐसा पत्र नहीं जिसमें मेरे लेख न हों,' एथेलनी ने उत्तर दिया।

एथेलनी ने एक अखबार उठा कर फ़िलिप को दिखाया। उसमें एक फर्म का लम्बा चौड़ा विज्ञापन था। 'मैं इस फर्म का पत्र-प्रतिनिधि हूँ। कितना निरादर होता है...' एथेलनी ने वाक्य पूरा नहीं किया। वह उम्दा विज्ञापन एथेलनी की ही कलम का जौहर था।

फ़िलिप ने और भी प्रश्न किये—'क्या आप बाहर भी रहे हैं कभी ?'

'हाँ ! मैं स्पेन में ग्यारह वर्ष रहा हूँ !'

'वहाँ क्या काम करते थे आप ?'

'टॉलेडो की पानी की कम्पनी में नौकर था।'

इस उत्तर से फ़िलिप की उसमें दिलचस्पी बढ़ी लेकिन उसने सोचा कि इसका प्रदर्शन करना ठीक न होगा। अस्पताल के अधिकारियों का किसी एक रोगी से विशेष रूप से घनिष्ठ होना उचित भी नहीं था।

अगले दिनों में ज्यों-ज्यों एथेलनी ठीक होने लगा, फ़िलिप से उसकी मित्रता बढ़ने लगी। एथेलनी बातें करने में बहुत निपुण था। उसके बात करने के ढंग में कोई ऐसी प्रेरणा थी जो श्रोता की कल्पना को अपनी शक्ति से सजग कर देती थी। एथेलनी वास्तव में एक बहुत चतुर और बुद्धिमान् व्यक्ति था। उसने पढ़ा भी बहुत था और सांसारिक अनुभव भी उसे कम न थे।

एक दिन फ़िलिप ने उससे पूछा कि वह इस खैराती अस्पताल में क्यों इलाज कराने आया है।

'मेरा सिद्धांत है कि उन चीज़ों से पूरा लाभ उठाना चाहिये जो समाज आपके लिए करने को तैयार है। जब मैं बीमार होता हूँ तो ऐसे अस्पतालों में भरती हो जाता हूँ—मुझे झूठी शरम नहीं लगती। मैं अपने बच्चों को भी खैराती स्कूलों में ही पढ़ने भेजता हूँ।'

'सच ?' फ़िलिप ने पूछा।

'बिल्कुल। और उनकी शिक्षा भी उससे अच्छी होती है जो मुझे बड़े-बड़े स्कूलों में मिली थी। मैं उन्हें ऐसे न पढ़ाऊँ तो क्या करूँ ? नौ बच्चे हैं मेरे! एक बार मेरे घर आकर सब से मिलियेगा! देखिये भूलियेगा नहीं।'

'नहीं, अवश्य आऊँगा!' फ़िलिप ने उत्तर दिया।

दस दिन में एथेलनी बिलकुल भलाचङ्गा हो गया। अस्पताल से चलते समय उसने फ़िलिप को अपने घर का पता दिया और फ़िलिप ने वादा किया कि अगले इतवार को वह दोपहर का भोजन उसी के यहाँ करेगा।

अजीब-सा व्यक्ति था एथेलनी। फ़िलिप जब इतवार को उसके यहाँ पहुँचा तो एथेलनी ने उसका बहुत स्वागत किया। फ़िलिप ने देखा कि वह बड़े ऊट-पटांग कपड़े पहने है—सूती नीली पतलून, कत्थई मखमल का कोट, कमर में सुर्ख रंग की पट्टी लिपटी हुई थी। और गले में टाई के स्थान पर वह एक बड़ी भारी 'बो' बाँधे हुए था।

बातें करते-करते एथेलनी ने अपने मकान की तारीफ़ों के पुल बाँध दिये। वह तो फ़िलिप को ऊपरी मंजिल में भी ले गया जहाँ कुछ और लोग रहते थे। फ़िलिप ने देखा कि वे लोग एथेलनी को कुछ अजीब-सा समझते हुए भी बहुत

पसन्द करते थे। एथेलनी बड़े वेग से बातें कर रहा था कि इतने में एक छोटी-सी लड़की ने आकर कहा—'डैडी! माँ कह रही हैं कि अब बातें खत्म करके खाना खाने चलिये!'

'यह मेरी तीसरी लड़की है!' एथेलनी ने फ़िलिप को बताया—'इसका नाम मैरिया डॅल पिलार है—वैसे सब लोग इसे जेन कहते हैं। जेन, जाकर अपनी नाक साफ करो!'

'रूमाल नहीं है, डैडी!' लड़की ने उत्तर दिया।

'वाह री! भगवान ने तुझे हाथ तो दिये हैं न!' जेब से एक बड़ा भड़कीला-सा रूमाल निकालते हुए एथेलनी ने कहा।

वे लोग खाना खाने चले गये। एथेलनी फ़िलिप को कमरे में लगे हुए चित्र वगैरह दिखा रहा था। कमरे में विशेष कीमत की या शान की कोई चीज नहीं थी लेकिन जो कुछ भी था उसमें अपना ही एक निराला आकर्षण था। एक लम्बी-सी लड़की कमरे में आकर बोली—

'माँ ने कहा है कि भोजन बिल्कुल तैयार है। आप लोग अगर बैठ जायें तो मैं खाना ले आऊँ।'

'मिस्टर कैरी से आकर हाथ मिलाओ—सैली। यह मेरी सब से बड़ी लड़की है, मिस्टर कैरी। क्या उम्र है तुम्हारी सैली?'

'इस जून तक पन्द्रह की पूरी हो जाऊँगी।'

'मैंने इसका नाम मैरिया डॅल सॉल रखा था लेकिन इसकी माँ इसे सैली ही कहती है।'

सैली शरमायी और मुस्करा पड़ी। उसके दाँत सफेद और एकसार थे। अपनी उम्र के हिसाब से वह काफी लम्बी और तन्दुरुस्त थी। लाल गाल थे, आँखों में माधुर्य था और माथा चौड़ा था।

'अपनी माँ से कहना कि खाने से पहिले मिस्टर कैरी से हाथ मिला जायें,' एथेलनी ने सैली से कहा।

'माँ ने कहा है कि वह खाने के बाद ही यहाँ आयेंगी। अभी वह तैयार नहीं हैं।'

'तब हम लोग ही उनसे जाकर मिल लेते हैं,' और एथेलनी फ़िलिप को लेकर चौके में आ गया।

चौके में जगह की कमी थी। बीचोबीच एक बड़ी-सी मेज पड़ी थी जिसके चारों तरफ बच्चे बैठे हुए भोजन की प्रतीक्षा कर रहे थे। एक औरत आग में से भुने हुए आलू निकाल रही थी।

'मिस्टर कैरी' यह हैं मेरी पत्नी—बैटी !'

मिसेज एथेलनी अपने सूती गाउन पर एक गन्दा-सा ऐप्रन बाँधे थीं। वह काफी लम्बी-चौड़ी थीं। रंग गोरा, नीली आँखें और चेहरे पर सौजन्य और नम्रता थी। कपड़े से हाथ साफ करते हुए वह बोलीं—'एथेलनी आपकी बहुत प्रशंसा कर रहे थे ; आपने अस्पताल में उन पर बड़ी कृपा की।'

एथेलनी ने सब बच्चों से फ़िलिप का परिचय कराया। मिसेज एथेलनी बात काट कर बोलीं—

'अच्छा एथेलनी ! अब कमरे में जाओ, मैं खाना भेजती हूँ।'

एथेलनी ने कुछ मजाक किया।

'पहले आप ही चलिये, मिस्टर कैरी ! यह तो जब बात करने लगते हैं तो उसका कोई अन्त ही नहीं होता', मिसेज एथेलनी ने फ़िलिप से कहा।

कमरे में वापस आकर वे दोनों कुर्सियों पर बैठ गये। सैली कमरे में खाना ले आयी। एथेलनी ने शराब की एक बोतल भी बाहर से मँगवा ली थी। खाने के साथ-साथ एथेलनी की बातों का सिलसिला भी चलता रहा जो कभी टूटता ही नहीं था। बातों ही बातों में उसने यह भी बता दिया कि पहले उसका विवाह एक अमीर औरत से हुआ था लेकिन उसके साथ वह तीन वर्ष से अधिक न निबाह कर सका। बढ़िया मकान था, अच्छे भोजन और कपड़े थे, सम्पन्न दोस्त थे ; लेकिन इस सब के होते हुए भी कुछ ऐसा था जिसमें एथेलनी की आत्मा घुटती थी। उसने चाहा कि वह अपनी पत्नी को तलाक दे दे पर उसकी पत्नी राजी ही न हुई थी इस बात पर।

बैटी उसकी पहली पत्नी के घर में नौकरानी थी। मजबूर होकर वह और

सैली अविवाहित होते हुए भी साथ ही रहे। उनका कभी विवाह नहीं हो सका, हालाँकि उनके अब नौ बच्चे थे।

सैली कमरे में खाने की कोई नयी चीज लेकर आयी। एथेलनी की बातचीत का क्रम टूटा नहीं।

'सब से बड़ी गलत धारणा यह है कि बच्चों के पालन-पोषण में बहुत धन की जरूरत होती है। धन तो तब चाहिये जब आप उन्हें भद्र बनाना चाहते हों और मैं अपने बच्चों को वह नहीं बनाना चाहता। सैली साल भर में नौकरी करने लगेगी—ठीक है न सैली? और अपने लड़कों को मैं नौसेना में भर्ती करा दूँगा।'

खाना खत्म हो गया। फ़िलिप ने अपना पाइप जलाया और एथेलनी ने एक सिगरेट जला ली। सैली ने खाली तश्तरियाँ उठा लीं। फ़िलिप इस अजीब आदमी के बारे में सोच रहा था। थोड़ी देर में उसको इस परिवार के बारे में कितनी ही बातें मालूम हो गयी थीं।

दरवाजे पर एक दस्तक हुई और एथेलनी परिवार के सब बच्चे कमरे में आ गये। सैली के संरक्षण में वे सब कहीं बाहर जा रहे थे। एथेलनी ने उन्हें खूब छेड़ा, खूब मजाक किया। उसके सारे व्यवहार से मालूम होता था कि वह अपने बच्चों को बहुत प्यार करता है और उसे उनके स्वास्थ्य और सौन्दर्य पर बहुत गर्व है। फ़िलिप के सामने बच्चे जरा झिझक रहे थे। थोड़ी देर में वे सब चले गये।

कुछ देर बाद मिसेज एथेलनी कमरे में आयीं। वह अब कपड़े बदल चुकी थीं और मालूम होता था कि कहीं बाहर जाने की तैयारी में हैं।

'मैं गिरजे जा रही हूँ, एथेलनी! तुम्हें किसी चीज की आवश्यकता तो नहीं होगी?'

'अरे, मेरे लिए भी वहाँ प्रार्थना कर लेना!'

'अरे, तुम्हें क्या लाभ होगा प्रार्थना करने से। तुम ठहरे नास्तिक!'

जाने के पहिले उन्होंने फ़िलिप की तरफ देखते हुए मुस्कराकर कहा—'आप चाय पीने के लिए अवश्य ठहरियेगा।'

फ़िलिप को एथेलनी परिवार के साथ रात के दस बज गये। आठ बजे के करीब सब बच्चे 'गुड-नाइट' कहने कमरे में आये थे—फ़िलिप ने सब को चूमा था। उसे बहुत प्यारे लगे थे ये बच्चे। सैली ने केवल अपना हाथ ही बढ़ा दिया था।

'सैली केवल उन्हीं लोगों को चूमती है जिनसे वह दो बार से ज्यादा मिल चुकी होती है!' एथेलनी ने विनोद किया।

'तो फिर मुझसे दोबारा आने को कहो,' मजाक में ही फ़िलिप ने सैली से कहा।

'डैडी की बातों पर आप ध्यान मत दिया कीजिये।'

चलते समय फ़िलिप मिसेज एथेलीन से विदा माँगने गया। उन्होंने उसे दोबारा आने का निमंत्रण बड़े जोरों से दिया।

अगले शनिवार को एथेलनी का पोस्टकार्ड आया कि इतवार को उसे फिर उनके यहाँ भोजन करने आना है। फ़िलिप ने सोचा कि खाने में तो खर्च बहुत होता है इसलिए उसने उत्तर दे दिया कि वह उनके साथ केवल चाय ही पियेगा। साथ में वह एक केक भी ले गया, जिससे उन लोगों का लगभग कोई खर्च ही न हो।

धीरे-धीरे फ़िलिप उस परिवार से बहुत घनिष्ठ हो गया। बच्चे भी अब उससे खूब प्यार करते थे और उसे भी उनसे बहुत स्नेह हो गया था। सब के सब उसे 'चाचा फ़िलिप' कहने लगे थे! धीरे-धीरे फ़िलिप को एथेलनी के बारे में भी काफी बातें मालूम हुईं। एथेलनी ने इस्नोलो!' और भी बहुत से काम किये थे लेकिन हर काम में उसे निराशा ही ड रो पड़ी उसने लंका में चाय के बागीचों में नौकरी की थी, अमरीका में इ जाकर बात नहीं का सेल्समैन भी रह चुका था। स्पेन में वह काफी दिन नौ कि वह फ़िलिप को पहिले ही बता चुका था। वह घर नहीं ले जा सकती! तुम्हें पत्रिकाओं का सम्पादन भी कर चुका था। तर्भ लूँगी!' ले याद थे और उसके बात करने का ढंग अगर इस समय उसने उसे चला भी बहुत था। श्रोताओं को बहुत आश्चर्य गी।

से । कुछ साल पूर्व विपन्नता ने उसे एक फ़र्म की नौकरी करने को मजबूर कर दिया था ।

एक दिन इतवार की रात को फ़िलिप एथेलनी के घर से लौट रहा था । जहाँ से उसे बस मिल सकती थी, लेकिन मिली नहीं । हालाँकि जून का महीना था लेकिन दिन में वर्षा हो चुकी थी और इसलिए ठंड काफी थी । वह बस लेने के लिए कुछ आगे चला गया । इस जगह से बसें पन्द्रह-पन्द्रह मिनट बाद जाती थीं, इसलिए फ़िलिप को प्रतीक्षा करनी थी । वह खड़ा-खड़ा गुजरती हुई भीड़ को देख रहा था और एथेलनी से जो बातें शाम को हुईं थीं उन पर विचार कर रहा था ।

एकदम से वह स्तम्भित रह गया । अचानक भीड़ में उसकी आँखें मिलड्रेड पर पड़ीं । हफ्तों से उसे मिलड्रेड का ध्यान भी नहीं आया था । वह दूसरी तरफ से आ रही थी और सड़क पार करने के लिए गाड़ियाँ निकल जाने का इन्तजार कर रही थी । मिलड्रेड किसी ओर नहीं देख रही थी । वह भड़कीले कपड़े पहिने हुए थी । थोड़ी देर में सड़क खाली हो गयी और वह सड़क पार करके एक ओर चल दी । फ़िलिप का दिल धड़क रहा था, उसने मिलड्रेड का पीछा किया । वह उससे बात नहीं करना चाहता था, लेकिन उसे आश्चर्य हो रहा था कि इतनी रात को वह कहाँ जा रही है ।

एक सड़क से दूसरी सड़क, दूसरी सड़क से तीसरी सड़क—मिलड्रेड यों ही घूम रही थी । फ़िलिप हैरान था । लगा, जैसे वह किसी का इन्तजार कर रही थी ! एक आदमी धीरे के आगे चला जा रहा था—मिलड्रेड तेजी से
था कि कहीं
उसकी तरफ देखती हुई ही हूँ, एथेलन । थोड़ा आगे जाकर वह रुकी कुछ देर में वही आदमी उसके मिलड्रेड उसे देखकर मुस्करा दी । आदमी एक बार उसकी आया । फ़िलिप की समझ में सब कुछ
लिए भी वहाँ प्रार्थना कर
आ गया—उ देर के लिए जैसे वह जड़ हो
तुम्हें क्या लाभ होगा प्रार्थना करने
गया था ।
के पहिले उन्होंने फ़िलिप की तरफ
ज र मिलड्रेड के कन्धे पर हाथ
आप चाय पीने के लिए अवश्य ठहरियेगा ।'

आश्चर्य में वह पीछे घूम गयी। फ़िलिप को लगा जैसे वह शरमा कर लाल हो गयी पर अन्धेरे में वह कुछ ज्यादा न देख सका। कुछ देर खामोशी से वे दोनों एक दूसरे की तरफ देखते रहे। अन्त में वह बोली—'तुम आज खूब मिले !'

फ़िलिप की समझ में न आया कि क्या कहे—उस पर तो जैसे बिजली टूटी पड़ी थी।

'यह क्या किया तुमने, मिलड्रेड ?'

मिलड्रेड कुछ न बोली। उसने फ़िलिप की तरफ से मुँह फेर लिया और जमीन की तरफ देखने लगी। फ़िलिप को लगा जैसे उसका चेहरा पीड़ा से बदल गया था।

'हम लोग कहीं बैठकर बात कर सकते हैं ?' फ़िलिप ने पूछा।

'मैं बात नहीं करना चाहती तुमसे। तुम मुझे छोड़कर चले क्यों नहीं जाते ?'

फ़िलिप सोचने लगा कि शायद मिलड्रेड को पैसे की बहुत सख्त जरूरत है।

'अगर तुम्हें किसी चीज की आवश्यकता है तो इस समय मेरे पास दो पौंड हैं—मैं तुम्हें दे सकता हूँ।' फ़िलिप एकदम से कह पड़ा।

'पता नहीं तुम्हारा क्या मतलब है ? मैं तो एक लड़की की प्रतीक्षा कर रही थी जो मेरे साथ ही काम करती है।'

'भगवान के लिए, अब तो झूठ मत बोलो !'

फ़िलिप ने कहा। उसने देखा मिलड्रेड रो पड़ी।

उसने फिर पूछा—'क्या हम कहीं जाकर बात नहीं कर सकते ? न हो तो तुम्हारे ही घर चले चलें !'

'नहीं, मैं मर्दों को अपने घर नहीं ले जा सकती ! तुम्हें मुझसे बात ही करनी है तो कल तुमसे मिल लूँगी !'

फ़िलिप जानता था कि अगर इस समय उसने उसे चला जाने दिया तो वह फिर कभी उसे न मिलेगी।

'लेकिन मैं तुमसे इसी समय बात करना चाहता हूँ। मुझे कहीं ले चलो', फ़िलिप ने आग्रह किया।

'अच्छा, एक जगह चल सकते हैं लेकिन वहाँ छः शिलिंग देने पड़ेंगे।'

'मुझे कोई एतराज नहीं !'

थोड़ी देर में वह एक मकान पर पहुँचे। मिलड्रेड ने तीन बार दरवाजा खटखटाया। एक औरत ने दरवाजा आहिस्ता से खोला। अन्धेरे रास्ते से होकर वह मकान के पीछे की तरफ़ एक कमरे में घुसे। फ़िलिप से दियासलाई लेकर मिलड्रेड ने गैस जला दिया। कमरा छोटा और बहुत गन्दा था। पर्दों और मेज़-कुर्सी पर धूल जमी थी। एक पलंग पड़ा था। मिलड्रेड कुर्सी पर बैठ गयी और फ़िलिप पलंग के किनारे पर। उसने देखा कि मिलड्रेड के चेहरे पर भद्दी-सी लाली थुपी हुई है और वह कमजोर और बीमार लग रही है। फ़िलिप की समझ में न आया कि वह क्या कहे—उसका गला रुँध गया था। फ़िलिप ने शरम से अपना मुँह ढँक लिया—

'यह सब क्या हो गया !'

'न मालूम तुम्हें क्यों इतना दुख हो रहा है ! मैं तो समझती हूँ कि तुम्हें होना चाहिये !'

फ़िलिप ने कोई उत्तर नहीं दिया। मिलड्रेड रो पड़ी।

'क्या तुम यह समझते हो कि यह सब मैं अपनी खुशी से करती हूँ ?'

'मुझे बहुत दुख है, मिलड्रेड !'

'तुम्हारे दुखी होने से मुझे क्या लाभ ?'

फ़िलिप फिर चुप हो गया। वह डरता था कि कहीं कोई ऐसी बात न कह दे जिससे मिलड्रेड यह समझे कि वह उसे धिक्कार रहा है।

'बच्ची कहाँ है ?' अन्त में उसने पूछा।

'मेरे पास है, यहीं—लन्दन में ! ब्राइटन में उसे नर्स के पास रखने को तो धन था नहीं मेरे पास। मैंने लन्दन में ही एक कमरा ले लिया है।'

'क्या किसी दूकान में तुम्हें नौकरी नहीं मिली ?'

'मुझे कहीं नौकरी नहीं मिल पायी। मैं कोशिश करते-करते मर गयी पर

काम कहीं नहीं मिला। एक दफा काम मिला भी था लेकिन हफ्ते भर में ही छूट भी गया। मेरी तन्दुरुस्ती अच्छी न थी।'

'अब भी तुम ठीक नहीं हो!'

'आज भी बाहर आने के काबिल मैं नहीं थी लेकिन मुझे पैसे की सख्त जरूरत थी इसलिए निकलना ही पड़ा।'

'तो तुमने मुझे क्यों नहीं लिखा?'

'जो कुछ हो चुका था उसके बाद मैं नहीं चाहती थी कि तुम्हें मालूम पड़े कि मैं तकलीफ में हूँ। मैं डरती थी तुम मुझे झिड़क दोगे।'

'मुझे तुम अब भी ठीक से नहीं जान सकीं!'

थोड़ी देर के लिए उसे याद आया कि कभी वह उससे कितना प्यार करता था और उससे फ़िलिप को कितनी पीड़ा मिली थी। लेकिन यह तो केवल एक याद ही थी—वह जानता था कि अब वह उससे बिल्कुल प्रेम नहीं करता। उसे मिलड्रेड के प्रेम से मुक्त होने की इस समय खुशी थी, हालांकि मिलड्रेड की हालत देखकर उसे बहुत दुख हो रहा था।

'तुम बहुत सज्जन हो, फ़िलिप। तुम जैसा मैंने आज तक कोई नहीं देखा।' कहते-कहते वह रुक गयी। फिर शरमाते हुए बोली—'तुमसे कहते अच्छा नहीं लगता लेकिन इस समय तुम मुझे कुछ दे सकोगे?'

'यह दो पाउंड हैं', फ़िलिप ने एक-एक पाउंड के दो सिक्के उसे दे दिये।

'मैं तुम्हें लौटा दूँगी।'

'नहीं, इसकी जरूरत नहीं!' फ़िलिप ने मुस्कराते हुए कहा।

जो कुछ फ़िलिप कहना चाहता था वह अब तक नहीं कह सका था। लगता था कि मिलड्रेड फिर अपने उसी गन्दे जीवन में लौट जायगी और वह रोक न सकेगा। दोनों खड़े थे।

'मैंने तुम्हें देर कर दी? अब शायद तुम लौटना चाहोगे!'

'नहीं—ऐसी कोई जल्दी नहीं!'

थोड़ी देर बाद मिलड्रेड बोली—'तुम बहुत अच्छे हो, फ़िलिप! तुमने आज भी कोई ऐसी बात नहीं कही जो मुझे बुरी लगती!'

मिलड्रेड फिर रोने लगी थी। फ़िलिप को याद आया कि जब मिलर ने उसे छोड़ दिया था तब भी वह उसके पास आकर इसी तरह रोयी थी।

'काश कि मैं इस प्रकार के जीवन को त्याग सकती! मुझे इससे सख्त नफ़रत है। मैं कुछ भी करने को तैयार हूँ इससे बचने के लिए। इससे अच्छा तो यही होता कि मैं मर जाती!'

मिलड्रेड बुरी तरह हिचक-हिचक कर रो रही थी। फ़िलिप उसे सांत्वना देने का प्रयत्न कर रहा था। वह भी विचलित हो उठा था मिलड्रेड के दुःख से। अचानक उसे कोई बात सूझ आयी और वह हर्ष से खिल उठा।

'सुनो! अगर तुम अपने इस जीवन से बचना चाहो तो मैं एक रास्ता बता सकता हूँ। आजकल मुझे धन की बहुत कमी है लेकिन मेरे पास एक मकान है जिसमें एक कमरा खाली ही रहता है। तुम अपनी बच्ची को लेकर उसमें रह सकती हो। एक नौकरानी मेरा काम करती है। तुम आ जाओगी तो वह खर्च बच सकता है और उतने में ही तुम आराम से खा-पी सकती हो।'

मिलड्रेड ने रोना बन्द कर दिया। वह उसकी तरफ देखने लगी।

'क्या जो कुछ हो चुका है उसके बाद भी तुम मुझे वापिस बुला रहे हो?' मिलड्रेड ने आश्चर्य में पूछा।

फ़िलिप ने कुछ झिझकते हुए कहा—'मैं चाहता हूँ कि तुम किसी भ्रम में न रहो। मैं तुम्हारे खाने-रहने का जो प्रबन्ध कर रहा हूँ उसके लिए मुझे कुछ ज्यादा खर्च नहीं करना पड़ेगा। लेकिन उसके बदले में मैं तुमसे कुछ भी नहीं चाहता—केवल तुम मेरा खाना पका दिया करना। बस।'

मिलड्रेड उठ खड़ी हुई और फ़िलिप की तरफ बढ़ी।

'तुम बहुत अच्छे हो—फ़िलिप!'

'जहाँ तुम हो वहीं रहो, मिलड्रेड।' फ़िलिप इस विचार मात्र से तिलमिला उठा कि मिलड्रेड उसे छुए भी।

'मैं केवल तुम्हारा मित्र हूँ और कुछ नहीं,' फ़िलिप ने कहा।

'तुम बहुत ही अच्छे हो—फ़िलिप!'

'तो क्या मेरी राय तुम्हें मंजूर है?' फ़िलिप ने पूछा।

'हाँ ! इस प्रकार के जीवन को छोड़ने के लिए मैं किसी भी बात के लिए तैयार हूँ ! मैं कब आ सकती हूँ ?'

'कल ही आ जाओ तो अच्छा है !'

फ़िलिप ने उसे अपने मकान का पता लिखकर दे दिया। रात काफी हो गयी थी और कोई सवारी न मिल सकने के कारण उसे पैदल चलना पड़ा। लेकिन वह बहुत खुश था—उसे रास्ते की दूरी बिल्कुल न खली।

दूसरे दिन फ़िलिप बहुत जल्दी उठ बैठा। उसने अपनी नौकरानी को जवाब दे दिया कि अब उसे उसकी जरूरत नहीं है। छः बजे के करीब मिलड्रेड अपना सामान लेकर फ़िलिप के मकान पर आ पहुँची। उसके पास बहुत थोड़ा-सा सामान था, कीमती चीजें तो उसे पहले ही बेंच देनी पड़ी थीं। उसकी गोद में उसकी बच्ची थी। मिलड्रेड बहुत कमजोर दिखाई पड़ रही थी।

मिलड्रेड अपने कमरे में अपना सामान ठीक करने चली गयी। फ़िलिप बाहरी कमरे में ही बैठा था। उसने पढ़ने का प्रयत्न किया लेकिन हर्ष के कारण उसका दिल नाच रहा था। वह कुर्सी पर पैर फैलाकर लेट गया और सिगरेट पीने लगा। पास में मिलड्रेड की बच्ची सो रही थी, उसे देखकर फ़िलिप के चेहरे पर सुख की मुस्कराहट छा गयी। उसे विश्वास था कि अब उसे मिलड्रेड से बिल्कुल प्रेम नहीं है—वह तो इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकता था कि कैसे अब वह मिलड्रेड के शरीर को छू भी सकेगा। उसे घृणा लगेगी। दरवाजा खटखटाकर मिलड्रेड कमरे में आयी।

'दरवाजा खटखटा कर अन्दर आने की तुम्हें जरूरत नहीं।'

मिलड्रेड ने कहा—'घर में खाने की तो कोई चीज है ही नहीं। मैं जाकर बाजार से कुछ सामान लिये आती हूँ।' फ़िलिप से कुछ पैसे लेकर वह बाजार से खाने की चीजें ले आयी और उसने खाना चूल्हे पर चढ़ा दिया।

खाना पक जाने पर मिलड्रेड ने मेज पर केवल एक आदमी के खाने की चीजें रखीं। फ़िलिप ने प्रश्न किया—

'एक जगह खाना क्यों लगाया ? क्या तुम्हें नहीं खाना है ?'

मिलड्रेड ने झिझकते हुए कहा—'मैंने सोचा शायद तुम मेरे साथ खाना न पसन्द करो।'

'आखिर क्यों?'

'मैं नौकरानी ही तो हूँ!'

'पागलपन की बातें क्यों करती हो? यह विचार तुम्हारे दिल में कैसे आया?' फ़िलिप ने सोचा कि वह पहले क्या थी और अब क्या हो गयी। उसे मिलड्रेड पर बहुत दया आयी। थोड़ी देर रुककर वह बोला—

'यह मत समझो कि मैं तुम्हारे ऊपर कोई एहसान कर रहा हूँ। रहने का स्थान और खाना तो मैं तुम्हें उस काम के लिए देता हूँ जो तुम मेरे लिए करती हो और इसमें तुम्हारे लिए बेइज्जती की कोई बात नहीं।'

मिलड्रेड ने कोई उत्तर नहीं दिया, लेकिन उसकी आँखों से आँसू तेजी से बहने लगे। फ़िलिप को थोड़ी-सी झुँझलाहट मालूम पड़ी लेकिन उसे फौरन ही यह ध्यान आया कि मिलड्रेड कमजोर है, बीमार है और थकी हुई है। फ़िलिप ने मिलड्रेड को दूसरी जगह खाना लगाने में मदद दी। दोनों खाना खाने लगे। मिलड्रेड को खुश करने के लिए उसने आधी बोतल ह्विस्की भी निकाल ली थी।

खाना खाने के बाद मिलड्रेड अपनी बच्ची को पलंग पर लिटाने के लिए ले जाने लगी।

'तुम भी जल्दी सो जाना, काफी थक गयी होगी,' फ़िलिप ने कहा।

'हाँ, लेकिन पहले जरा बर्तन धो लूँ।'

फ़िलिप अपना पाइप सुलगा कर पढ़ने लगा। बराबर के कमरे में किसी की उपस्थिति फ़िलिप को बहुत सुखद मालूम हुई। कभी-कभी उसे लगा करता था कि जैसे उसका अकेलापन उसे खा जायगा। कुछ देर बाद मिलड्रेड स्वयं कमरे में आयी। फ़िलिप ने उसकी तरफ मामूली ढंग से देखा। उन दोनों का साथ होना—एक कमरे में और एक दूसरे से इतनी दूर! फिलिप को कुछ अजीब-सा लगा, उसे झिझक मालूम हुई।

'कल मुझे सुबह नौ बजे ही काम से चले जाना है। साढ़े आठ तक नाश्ता बना लेने में असुविधा तो नहीं होगी तुम्हें ?'

'बिल्कुल नहीं। क्या तुम देर तक काम करोगे ?'

'हाँ !'

'अच्छा तो, गुड-नाइट !'

'गुड-नाइट !'

फ़िलिप ने मिलाने के लिए अपना हाथ नहीं बढ़ाया। मिलड्रेड चुपचाप दरवाजा बन्द करके अपने कमरे में चली गयी।

अगले दिन मंगल था। सुबह का गया हुआ फ़िलिप शाम को लौटकर आया। उसने देखा मिलड्रेड बैठी हुई उसके मोजे रफ़ू कर रही है।

'बहुत मेहनत कर रही हो ! क्या किया आज दिन में तुमने ?' फ़िलिप ने मुस्कराते हुए पूछा।

'मकान की सफाई की और फिर बच्ची को थोड़ी देर के लिए घुमाने ले गयी बाहर।'

बच्ची जमीन पर बैठी थी। वह फिलिप की तरफ बड़ी-बड़ी, रहस्यपूर्ण आँखों से देखकर मुस्करा रही थी। फ़िलिप जमीन पर बैठकर उससे खेलने लगा। शाम के सूरज की डूबती हुई किरनों ने कमरे में मधुर और कोमल प्रकाश भर दिया था।

खाना खाने के बाद फ़िलिप बाहर जाने के लिए तैयार होने लगा। मंगल के दिन वह पास के एक बार (शराबखाना) में जाता था। यह उसका नियम-सा था। फ़िलिप खुश था कि वह दिन मिलड्रेड के यहाँ आने के दूसरे ही दिन पड़ गया। वह नहीं चाहता था कि मिलड्रेड को उनके आपस के सम्बन्ध के बारे में कोई भी भ्रम रहे।

'क्या कहीं बाहर जा रहे हो ?' मिलड्रेड ने प्रश्न किया।

'हाँ ! मंगल की रात को मैं थोड़ा-सा मौज किया करता हूँ। अच्छा, कल सुबह तुमसे मुलाकात होगी। गुड-नाइट !'

हफ्ते में एक दिन उस 'बार' में जाने में फ़िलिप को बहुत खुशी होती थी।

वहाँ उसके कई दोस्त भी आया करते थे—लॉसन उसका पेरिस का मित्र, मैकेलिस्टर जो शेयरों का दलाल भी था और एक दार्शनिक भी, हेवर्ड अगर लंदन में होता था तो आता था। अक्सर हेवर्ड में और फ़िलिप में झगड़ा हो जाता था, खूब वाद-विवाद होता था लेकिन कभी लड़ाई न होती थी।

शाम को जब फ़िलिप वहाँ पहुँचा तो मैकेलिस्टर, हेवर्ड और लॉसन, तीनों वहाँ पहले से ही थे। आज वे लोग सब एक दूसरे से बहुत खुश थे। मैकेलिस्टर की सहायता से हेवर्ड ने और लॉसन ने सट्टे से पचास-पचास पाउंड कमाये थे। लॉसन तो बहुत ज्यादा प्रसन्न था। काफी लोग अब तक यह जान गये थे कि वह अच्छा कलाकार है—उसकी प्रशंसा भी होती थी, मगर आमदनी का हिसाब उतना अच्छा नहीं था।

'पैसा कमाने का यह ढंग तो बहुत ही उम्दा है। एक कौड़ी जेब से नहीं लगानी पड़ी और कमा इतना लिया!' वह बोला।

'पिछले मंगल को तुम नहीं आये—तुमने अपना नुकसान कर लिया,' मैकेलिस्टर ने फ़िलिप से कहा।

'कमाल करते हो, यार! तो मुझे लिखकर ही सूचना दे देते। मुझे तो पैसों की बहुत जरूरत है, आजकल!'

फ़िलिप को इन लोगों से ईर्ष्या हुई जिन्होंने बात की बात में इतना बहुत कमा लिया था। वह तो आजकल बहुत चिंतित रहता था। केवल छः सौ पाउंड बचे थे उसके पास और अभी उसे दो साल काटने थे। काश कि सट्टे से थोड़ा वह भी कमा लेता तो कितना अच्छा होता!

मैकेलिस्टर ने कहा—'चिन्ता क्यों करते हो! कोई न कोई अवसर फिर आयेगा।'

'लेकिन अगली बार भी मत भूल जाना!'

काफी देर तक वे लोग बातें करते रहे। फ़िलिप दूर रहता था इसलिए उसे सबसे पहले वहाँ से उठना पड़ा। घर पहुँचकर उसने देखा कि मिलड्रेड अभी सोयी नहीं है।

'तुम अब तक सोयी क्यों नहीं?'

'नींद नहीं लगी थी ! सोचा शायद तुम लौटकर आओ तो तुम्हें किसी चीज की जरूरत पड़े,' मिलड्रेड ने फ़िलिप की तरफ देखा; उसके चेहरे पर अजीब-सी मुस्कराहट चमक रही थी। फ़िलिप ठीक तरह से उसका मतलब नहीं समझ सका। उसे झिझक लगी, लेकिन वह बोला—

'अच्छा, गुड-नाइट !'

'क्या अभी से सो जाओगे ?'

'हाँ ! एक तो बज गया !'

मिलड्रेड ने फ़िलिप का हाथ अपने हाथों में ले लिया और उसकी आँखों में घूरती हुई वह बोली—'उस दिन तुमने मुझसे कहा था कि हमारा तुम्हारा सम्बन्ध केवल इतना ही होना चाहिये कि मैं तुम्हारा खाना बना दिया करूँ और बस ! क्या वास्तव में तुम्हारा मतलब यही था ?'

'हाँ !' फ़िलिप ने उत्तर दिया।

'नादानी मत करो, फ़िलिप ! ऐसा होना क्या सम्भव है ?' मिलड्रेड ने हँसते हुए कहा।

'नादानी नहीं ! मेरा मतलब ठीक वही था।'

'क्यों ?'

'मैं कह नहीं सकता ! लेकिन पुरानी बातें अब नहीं हो सकेंगी। हमारा तुम्हारा शारीरिक सम्बन्ध नहीं हो सकता। इसी शर्त पर मैंने तुम्हें यहाँ रहने का निमंत्रण दिया था।'

मिलड्रेड ने कंधे उचकाते हुए उत्तर दिया—'जैसी तुम्हारी मर्जी। मैं इसके लिए तुम्हारी खुशामद तो करूँगी नहीं।'

और दरवाजा जोर से बन्द करके वह कमरे के बाहर चली गयी।

समय इस प्रकार आराम से कटता रहा। दिन में फ़िलिप अस्पताल में काम करता था और शाम को कभी वह एथेलनी के यहाँ चला जाता था, कभी 'बार' में और अक्सर घर पर ही काम करता रहता था। मिलड्रेड ने भी अपने जीवन की नीरसता के खिलाफ कोई विद्रोह नहीं किया। कभी-कभी फ़िलिप उसे थियेटर ले जाता था। उसने अपने बीच के सम्बन्ध को मित्रता से आगे नहीं बढ़ने

दिया था। मिलड्रेड वहाँ रह सकती थी जब तक वह स्वयं न जाना चाहे या उसे काम न मिल जाय—इसमें फ़िलिप को कोई आपत्ति नहीं थी।

जुलाई के महीने में भाग्यवश फ़िलिप को कुछ धन का लाभ हुआ। मैकेलिस्टर की सलाह से उसने कुछ शेयर खरीद लिये थे। दिल में तो फ़िलिप डरता था कि कहीं कुछ गड़बड़ न हो जाये लेकिन आसानी से कुछ कमा सकने का लोभ भी तो कम नहीं होता। फिर भी फ़िलिप को शङ्का रहती ही थी।

एक दिन शाम को घर लौटते समय उसने अखबार खरीदा और फ़ौरन ही शेयर के पेज पर उसकी दृष्टि जम गयी। उसने देखा कि उसके शेयरों का मूल्य बढ़ गया है। खुशी से उसका दिल उछल पड़ा। वह जल्दी से गाड़ी लेकर घर भागा। फिर एक शङ्का यह भी हुई कि कहीं मैकेलिस्टर उसके लिए शेयर खरीदना ही भूल गया हो, तो! अगर उसने खरीदे हो तो वह तार से सूचना अवश्य देता।

घर में घुसते ही उसने मिलड्रेड से पूछा—'कोई तार आया है?'

'नहीं तो!' मिलड्रेड ने उत्तर दिया।

फ़िलिप का दिल बैठ गया—'तो कमबख्त ने मेरे लिए शेयर खरीदे ही नहीं! और मैं सोचे बैठा था कि मानो मुझे रुपये मिल ही गये।'

'क्यों, रुपये का करते क्या?'

'अरे, अब सोचने से क्या लाभ? मुझे बहुत आवश्यकता थी।'

मिलड्रेड हँस दी। उसने फ़िलिप के हाथ में एक तार रख दिया।

'मैं तो तुमसे मज़ाक कर रही थी। तार मैंने खोल लिया था।'

फ़िलिप ने उसके हाथ से तार का लिफाफा छीन लिया। मैकेलिस्टर ने सूचना दी थी कि उसने फ़िलिप के ढाई सौ शेयर नफे पर बेच दिये थे—रुपये कल मिलने वाले थे। एक क्षण के लिए फ़िलिप को मिलड्रेड के इस उपहास पर क्रोध आया लेकिन उल्लास की बड़ी-सी लहर में वह क्षणिक क्रोध बिल्कुल डूब गया।

वास्तव में यह बहुत ही अच्छा हुआ कि फ़िलिप को सट्टे में कुछ रुपये मिल गये। इधर कुछ दिनों से वह काफी चिन्तित रहता था धन की समस्या

को लेकर। यह केवल ख्याल मात्र था कि मिलड्रेड के साथ रहने से खर्च में वृद्धि न होगी। मिलड्रेड घर का प्रबन्ध करने में बिल्कुल चतुर न थी और उसके हाथ से धन का अपव्यय होता था। बच्ची को, मिलड्रेड को कपड़ों की तथा और चीजों की आवश्यकता पड़ती ही रहती थी। मिलड्रेड नौकरी ढूँढ़ने का भी कोई प्रयत्न नहीं करती थी। कभी कोई नौकरी मिलती भी थी तो या तो उसका वेतन मिलड्रेड को कम मालूम पड़ता था या काम पसन्द न आता था। फ़िलिप को इस बात का ज्ञान हो गया था कि मिलड्रेड वास्तव में काम ही नहीं करना चाहती। एक-आध बार फ़िलिप ने इस विषय में मिलड्रेड से कुछ कह भी दिया था। तब से तो मिलड्रेड नाराज भी हो गयी थी और पहिले से अधिक लापरवाह भी। दोनों में अब कभी-कभी झगड़ा भी हो जाता था। वह घर की देखभाल भी अब उतने ध्यान से नहीं करती थी। फ़िलिप को केवल एक यही आशा थी कि सट्टे से वह कुछ धन कमा ले। मिलड्रेड की तरफ़ से तो वह बिल्कुल उदासीन हो चुका था।

लेकिन दो-तीन सप्ताह के बाद ही फ़िलिप और मिलड्रेड का परस्पर व्यवहार जिसमें इधर कुछ दिनों से कड़ुवापन आ गया था, कटुता के शिखर पर पहुँच गया। फ़िलिप की उदासीनता से मिलड्रेड का क्रोध बढ़ता जा रहा था और एक दिन उबल पड़ा था।

मिलड्रेड फ़िलिप के विषय में अक्सर सोचा करती थी। उसे साफ़-साफ़ तो कुछ भी नहीं मालूम था लेकिन दिल में उसने कुछ धारणाएँ अवश्य बना ली थीं और इन पर वह मन ही मन में चिन्तन किया करती थी। उसने फ़िलिप को कभी ठीक से समझा नहीं था और न कभी उसे ज्यादा पसन्द ही किया था, लेकिन वह जानती थी कि वह एक बहुत शरीफ़ आदमी है। वह फ़िलिप से घृणा भी करती थी क्योंकि उसने फ़िलिप को इतना बेवक़ूफ़ बनाया था लेकिन फिर भी उससे उसे डर लगता था। जब वह इस बार फ़िलिप के साथ रहने आयी थी तो वह मानो बिल्कुल टूट चुकी थी—कितनी थक गयी थी वह! पेट भरने के लिए उसे जो काम करना पड़ता था, उससे उसे भयंकर घृणा थी। एक

पल को भी चैन-आराम नहीं। फ़िलिप के साथ आकर रहने में किराये की, खाने-पीने की समस्याएँ तो खत्म हो गयी थीं।

फ़िलिप के लिए वह बहुत कृतज्ञ थी; जब वह यह सोचती थी कि फ़िलिप को उससे कितना प्रेम था और उसने फ़िलिप के प्रेम का कितना अपमान किया था, कितना दुर्व्यवहार किया था उसके साथ, तब उसे पश्चाताप होता था। लेकिन फ़िलिप को खुश कर लेना कितना आसान था। उसे आश्चर्य हुआ था जब फ़िलिप ने फिर से पुराने सम्बन्ध स्थापित करने की बात को कतई मना कर दिया था। मिलड्रेड ने सोचा था कि चलने दे कुछ दिन इसी तरह, बाद में वह खुद ही उसके सामने प्रेम-याचना करेगा। तब वह भी मना कर देगी। मिलड्रेड को इस बात में कोई शङ्का नहीं थी कि फ़िलिप पर उसका जोर है। झगड़ा तो फ़िलिप कई बार उससे कर चुका था लेकिन हर बार क्षमा फ़िलिप ने ही माँगी थी उससे।

लेकिन इस बार फ़िलिप के व्यवहार से वह दुविधा में पड़ गयी थी। वह समझती थी कि फ़िलिप की उदासीनता केवल एक दिखावा मात्र है। लेकिन अपनी वह धारणा भी मिलड्रेड को सत्य न मालूम दी। उसे शङ्का हुई कि कहीं वह और किसी से तो प्रेम नहीं करने लगा है लेकिन यह बात भी असत्य निकली। यह जानकर तो मिलड्रेड को काफी सन्तोष भी हुआ। फिर क्या बात है? मिलड्रेड समझ नहीं पा रही थी। उससे प्रेम न करते हुए भी क्यों फ़िलिप ने उसे रखा है अपने यहाँ?

मिलड्रेड उन औरतों में थी जो केवल वासना को नारी और पुरुष के सम्बन्धों का आधार मानती हैं। दया, सहानुभूति और उदारता के गुणों से वह अनभिज्ञ थी। कभी वह यह कल्पना करती कि उसके लिए फ़िलिप का प्रेम आदर्श है, जैसा कि वह सस्ती रूमानी कहानियों में पढ़ चुकी थी। लेकिन वह ज्यादा अपने आपको धोखा नहीं दे सकी। फ़िलिप उसके साथ वह सब करने को बिलकुल तैयार नहीं था जो वह चाहती थी। और तब उसे पता लगा कि फ़िलिप को उसमें कोई दिलचस्पी नहीं है—वह चकित रह गयी। उसे याद

आया कि पहिले फ़िलिप उससे कितना प्रेम करता था और यह याद करके उसे क्रोध आया कि फ़िलिप उसका अपमान कर रहा है !

ठुकरायी हुई वासना ने मिलड्रेड के अन्दर प्रतिकार के शोले भड़का दिये ! वह उससे बदला लेना चाहती थी लेकिन उसकी समझ में नहीं आता था कि आखिर वह करे तो क्या ? फ़िलिप उसकी तरफ से इतना खिन्च क्यों गया है ? इतने दिनों में एक बार भी उसने उसे चूमा नहीं। और जब वह उसके नज-दीक जाती थी तो वह उससे ऐसे दूर भागता था जैसे उसे छूना भी पाप है ! उसके शरीर में फ़िलिप को पा लेने की भयङ्कर इच्छा जाग उठी थी और फ़िलिप की उदासीनता ने आँधी की तरह उस आग को और भी ज्यादा भड़का दिया था। वह हमेशा यह सोचती कि काश, फ़िलिप उसे एक बार भी कसके चूम ले—जोर से आलिंगन में बाँध ले !

एक दिन फ़िलिप लॉसन के जन्म-दिन की दावत में गया हुआ था। मिल-ड्रेड को मालूम था कि वह देर से लौटेगा। पलंग पर लेटे-लेटे कुछ ख्याल आया। उसने बाहर का दरवाजा ऐसे बन्द कर दिया कि जब फ़िलिप लौटे तो उसे दरवाजा खोलने के लिए मिलड्रेड को बुलाना पड़े।

फ़िलिप जब लौट कर आया तो उसने देखा कि दरवाजा खुल ही नहीं सकता। उसे क्रोध आया और उसने मिलड्रेड को आवाज दी। मिलड्रेड तो इसी बात की प्रतीक्षा में ही थी। उसने दरवाजा खोल दिया।

'यह दरवाजा भीतर से क्यों बन्द कर लिया था ? तुम्हें बेकार ही उठाना पड़ा।'

'मैं तो खोलकर ही सोयी थी, न मालूम कैसे बन्द हो गया।'

'अच्छा, जल्दी से जाकर सो जाओ नहीं तो सर्दी लग जायगी !'

फ़िलिप बैठक के कमरे में चला गया और उसने गैस जला दी। मिलड्रेड पीछे-पीछे कमरे में आ गयी। आग के पास जाती हुई वह बोली—'मैं जरा अपने पैर ताप लूँ—बर्फ़ की तरह ठंडे हो रहे हैं।'

फ़िलिप बैठ कर जूते उतारने लगा—उसकी आँखें चमक रही थीं और

गालों पर हल्की-सी सुर्खी थी। मिलड्रेड सोचने लगी कि फ़िलिप ने काफी पी ली है आज।

'क्यों—पार्टी में काफी मजा आया?' मिलड्रेड ने मुस्कराते हुए पूछा।

'हाँ, बहुत!'

फ़िलिप बहुत खुश था। उसने पाइप में तम्बाकू भरी और उसे जलाया।

'क्यों, अभी सोना नहीं है क्या?'

'नहीं—नींद जरा भी नहीं लगी है। आज खूब बातें हुईं लॉसन के यहाँ।'

थोड़ी देर बाद मिलड्रेड बोली—'क्या मैं बैठ सकती हूँ?' और उत्तर पाये बिना ही फ़िलिप की गोद में बैठ गयी। फ़िलिप ने उसे हटाने की कुछ कोशिश की लेकिन मिलड्रेड बैठी रही। उसने फ़िलिप के गले में हाथ डाल दिये।

'मुझ पर इतना अत्याचार क्यों कर रहे हो, फ़िलिप? मैं तुमसे बहुत प्रेम करती हूँ।'

'बेकार बातें मत करो!'

'मैं सच कह रही हूँ—मैं तुम्हें चाहती हूँ। मैं तुम्हारे बिना जिन्दा नहीं रह सकती।'

फ़िलिप ने अपने आपको मिलड्रेड की बाँहों से मुक्त कर लिया।

'अच्छा उठ पड़ो! तुम खुद भी मूर्खता की बातें कर रही हो और मुझे भी बेवकूफ बना रही हो!'

'मैं तुम्हें प्यार करती हूँ, फ़िलिप! मैंने अब तक तुम्हें जो भी तकलीफें दी हैं सबका बदला देना चाहती हूँ। तुम्हारे साथ इस तरह दूर-दूर रहना तो अस्वाभाविक है।'

फ़िलिप उसे कुर्सी पर छोड़कर उठ खड़ा हुआ।

'मुझे बहुत अफसोस है, पर वह समय अब बीत चुका है।'

मिलड्रेड जोर से सिसक पड़ी—'मुझ पर इतना जुल्म मत करो—फ़िलिप!'

'अब मैं तुमसे प्रेम नहीं कर सकता। बीती हुई बातें—मिलर, ग्रिफ़िथ्स—हमारे बीच में चट्टान बनकर हमेशा खड़े रहेंगे।'

मिलड्रेड ने फ़िलिप के हाथों को चूम लिया।

'यह मत करो!' फ़िलिप ने हाथ खींच लिया।

'मैं इस तरह नहीं रह सकती। अगर तुम मुझसे प्रेम नहीं करते तो मेरा यहाँ से चला जाना ही अच्छा होगा।'

'मूर्खता की बातें मत करो। तुम जाओगी ही कहाँ? तुम हमेशा यहाँ रह सकती हो, लेकिन केवल इस शर्त पर कि हमारे तुम्हारे सम्बन्ध केवल मित्रता के ही रहें।'

फिर अचानक मिलड्रेड हँस पड़ी और फ़िलिप के निकट आते हुए बोली—'अरे पागल मत बनो। तुम तो घबड़ाते हो। मैं तुम्हें बहुत सुख दे सकती हूँ।'

उसने अपने गालों से फ़िलिप के गाल सहला दिये। फ़िलिप को उसकी हँसी में वासना की गन्दगी दिखाई दी और उसकी आँखों की चमक ने फ़िलिप के अन्दर घृणा जगा दी। वह पीछे हटता हुआ बोला—'नहीं! कभी नहीं!'

लेकिन मिलड्रेड ने फ़िलिप को हटने न दिया। उसने अपने ओठ फ़िलिप के ओठों पर रख दिये। फ़िलिप ने जोर से उसे ढकेल दिया—'मुझे तुमसे नफ़रत है!'

'मुझसे?' मिलड्रेड उठकर सीधी खड़ी हो गई, उसका चेहरा तमतमा उठा और आँखों में क्रोध के अंगारे धधक पड़े—'तुम मुझसे नफ़रत करते हो!' वह गुस्से में हँसी और फिर जोर से चीख कर फ़िलिप को बुरा-भला कहने लगी। उसकी भाषा इतनी गन्दी थी कि फ़िलिप को आश्चर्य हुआ।

'मैंने कभी तुम्हारी परवाह नहीं की। मैंने हमेशा तुम्हें बेवकूफ बनाया—हमेशा तुमसे नफ़रत की। तुमसे मैं ऊब गयी थी—बिलकुल! मैं और ग्रिफ़िथ्स तुम पर हँसते थे, हँसते थे क्योंकि तुम इतने मूर्ख हो—मूर्ख! मूर्ख!'

वह चिल्लाती रही—फ़िलिप को गालियाँ देती रही। अन्त में वह दरवाजा खोलकर अपने कमरे में जाने को हुई तो दाँत पीसकर बोली—

'लँगड़ा ! अपंग !'

मिलड्रेड जानती थी कि फ़िलिप को इससे ज्यादा चोट किसी बात से नहीं पहुँच सकती और वह फ़िलिप को ज्यादा से ज्यादा चोट पहुँचाना चाहती थी।

दूसरे दिन फ़िलिप देर से सोकर उठा। उसने मिलड्रेड को आवाज दी, पर उसने कोई उत्तर नहीं दिया। वह नहा चुका, अस्पताल जाने के लिए कपड़े बदल चुका लेकिन फिर भी मिलड्रेड नहीं उठी और न उसने फ़िलिप के लिए नाश्ता ही बनाया। फ़िलिप ने खुद ही से अपने लिए चाय बनायी—और कुछ खाकर जल्दी से गाड़ी पकड़ने के लिए भागा। उसे जरा देर हो गयी थी।

'अस्पताल पहुँचकर आज उसे बहुत प्रसन्नता हुई।

नर्स ने पूछा—'आज बड़ी देर से आये ?'

'रात देर तक बाहर रहा था।'

'मालूम ही पड़ता है !' नर्स ने मजाक किया।

फ़िलिप भी हँसते हुए काम में लग गया। वह रोगियों का हाल पूछता, देखता इधर-उधर घूमता रहा। सब रोगी उसे बहुत पसन्द करते थे। वह दिल से उनकी सेवा-सुश्रुषा भी तो करता था। दोपहर में उसने अस्पताल के क्लब में ही भोजन किया। अफ्रीका में युद्ध हो रहा था—उसी पर वहाँ बातें होती रहीं। मैकेलिस्टर ने उससे कहा था कि सन्धि होने के कुछ पहले ही उन्हें शेयर खरीद लेने चाहिये तब काफी लाभ हो सकता है। तीस पाउंड एक बार सट्टे में कमाकर फ़िलिप को बहुत आनन्द आया था; अब वह सौ-दो सौ कमाना चाहता था। मैकेलिस्टर से उसने कह रखा था कि जब मौका आये वह उसके लिए शेयर खरीद ले।

शाम को जब वह घर लौटा तो रास्ते में सोच रहा था कि मिलड्रेड का कैसा व्यवहार होगा। नाराज न हो तभी अच्छा है और अगर वह अनमनी हुई तब तो मुसीबत ही है। फरवरी की शाम थी। वातावरण में एक चेतना-सी थी, एक गति—मानो लम्बे जाड़ों के बाद प्रकृति चपल हो गई हो। जैसे हर चीज गहरी नींद से जाग रही हो। फ़िलिप चाहता था कि वह थोड़ी देर और

चुनता रहे। उसे अभी से अपने घर लौटना अरुचिकर लग रहा था। लेकिन एकाएक उसे मिलड्रेड की बच्ची को देखने की बहुत प्रबल इच्छा हुई। उस बच्ची से फ़िलिप को बहुत प्यार था। मिलड्रेड को कभी आश्चर्य भी होता था कि किसी दूसरे आदमी के बच्चे से उसे इतना स्नेह क्यों है।

घर पहुँच कर उसने देखा कि खिड़कियों में अँधेरा है। उसे आश्चर्य हुआ। उसने ऊपर चढ़कर खटखटाया—कोई उत्तर नहीं। वह दरवाजा खोलकर अन्दर गया। बैठक में आकर उसने बत्ती जलायी। वह स्तम्भित रह गया। सारे कमरे में चीजें टूटी-फूटी पड़ी थीं। उसे क्रोध आया। वह मिलड्रेड के कमरे में गया—वह भी खाली और अन्धेरा था। रोशनी में उसने देखा कि वह अपना सब सामान लेकर जा चुकी है। बाकी घर में हर चीज बर्बाद कर दी गई थी। खाने के बर्तन तोड़ दिये गये थे, कुर्सियों की गद्दियाँ, बिस्तर, तकिये सब चाकू से फाड़ दिये गये थे। शीशा चूर-चूर हुआ पड़ा था, ओढ़ने के कम्बलों को काट डाला गया था, चित्रों को फ्रेम में से निकाल कर फाड़ डाला गया था। सब कुछ टूटा-फूटा पड़ा था—एक भी चीज नहीं बच सकी थी।

फ़िलिप जैसे अचम्भे से धरती में गड़ गया हो। मिलड्रेड कोई पत्र भी नहीं छोड़ गयी थी। केवल उसके क्रोध से उपजी हुई अराजकता ही उसकी निशानी थी। हर चीज का नाश हो गया था। फ़िलिप को क्रोध नहीं आया—दुख नहीं हुआ। घर में खाने के लिए कुछ था नहीं। वह बाहर चला गया और थोड़ी देर में भोजन करके लौटा। वह शांत था, केवल बच्ची का ध्यान आते ही उसके दिल में पीड़ा हुई थी। फिर उसे मिलड्रेड का ख्याल आया; उसके जाने का उसे रंज नहीं था—वह तङ्ग आ चुका था उससे।

'भगवान से प्रार्थना है कि वह अब कभी न मिले!' फ़िलिप जोर से कह पड़ा।

१३

मिलड्रेड के चले जाने के बाद फ़िलिप ने तय कर लिया कि अब वह अपने इस मकान को छोड़ देगा। धन की उसे बहुत कमी थी और खर्च कम करने के लिए उसे कम किराये का कमरा लेना चाहिये था। उस मकान में रहकर तो उसे मिलड्रेड की कटु स्मृति और भी ज्यादा और बार-बार सताती रहेगी। इसलिए दूसरे ही दिन उसने अपना टूटा-फूटा सामान कबाड़ी को बेच दिया। फिर उसी मकान में कमरा ले लिया जहाँ वह पहली बार रह चुका था जब वह डाक्टरी पढ़ने आया था। सबसे ऊपर की मंज़िल में उसने एक छोटा-सा कमरा लिया था।

इस घटना के कुछ ही दिनों बाद विपत्ति के घने बादल फ़िलिप के सिर पर मँडराने लगे।

अफ्रीका में लड़ाई के आसार अच्छे दिखाई पड़ रहे थे। जनरल रॉबर्टस् ने बोअर सेनाओं पर कई स्थानों पर विजय प्राप्त कर ली थी। मार्च के शुरू में ब्लम फोन्टेन पर अंग्रेजों ने अधिकार कर लिया था।

शराबखाने में फ़िलिप की मुलाकात मैकेलिस्टर से हुई। मैकेलिस्टर बहुत प्रसन्न था। अब क्या है! अब तो केवल यह रह गया है कि जनरल रॉबर्टस् प्रिटोरिया पर भी अधिकार प्राप्त कर लें। फिर तो सन्धि हो ही जायगी। इसी आशा पर शेयरों की कीमतें बढ़नी शुरू हो गयी थीं। बाजार इतना उठेगा कि बस फिर चाँदी है।

'अभी खरीद लो शेयर। यही सबसे अच्छा अवसर है', मैकेलिस्टर ने फ़िलिप से कहा।

फ़िलिप को मैकेलिस्टर की सलाह में पूर्ण विश्वास था। एक बार उसके कारण ही तो उसने तीस पाउंड कमाये थे।

'सन्धि की सम्भावना होते ही शेयरों का मूल्य उठने लगा है। मैं तो अपना सब कुछ लगा दूँगा इस बार। इस सट्टे में तो कोई खतरा ही नहीं। लाभ बिल्कुल पक्का है,' मैकेलिस्टर ने जोरों से कहा।

अब मौका है जब खूब कस करके धन कमाया जा सकता है; और फिर कोई डर भी तो नहीं। सन्धि होते ही शेयरों के मूल्य कई प्रतिशत बढ़ जायँगे और सन्धि होना बस अब कुछ ही दिनों की बात है।

मैकेलिस्टर ने तीन सौ शेयर अपने लिए खरीदे थे और उतने ही फ़िलिप को खरीदने की भी राय दी थी। फ़िलिप फौरन ही राजी हो गया था।

इसके बाद फ़िलिप रोज समाचार-पत्रों में शेयर बाजार का हाल बड़ी चिन्ता से देखा करता था। एक-दो दिन बाजार की हालत स्थिर रही लेकिन उसके बाद गड़बड़ होना शुरू हुआ। अफ्रीका में युद्ध की हालत उतनी अच्छी न थी जितनी लोगों को आशा होने लगी थी। फ़िलिप के शेयरों का भाव कुछ गिरा था और फ़िलिप को शंका होने लगी थी। मैकेलिस्टर को अभी उतनी ही आशा थी कि कुछ ही दिनों में जनरल रॉबर्टस् को पूर्ण सफलता मिल जायेगी और सन्धि हो जायगी। फ़िलिप को मैकेलिस्टर ने यही सलाह दी कि अभी शेयरों को बेचना मूर्खता होगी। थोड़े दिन रुक जाने से लाभ होना निश्चित है। शेयर रोकने के लिए फ़िलिप को चालीस पाउंड देने पड़े। फ़िलिप बहुत चिन्तित था लेकिन शेयर रोकने के अतिरिक्त चारा ही क्या था।

दो-तीन सप्ताह तक बाजार में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। अफ्रीका में युद्ध खत्म नहीं हुआ था। अंगरेजों की एक-आध जगह हार भी हुई थी और फ़िलिप के शेयरों का मूल्य और भी गिर गया था। सन्धि होने की आशा लुप्त हो गयी थी। शेयर बाजार में निराशा छा गयी थी। अब तो मैकेलिस्टर भी निराश होने लगा था।

फ़िलिप को बहुत चिन्ता थी। उसके लिए तो सट्टे में नुकसान हो जाने का मतलब मृत्यु थी। वह रात को सो नहीं पाता था, नाश्ता न खाकर वह अब

केवल चाय और डबल रोटी पर गुजर कर लेता था। समाचार-पत्रों से खबरों के लिए वह हमेशा उत्सुक रहता था। शेयरों की हालत यह थी कि या तो उनका भाव स्थिर रहता था या गिर जाता ; उठने की कभी कोई सम्भावना नहीं होती थी। उसकी समझ में नहीं आता था कि क्या करे। अगर वह इस समय बेचता है तो उसे साढ़े तीन सौ पाउंड की हानि होगी और उसके पास कुल आठ पाउंड बच रहेंगे। वह अपने आपको धिक्कारने लगा कि उसने सट्टा खेलने की मूर्खता ही क्यों की !

लेकिन शायद युद्ध की परिस्थिति में कोई परिवर्तन हो जाय और मूल्य बढ़ जाय। अभी बेचना तो ऐसी हालत में ठीक न होगा। फ़िलिप अब यह नहीं चाहता था कि उसे कोई लाभ हो—वह चाहता था कि कम से कम उसे नुकसान तो न हो। केवल यही एक सूरत थी जिससे वह अपनी पढ़ाई पूरी कर सकेगा। अगर पूरा नुकसान हो गया तो क्या होगा ?

अप्रैल के शुरू में वह मैकेलिस्टर से मिलने गया। मैकेलिस्टर से मिलकर उसका दुख और चिन्ताएँ हल्की हो जाती थीं। 'बार' में हेवर्ड के अतिरिक्त उस समय कोई नहीं था।

फ़िलिप के बैठते ही हेवर्ड बोला—'मैं इतवार को अफ्रीका जा रहा हूँ ! युद्ध में भर्ती हो गया हूँ।'

हेवर्ड से फ़िलिप को इस प्रकार की कोई आशा नहीं थी। हेवर्ड टूपर होकर जा रहा था।

'आखिर तुम जा ही क्यों रहे हो ?'

'पता नहीं। बस यही सोचा कि मुझे लड़ाई में चला जाना चाहिये।'

इतने में ही मैकेलिस्टर भी आ गया। बोला—'कैरी ! मैं तुमसे मिलना ही चाहता था। कम्पनी वालों का ख्याल है कि बाजार की हालत बहुत खराब है—अब उन शेयरों को रोकना मूर्खता होगी।'

फ़िलिप का दिल बैठ गया—'तो फिर उन्हें बेच दो।'

'बेचना बहुत मुश्किल है। बाजार की हालत बहुत खराब है और कोई खरीदने को तैयार भी नहीं है।'

'क्यों शेयरों का भाव तो लगा है !'

'हाँ ! लेकिन उस पर खरीदता कौन है ?'

'तो क्या उनका कोई मूल्य ही नहीं !'

'है क्यों नहीं; पर कोई खरीद तो नहीं रहा है !'

'जो कुछ भी मिल सके बेच दो !' फ़िलिप ने अन्तिम उत्तर दे दिया ।

मैकेलिस्टर ने फ़िलिप की तरफ गौर से देखा । उसे लगा कि फ़िलिप इस नुक़सान को बर्दाश्त नहीं कर सकेगा ।

'मुझे बहुत अफसोस है, दोस्त, लेकिन हम सब एक ही मुसीबत के शिकार हैं । किसे मालूम था कि युद्ध इस तरह चलता ही रहेगा ।'

'कोई बात नहीं ! यह तो मेरे भाग्य का दोष है !'

अन्दर से फ़िलिप को लगा कि जैसे वह मर गया है—बुरी तरह सिर चकरा रहा था उसका । लेकिन ऊपर से वह खूब हँसता रहा । वह नहीं चाहता था कि वे लोग उसे कमजोर समझें ।

दूसरे दिन शाम को फ़िलिप का हिसाब बन कर डाक से आया । सब नुकसान चुकाने के बाद उसके पास केवल सात पाउंड बच रहे थे । सात पाउंड बचे···! सात पाउंड···! फ़िलिप का सिर घूम गया । उसे इतना सन्तोष था कि नुकसान भुगतने के लिए तो उसके पास धन था । फ़िलिप की आँखों के सामने अँधेरा छा गया ।

फ़िलिप के वे सात पाउंड लगभग डेढ़ महीने चले । उसे कुछ न सूझा तो उसने अपने चाचा को लिखा कि कुछ कारणों से उसका रुपया खतम हो गया है और अब उनकी मदद के बिना उसकी पढ़ाई का पूरा होना भी असम्भव है । उसने यह लिखा कि वे उसे डेढ़ सौ पाउंड उधार दे दें, जिन्हें वह धीरे-धीरे किश्तों में लौटा देगा ।

चाचा ने उसकी सहायता करने से बिल्कुल इनकार कर दिया । फ़िलिप को कभी यह खयाल भी नहीं आया था कि चाचा पैसा देने से इनकार कर देंगे । उनके इस उत्तर पर उसे आश्चर्य भी हुआ और क्रोध भी आया । लेकिन इसके बाद फिर वही परेशानी—चाचा की सहायता के बगैर तो वह पढ़ाई नहीं चला

सकेगा। फ़िलिप बुरी तरह घबरा गया। उसने फिर चाचा को एक पत्र लिखा। उसने उन्हें समझाने का भरपूर प्रयत्न किया कि उसकी स्थिति बहुत खराब है और उसका भविष्य बिगड़ जायगा अगर उन्होंने सहायता नहीं की। लेकिन चाचा के ऊपर फ़िलिप की व्यथाओं का कोई प्रभाव नहीं पड़ा—उन्होंने उत्तर दिया कि उसे अब खुद ही कमाना चाहिये, वे उसे एक कौड़ी भी नहीं दे सकते।

अब कोई रास्ता नहीं था। फ़िलिप ने अपने कपड़े गिरवी रखे, और एक वक्त खाना शुरू कर दिया। वह खाना भी इतना कम होता था कि उसे रात को भूखा ही सोना पड़ता था। एक बार उसने सोचा कि लॉसन से उधार माँग ले लेकिन उसे डर था कि कहीं वह मना न कर दे। अन्त में वह एक दिन पाँच पाउंड माँग ही बैठा। लॉसन ने बड़ी खुशी से उसे कर्ज दे दिया लेकिन साथ ही यह भी कहा—'मेरी हालत भी आजकल बहुत खराब है। हफ्ते भर में लौटा दो तो अच्छा हो।'

फ़िलिप को मालूम था कि वह लौटा नहीं सकेगा। शरमा कर लॉसन को दो ही दिनों में उसके पाँचों पाउंड लौटा आया। लॉसन उसी समय भोजन करने जा रहा था, उसने फ़िलिप को भी निमंत्रण दिया। कई दिनों बाद अच्छा खाना मिला था फ़िलिप को—दिल में इतनी खुशी थी कि वह जी भर कर खा भी नहीं सका। इतवार को एथेलनी परिवार के साथ वह भोजन कर सकेगा। वह उन लोगों को भी नहीं बताना चाहता था कि उस पर क्या मुसीबतें आ पड़ी हैं; वे लोग उसे खाता-पीता आदमी समझते थे और फ़िलिप को इस बात की शंका थी कि कहीं उसकी विपन्नता का हाल मालूम होने पर उस परिवार में उसका आदर-सत्कार कम न हो जाय।

हालाँकि फ़िलिप कभी भी बहुत सम्पन्न नहीं रहता था लेकिन धन की कमी के कारण खाना तक न खा सकने की कल्पना भी नहीं की थी उसने। उसे यह विश्वास नहीं होता था कि जो कुछ हो रहा है वह सत्य है—उसे धुँधली-सी आशा थी कि कुछ न कुछ ऐसा अवश्य हो जायगा जिससे उस संकट का अन्त हो जाय। उसे लगता था कि यह सब एक भयानक स्वप्न है लेकिन वह स्वप्न कभी खत्म नहीं हुआ। यह तो कड़ुवा यथार्थ था। उसे मालूम था कि हफ्ते

भर में उसके पास कौड़ी भी नहीं बचेगी। उसने नौकरी ढूँढ़ने का प्रयत्न किया लेकिन कहीं कोई आशा नहीं दिखाई दी। वह सेना में भी भर्त्ती नहीं हो सकता था। उसे कोई और नौकरी भी नहीं मिली।

एक-दो दफा आत्महत्या का विचार उसके दिमाग में आया। अस्पताल से कोई जहर लेकर वह बहुत आसानी से अपने जीवन का अन्त कर सकता था। यह सोचकर बड़ा सन्तोष होता था उसे कि इस प्रकार सब दुःखों का, सारी मुसीबतों का अन्त हो सकता है। लेकिन आत्म-हत्या में उसका उतना विश्वास नहीं था। वह बस यही चाहता था कि किसी से अपने सारे दुःख और कष्ट कह-कर जी हल्का कर ले लेकिन ऐसा करने की हिम्मत भी नहीं थी उसे। किसी से भी अपना दुःख कहते हुए उसे शरम और झिझक लगती थी।

वह काम खोजता रहा। तीन हफ्ते का किराया उस पर चढ़ गया था। उसने मकान मालकिन से कह दिया था कि महीना खत्म होने पर उसे रुपया मिलेगा। मकान मालकिन चुप रही। जब महीना भी खत्म हो गया तो उसने फ़िलिप से कहा कि अगर वह कुछ दे दे तो अच्छा हो। फ़िलिप ने फिर बहाना किया कि वह चाचा से चिट्ठी लिखकर रुपये मँगा रहा है और शनिवार तक पूरा किराया दे देगा।

'देखिये, शनिवार तक आप किराया नहीं देंगे तो मजबूरन मुझे आपके अस्पताल के सेक्रेटरी से शिकायत करनी पड़ेगी।'

'आप चिन्ता न करें। सब ठीक हो जायगा।'

कुछ देर बाद मकान मालकिन बोली—'आप चाहें तो नीचे आ जाइये मेरे यहाँ। खाना तैयार है।'

'धन्यवाद, मिसेज हिगिन्स ! मुझे बिल्कुल भूख नहीं लगी है।' फ़िलिप बोला। उसका गला आँसुओं से रुँध गया था।

'बहुत अच्छा !' मकान मालकिन चली गयी।

फ़िलिप पलंग पर गिर पड़ा। उसने मुट्ठियाँ कसके भींच लीं ताकि वह रो न पड़े।

शनिवार भी आ गया। उस दिन फ़िलिप ने किराया चुकाने का वादा

किया था। उसे आशा थी कि शायद कोई नौकरी उसे मिल जाय लेकिन वैसा हुआ नहीं। ऐसी परेशानी तो उसने कभी नहीं उठायी थी। वह तो कभी-कभी यह भी सोचने लगता था कि यह सब केवल एक भयंकर परिहास है। उसके पास सिर्फ कुछ पैंस बच रहे थे और भी उसके पास ऐसा कुछ था भी नहीं कि जिसे बेचकर उसे कुछ मिल जाता। जो कुछ था, उसे तो वह पहले ही गिरवी रख चुका था।

जून का महीना था—बड़ी सुहावनी रात थी। फ़िलिप ने निश्चय किया कि वह सारी रात बाहर ही काट देगा। कैसे मुँह दिखाता वह मकान मालकिन को? धीरे-धीरे वह दरिया के किनारे चलने लगा। काफी दूर चल चुकने के बाद वह थक गया और एक बेंच पर बैठकर सो गया। नींद में उसे लगा जैसे कोई पुलिस का सिपाही उसे झकझोर कर उठा रहा है और उसे वहाँ से जाने को कह रहा है। वह अचानक उठ पड़ा लेकिन आस-पास में कोई नहीं था। वह चल पड़ा लेकिन कुछ दूर जाकर उसे फिर नींद मालूम पड़ी, परन्तु फिर बेंच पर उसे नींद नहीं आ सकी।

रात बहुत लम्बी मालूम दी फ़िलिप को—वह काँप गया। उसकी कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। नदी के किनारे बेंच पर सोने में उसे बहुत शर्म महसूस हुई और उसे अँधेरे में भी लगा कि जैसे लाज से उसका मुँह सुर्ख हो गया। इस दुर्गत से अच्छा तो यह है कि वह आत्म-हत्या कर ले। ऐसे कब तक काम चल सकेगा? उसने तो कभी स्वार्थ नहीं देखा था, हमेशा लोगों की सहायता ही की थी। फिर क्या जो कुछ उसके साथ हो रहा था, महान अन्याय नहीं था?

फ़िलिप को केवल अब एक ही आशा रह गयी थी कि उसके चाचा की मृत्यु होने पर उसे कुछ सम्पत्ति मिलेगी उसने सोचा—'चाचा की मृत्यु तक तो किसी न किसी तरह काम चलाना ही पड़ेगा।'

इस तरह फ़िलिप ने कई दिन काट दिये। खाना न खा सकने के कारण वह बहुत कमजोर हो गया था। उसमें इतनी ताकत भी नहीं रह गयी थी कि वह इधर नौकरी ढूँढ़ने के लिए पैदल घूमता फिरे। वह सारे लंदन में नौकरी

की तलाश में भटकता फिरा लेकिन हर जगह उसे इनकार ही मिला। लॉसन के पास भी वह नहीं गया क्योंकि उसे फ़िलिप को पाँच शिलिंग वापस करने थे। वह अपने दुःखों के प्रति उदासीन-सा हो गया। उसकी शक्ति बहुत क्षीण हो गयी थी।

कई दिन बाद एक रात को वह अपने कमरे में कमीज बदलने गया। रात के तीन बजे वह चोरों की तरह फिर कमरे में घुसा ताकि उसे कोई देख न ले और पाँच बजे फिर छिपकर निकल आया। कमरे में वह कुछ देर पलंग पर लेटा। पलंग पर वह कई दिनों से नहीं लेटा था। उसका सारा शरीर पीड़ा से तड़प उठा। उसे इतना आनन्द आया कि सो जाय। लेकिन वहाँ से तो उसे जल्दी ही भागना था—चोरों की तरह। वह सो कैसे सकता था?

समय मानों अनन्त लगा फ़िलिप को। दिन काटे नहीं कटते थे। फ़िलिप बेसब्री से इतवार की प्रतीक्षा कर रहा था ताकि वह एथेलनी के यहाँ जा सके। वहाँ तो भोजन मिल ही जायगा उसको। खाने के बाद वह एथेलनी को अपने संकट की बात भी बता देगा। एथेलनी तो स्वयं इस प्रकार के कष्ट उठा चुका था; वह फ़िलिप की सहायता अवश्य करेगा। फ़िलिप बार-बार यह सोचता था कि कैसे वह एथेलनी से यह बातें कह सकेगा। उसे शङ्का होती थी कि कहीं एथेलनी भी इधर-उधर की बातें करके उसे टाल न दे। वह इस भ्रम के जल्दी टूटने की सम्भावना से बचना चाहता था—इसी कारण वह इतवार से पहले एथेलनी के यहाँ जाने के लालच को टाल रहा था। अपने मित्रों पर से फ़िलिप का विश्वास उठ गया था।

शनिवार की रात को बहुत कड़ाके की सर्दी थी। फ़िलिप को बहुत ज्यादा कष्ट हुआ। शनिवार की दोपहर से एथेलनी के यहाँ पहुँचने तक उसने कुछ न खाया था।

एथेलनी के घर पहुँचकर फ़िलिप ने घंटी बजायी। किसी बच्चे ने देखा कि फ़िलिप है तो दौड़कर दरवाजा खोल दिया। सब बच्चों ने उसके सूखे हुए चेहरे को स्नेह से चूम लिया। फ़िलिप का दिल भर आया। कष्ट में जरा-सी

सहानुभूति भी दिल को हिला देती है। उन लोगों ने पूछा कि वह पिछले इतवार को क्यों नहीं आया। उसने बहाना बना दिया कि वह बीमार पड़ गया था।

एथेलनी ने भी भावपूर्ण ढंग से पूछा—

'पिछले इतवार को क्यों नहीं आये ?'

उसके सामने बीमारी का बहाना बनाते हुए फ़िलिप को बहुत झिझक मालूम हुई। पता नहीं क्यों ? मिसेज एथेलनी ने भी बड़ी फ़िक्र से फ़िलिप की तबीयत का हाल पूछा।

'खाना अभी दस मिनट में बन जाता है। तब तक तुम्हारे लिए दूध और अंडा भेजे देती हूँ।'

फ़िलिप ने शरमाते हुए उत्तर दिया—'मुझे इतनी भूख थोड़े ही लगी है।'

सैली कमरे में मेज पर खाने की चीजें लगाने आयी। फ़िलिप ने उससे मजाक किया। परिवार में इस बात पर हमेशा मजाक चलता था कि सैली बड़ी होकर खूब मोटी हो जायगी।

कुछ देर में खाना मेज पर लग गया। फ़िलिप सोचता था कि उसे बहुत कस के भूख लगी होगी लेकिन खाना सामने आने पर वह ज्यादा नहीं खा सका। वह बहुत थका हुआ था। उसने इस बात पर विशेष ध्यान नहीं दिया कि स्वभाव के विपरीत आज एथेलनी बहुत कम बातें कर रहा था। कभी-कभी फ़िलिप खिड़की के बाहर देखने लगता था और उसका दिल काँप जाता था। बहुत ज्यादा ठंड थी, तूफ़ानी हवा चल रही थी और कभी-कभी पानी की बौछार भी आ जाती थी। फ़िलिप सोच रहा था कि आज की रात वह कहाँ और कैसे काटेगा ? दस बजे तो उसे वहाँ से चले ही जाना पड़ेगा, क्योंकि उस समय तक उस परिवार में सब सो जाते हैं। उस मौसम में उस अंधेरे में, उस ठण्ड में वह रात कैसे बाहर काट सकेगा ?

खाना खत्म हो गया। सैली खाने के बर्तन उठाकर ले गयी। एथेलनी ने फ़िलिप को एक सिगार दिया। सिगार का धुँआ अन्दर लेने में फ़िलिप को बहुत आनन्द आया। एथेलनी ने सैली से कहा कि जाते समय वह दरवाजा बन्द करती जाय।

'अब हम अकेले हैं—यहाँ कोई न आ सकेगा,' एथेलनी ने कहा। फ़िलिप को आश्चर्य हो रहा था।

'मैंने तुम्हें पिछले इतवार को पत्र लिखा था लेकिन जब तुम्हारा कोई उत्तर नहीं आया तो मैं बुधवार को खुद तुम्हारे कमरे में गया।'

फ़िलिप ने मुँह फेर लिया और कोई उत्तर नहीं दिया। उसका दिल तेज़ी से धड़क रहा था। एथेलनी भी चुप था। उस मौन से फ़िलिप घबराने लगा।

'तुम्हारी मकान मालकिन ने बताया कि पिछले शनिवार से ही तुम घर नहीं गये हो और तुमने पिछले महीने का किराया भी अभी नहीं दिया है। तुम हफ्ते भर कहाँ सोये?'

पीड़ा से फ़िलिप तिलमिला उठा।

'कहीं नहीं!' खिड़की के बाहर देखते हुए उसने उत्तर दिया।

'मैंने तुम्हें ढूँढ़ने की काफ़ी कोशिश की!'

'क्यों?'

'बैटी और मैं भी कभी इतने गरीब थे और हमारे साथ तो हमारे बच्चे भी थे। तुम यहाँ क्यों नहीं चले आये?'

'मैं यहाँ कैसे आता!' फ़िलिप को लगा कि वह रो पड़ेगा। उसने आँखें बन्द करके अपने ऊपर काबू पाने का प्रयत्न किया। उसे एथेलनी पर क्षणिक क्रोध भी आया कि वह क्यों उससे यह सब कह रहा है।

फिर आँखें बन्द किये हुए ही उसने एथेलनी को पिछले कुछ सप्ताहों की घटनाएँ बतायीं। उसे लग रहा था कि एथेलनी उसे बिल्कुल मूर्ख समझ रहा होगा।

'अब तुम हमारे साथ रहोगे, जब तक तुम्हें काम न मिल जाय', एथेलनी ने उसकी बात खत्म होते ही कहा।

'तुम बहुत अच्छे हो, मैं तुम्हारा आभारी हूँ। लेकिन यह मैं नहीं कर सकूँगा।'

'क्यों?'

फ़िलिप ने इसलिए मना किया था कि वह सोचता था कि ऐसा करना ठीक न होगा। एथेलनी परिवार वैसे ही कौन ज़्यादा सम्पन्न था।

'नहीं! तुम्हें यहाँ रहना ही पड़ेगा!'

फ़िलिप कोई उत्तर नहीं दे सका। एथेलनी ने दरवाजे के पास जाकर अपनी पत्नी को पुकार कर कहा—'मि० कैरी अब हमारे साथ ही रहा करेंगे।'

जिस दूकान में एथेलनी काम करता था, उसी में फ़िलिप को भी एक छोटी-सी नौकरी मिल गयी। एथेलनी का मकान छोड़कर अब उसे एक दूसरे मकान में रहना था जिसमें दूकान के दूसरे और नौकर रहते और खाना खाते थे। मुफ्त खाने और रहने के अतिरिक्त फ़िलिप को छः शिलिंग हर हफ्ते वेतन मिलता था।

मिसेज एथेलनी ने फ़िलिप को इतना रुपया उधार दे दिया था कि वह अपने मकान का किराया देकर अपना सामान वहाँ से ला सके। इसके अलावा उसने अपने कपड़े भी छुड़ा लिये जो उसे गिरवी रख देने पड़े थे। फ़िलिप ने अपना सामान वहाँ भेज दिया जहाँ उसे रहना था। सोमवार से उसने दूकान में काम भी शुरू कर दिया।

काम ऐसा था जिसमें फ़िलिप की तबीयत नहीं लग सकती थी। लेकिन उसने इस सब के बारे में सोचा ही नहीं। काम मिल गया था, यही क्या कम था। शुरू-शुरू में फ़िलिप अपनी डाक्टरी की किताबें पढ़ता रहा कि कहीं वह सब कुछ भूल न जाय लेकिन कुछ ही दिनों में उसे पता लग गया कि ऐसा करते रहना असम्भव है। दिन भर मेहनत करने के बाद वह इतना थक जाता था कि पढ़ने का दम ही नहीं रहता था उसमें। और फिर पढ़ने से फायदा भी क्या? न जाने कब वह फिर से डाक्टरी की पढ़ाई जारी रखने के काबिल हो सकेगा!

कभी-कभी वह सपने देखने लगता था कि वह अस्पताल में है लेकिन जब उसकी आँख खुलती थी तो वह पीड़ा से कराह उठता था। कमरे में पाँच आदमी और भी रहते थे। दूसरों के साथ एक कमरे में सोने से उसे बहुत घृणा थी। वह अकेले रहने का आदी था और अब वह पल भर को भी अकेला

नहीं रह पाता था। उस गन्दे जीवन का अन्त नहीं दिखाई देता था उसे। एक और चिन्ता यह थी कि जिस जगह पर वह था उस पर लड़ाई खत्म हो जाने के बाद उसके असली हकदार आ जायेंगे और यह तुच्छ-सी नौकरी भी छूट जायगी।

अब तो उसके इन बन्धनों से मुक्त होने की केवल एक ही सूरत थी कि उसके चाचा की मृत्यु हो जाय। तब उसे इतना काफी धन अवश्य मिल जायगा कि वह अपनी डाक्टरी की पढ़ाई खत्म कर दे। फ़िलिप ने चाहा कि चाचा की मृत्यु जल्दी से जल्दी हो जाय। सत्तर के तो हो गये अब और कितने दिन जिन्दा रहेंगे! फ़िलिप सोचता था—चाचा की बीमारी के लिए ज्यादा जाड़ा या ज्यादा गर्मी दोनों बहुत हानिकारक होती थीं। अगस्त में जब खूब गर्मी पड़ी तो रोज फ़िलिप इस बात की आशा करता था कि शायद तार आ जाये कि मिस्टर कैरी का देहान्त एकाएक हो गया। और इस बात की कल्पना करते ही फ़िलिप को लगता कि उसके सारे दुख दूर हो गये, सारे बन्धन टूट गये। फिर कभी कभी उसे शंका होती कि कहीं चाचा अपना सारा रुपया दान न कर दें गिरजे के नाम! इस सम्भावना से ही फ़िलिप का दिल बैठ जाता था। इस कड़वे जीवन को वह केवल इसीलिए बिता रहा था कि कभी तो दिन पलटेंगे। अगर यह उम्मीद भी खत्म हो जाती है तो सबसे अच्छा यह होगा कि वह आत्महत्या कर ले। और तब फ़िलिप यह सोचने लगता कि कौन-सा ऐसा विष होगा जिससे आत्महत्या करने में सबसे कम पीड़ा हो।

कुछ दिनों पश्चात फ़िलिप ने लॉसन को एक दिन सड़क पर अपनी ओर आते देखा। वह मुँह छिपाकर एक ओर बचने लगा। जब से उसकी हालत खराब हुई थी तब से पुराने स्थानों और पुराने मित्रों से वह नाता नहीं जोड़ना चाहता था। उसे शरम लगती थी और उसे इस बात के आभास से कड़ी पीड़ा होती थी कि वह क्या से क्या हो गया है। लॉसन ने उसे खुद ही रोककर कहा—'आओ! मेरे साथ चलो; कुछ बातें करेंगे!'

'मैं नहीं चल सकूँगा!'

'फ़िलिप नहीं चाहता था कि वह अपने दुख-दर्द की कहानी सब से कहता

फ़िरे; वह तो उसको बिल्कुल भूल ही जाना चाहता था। फ़िलिप तेजी से एक तरफ़ चल दिया। लेकिन फिर लॉसन की आवाज आयी और थोड़ी देर में लॉसन खुद उसके पास लपकता हुआ आया—

'तुम्हें कुछ मालूम है हेवर्ड को क्या हुआ ?'

'हाँ, वह फ़ौज में भरती होकर केप चला गया था ! यही न ?'

'वह वहाँ पहुँचते मर गया ! मैं समझा कि शायद तुम्हें यह बात न मालूम हो !' लॉसन यह कहकर चला गया।

फ़िलिप इस समाचार को सुनकर काँप उठा। अपनी उम्र का उसका कोई मित्र अब तक नहीं मरा था। फ़िलिप को जैसे उस घटना ने याद दिलाया कि वह भी अमर नहीं है और सब की तरह उसकी मृत्यु हो सकती है। हेवर्ड की मृत्यु के समाचार का इसीलिए उस पर काफी गहरा असर पड़ा था। उसे अपने हिडॅलबर्ग के दिन याद आये जब पहली बार उसकी हेवर्ड से मित्रता हुई थी। अब वह कभी एक दूसरे से बातें न कर सकेंगे।

जीवन की विशेषता ही यह है कि कुछ आदमियों को हम अपना अभिन्न मित्र मान लेते हैं—समझते हैं कि उनके बिना जीना सुखी और सम्भव नहीं होगा लेकिन मृत्यु उन्हें जुदा कर देती है। जीवन के क्रम पर फिर भी कोई असर नहीं पड़ता—उसमें कोई अन्तर नहीं होता। जिन्हें हम इतना प्रिय और आवश्यक समझते थे वे अब बिलकुल बेकार मालूम होते हैं और बाद में हम कभी उन्हें याद भी नहीं करते। हेवर्ड के दिल में कभी बड़ी-बड़ी योजनाएँ थीं, आशाएँ थीं, लेकिन धीरे-धीरे सब खत्म होती गयीं, टूटती गयीं। और अन्त में हारकर वह मर गया। उसका जीवन उसकी मृत्यु की तरह ही अर्थहीन था। उसकी मृत्यु भी उसकी पराजय थी—सबसे अन्तिम पराजय !

एक दिन शाम को फ़िलिप को एक लिफाफा मिला, जिस पर की हस्तलिपि को वह कभी देखना भी नहीं चाहता था। लिफाफा देखते ही उसके मस्तिष्क में सैकड़ों घृणित स्मृतियाँ जाग पड़ीं और उसने चाहा कि वह लिफाफा खोले ही नहीं। लेकिन थोड़ी देर में उसने अन्दर का पत्र खोल कर पढ़ा—

'प्रिय फ़िलिप—क्या मैं तुमसे कुछ देर के लिए मिल सकती हूँ ? मैं बहुत संकट में हूँ । धन से सम्बन्धित कोई बात नहीं है ।—तुम्हारी ही, मिलड्रेड ।'

फ़िलिप ने पत्र को टुकड़े-टुकड़े करके फेंक दिया ।

उसके अन्दर मिलड्रेड के लिए जबरदस्त घृणा भर आयी । वह संकट में है तो फ़िलिप क्या करे ? उसने उसका ख्याल दिमाग से निकाल देना चाहा पर फिर भी वह उस रात को सो न सका । वह भूखी होगी—बीमार होगी तभी तो उसने फ़िलिप को पत्र लिखा है । मामूली कष्ट पड़ने पर तो उसे वह कभी न लिखती । उसे स्वयं अपनी कमजोरी पर क्रोध आया, लेकिन उसे मालूम था कि उसे चैन न पड़ेगा जब तक कि वह मिलड्रेड को देख न लेगा !

अगले दिन शाम को सात बजे वह मिलड्रेड के मकान के पते पर पहुँचा । उसके अन्दर आते ही मिलड्रेड उससे बोली—'तुम्हें ताज्जुब तो अवश्य हुआ होगा मेरा पत्र पाकर ?'

फ़िलिप कुछ देर चुप रहा ।

'तुम्हारा गला बहुत खराब है', फ़िलिप ने कहा ।

'हाँ, काफी दिनों से खराब है !'

फ़िलिप ने कुछ नहीं कहा । वह प्रतीक्षा कर रहा था इस बात को जानने की कि आखिर मिलड्रेड ने उसे किस कारण बुलाया था । कमरे और मकान के ढंग से वह समझ गया था कि वह फिर उसी घृणित व्यवसाय को करने लगी है । कमरे में मिलड्रेड की लड़की नहीं थी—फ़िलिप को आश्चर्य हुआ उसके वहाँ न होने का ।

'अब तो तुम डाक्टरी पास कर चुके होगे ?'

'नहीं !'

'क्यों ?'

'मैं करीब अट्ठारह महीने से अस्पताल नहीं जा रहा हूँ ।'

'अपने इरादों पर कभी तुम टिकते भी हो !'

फ़िलिप थोड़ी देर चुप रहा फिर कड़ी आवाज से बोला—

'जो थोड़ा-सा रुपया था वह सट्टे में हार गया। इसके बाद पढ़ाई होना असम्भव था !'

'अब क्या कर रहे हो ?'

'एक दूकान में नौकरी कर रहा हूँ !'

'ओह !'

फ़िलिप को लगा कि जैसे मिलड्रेड का चेहरा शरम से सुर्ख हो गया हो लेकिन फिर वह बोली—'डाक्टरी भूल तो नहीं गये हो ?'

'अभी सब तो नहीं भूला हूँ।'

'ठीक है। मेरी तबीयत खराब थी और इसीलिए तुमसे मिलना भी चाहती थी।'

'क्या बीमारी है तुम्हें ?'

'एक जरा सा घाव हो गया है—वह भरता ही नहीं !'

फ़िलिप समझ गया कि मिलड्रेड को क्या रोग है। जिस प्रकार का जीवन था मिलड्रेड का, उसमें वही रोग हो भी सकता था। उसे बहुत दुख हुआ—पीड़ा हुई। उसने घाव का निरीक्षण किया। उसने देखा कि मिलड्रेड की आँखों में भयानक डर है। वह सहानुभूति चाहती थी, लेकिन फ़िलिप के पास सहानुभूति के दो शब्द भी अब नहीं बचे थे उसके लिए। उसने मिलड्रेड को बता दिया, उसे क्या रोग है। वह फूट-फूट कर रोने लगी।

'इससे अच्छा तो है कि मैं मर जाऊँ—आत्महत्या कर लूँ।'

फ़िलिप ने इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया।

'मैं अब पैसे से तुम्हारी कोई सहायता नहीं कर सकूँगा लेकिन इस गन्दे पेशे को छोड़कर तुम्हें कोई न कोई काम कर लेना चाहिये।'

फ़िलिप ने एक नुस्खा लिखा और उससे कहा कि बराबर दवा खाते रहना बिल्कुल जरूरी है। जाते-जाते उसने कहा—'चिन्ता मत करो, तुम जल्दी ही ठीक हो जाओगी।'

फ़िलिप रोज उसको देखने जाता था। धीरे-धीरे फ़िलिप की दवा से वह ठीक भी होने लगी। वह ज्यादा प्रसन्न रहने लगी और उदासी के बादल छँटने

लगे। इसी बीच में फ़िलिप को मालूम हुआ कि मिलड्रेड की लड़की की मृत्यु हो चुकी है। उसे बड़ा दुख हुआ लेकिन फिर नहीं भी हुआ। इन परिस्थितियों में बच्ची के भविष्य की कल्पना करके वह सिहर जाता था।

मिलड्रेड अब यह कहने लगी थी कि ठीक होते ही वह कोई नौकरी ढूँढ़ लेगी और इस प्रकार का जीवन अब वह नहीं बितायेगी। लेकिन फिर भी लगता था कि वह उसके लिए कोई प्रयत्न नहीं कर रही है। फ़िलिप के बार-बार पूछने पर वह कुछ बहाना बना देती थी। उसे शंका होती थी कि आखिर बिना कुछ कमाये उसका खर्च कैसे चलता रहता है।

एक दिन वह मिलड्रेड से मिलकर उठने के बाद उसके मकान के बाहर ही छिपकर खड़ा हो गया। रात के आठ बज चुके थे। काफी देर हो गयी, लेकिन जिस बात की उसे आशा थी वह न हुई। वह हताश होकर वहाँ से जाने वाला ही था कि मिलड्रेड के मकान का दरवाजा खुला और मिलड्रेड बाहर निकल आयी। वह बहुत शोख और भड़कीले कपड़े पहिने थी। फ़िलिप ने चुपचाप उसका पीछा किया। काफी दूर चलने के बाद उसने पीछे से जाकर मिलड्रेड के कन्धे पर हाथ रख दिया।

'कहाँ जा रही हो मिलड्रेड ?' उसने कहा

मिलड्रेड चौंक पड़ी, फिर शरमाई और फिर उसका चेहरा क्रोध से तमतमा उठा।

'कुछ नहीं ! मैं थियेटर देखने जा रही थी। अकेले ऊब भी तो जाती हूँ।'

फ़िलिप जानता था कि वह झूठ बोल रही है—'ऐसा तुम क्यों करती हो ? पचास दफ़ा तुमसे कह चुका हूँ कि इससे कितना नुकसान पहुँचता है तुम्हें। फौरन बन्द कर दो वह सब !'

'अच्छा, चुप रहो ! मैं यह न करूँ तो खाऊँ क्या ?' वह बिगड़कर बोली।

फ़िलिप ने हाथ पकड़कर उसे वहाँ से घसीट कर ले जाने की कोशिश की—'भगवान के लिए घर चलो। अपनी खतरनाक बीमारी के होते हुए भी तुम यह जो कुछ कर रही हो, वह जुर्म है।'

'तो मुझसे क्या मतलब। यह तो उन आदमियों के भाग्य की बात है जो

मुझसे मिलें। आदमियों ने पहले ही मुझे कौन-सा सुख दिया है जो मैं उनकी अब चिन्ता करूँ ?'

इतना कहकर मिलड्रेड चल दी। फ़िलिप भी मुड़कर दूसरी ओर चल दिया।

'इससे ज्यादा मैं कर भी क्या सकता था ?' यह उनके सम्बन्धों का अन्त था। वे फिर कभी नहीं मिले।

१४

समय बीतता गया; दिन से सप्ताह हुए और फिर महीने। जाड़ा आया, चला गया। पेड़ों पर नयी कोपलें फूटीं और पत्तियाँ चमक उठीं। फ़िलिप को लगता था कि उसका यौवन ऐसे ही बीत जायगा और वह कुछ भी न कर सकेगा।

फिर अचानक जुलाई में एक दिन ब्लैकस्टेबिल से एक पत्र आया। लिखा था कि मि० कैरी बहुत बीमार हैं और उनके ज्यादा दिन रहने की आशा नहीं है। फ़िलिप ने फ़ौरन ही दूकान की नौकरी छोड़ दी। लेकिन उसे इतनी खुशी नहीं हुई इस घटना पर जितनी वह आशा करता था। इस बात की प्रतीक्षा तो वह न जाने कब से कर रहा था। इसी उम्मीद पर तो उसका भविष्य निर्भर था; इसी पर वह वर्तमान को सहन कर रहा था। लेकिन फिर भी वह हर्ष से झूम नहीं सका—इससे उसके अन्दर कोई उमंग, कोई भावना नहीं जागी।

दोपहर में वह ब्लैकस्टेबिल पहुँच गया। उसे पता लगा कि चाचा अभी मरे नहीं हैं। फ़िलिप चाचा के कमरे में आया। उसे देखकर चाचा मुस्करा दिये मानो वे मृत्यु पर एक बार फिर विजय पाकर खुश हो गये हों।

फ़िलिप के यहाँ आने के एक-दो दिन बाद चाचा की तबीयत बहुत ज्यादा खराब हो गयी। डाक्टर ने कह दिया कि अन्त समय आ गया है; अब कोई चारा नहीं है। दोपहर तक चाचा का देहान्त हो गया।

फ़िलिप को चाचा की वसीयत का पता चला। लगभग अस्सी पाउंड बैंक में थे, घर का सब सामान था और लगभग पाँच सौ पाउंड की लागत के शेयर थे। सब का सब चाचा फ़िलिप के नाम कर गये थे। फ़िलिप को बहुत ज्यादा खुशी नहीं हुई; बन्धनों से मुक्त होने पर उसने सन्तोष की एक गहरी साँस ली। कुछ दिन ब्लैकस्टेबिल रह कर फ़िलिप लन्दन लौट आया। दो साल बाद वह फिर सेंट ल्यूक के अस्पताल में घुसा। उसने अपनी पढ़ाई दुबारा शुरू कर दी। लोगों ने उससे प्रश्न किये कि वह इतने दिन कहाँ रहा, लेकिन बड़ी आसानी से उसने उन्हें इधर-उधर के जवाब दे दिये। पहले इन प्रश्नों का उत्तर देते हुए फ़िलिप को झिझक मालूम पड़ती थी लेकिन संघर्षों ने उसके आत्मविश्वास को और ज्यादा दृढ़ बना दिया था। उसके अनुभवों ने बहुत-सी बातों के संबंध में उसका दृष्टिकोण बदल दिया था।

अस्पताल में उस दिन काम खत्म करके वह नदी के किनारे-किनारे लौटा। उसका दिल भरा हुआ था। वह सोच रहा था कि अब वह एक नया जीवन शुरू कर सकेगा; वह अपने पिछले जीवन की गलतियाँ, कष्ट, तकलीफें सब भुला देगा। जीवन उसी बहती हुई नदी की तरह था जिसमें हमेशा प्रगति रहती थी। वह सब कुछ पीछे छोड़ता जाता था। केवल उमँगों और आशाओं से भरा हुआ भविष्य ही उसके सामने था—हमेशा उसके सामने रहेगा।

एथेलनी परिवार फ़िलिप की इस खुशकिस्मती पर बहुत प्रसन्न हुआ। फ़िलिप ने सब को कुछ न कुछ उपहार दिये; सैली को उसने सोने की चेन दी जो कभी उसकी चाची की थी। सैली अब जवान हो गयी थी। वह कपड़े बनाने-वालों की दूकान में नौकर भी हो गयी थी। उसका रूप भी निखर आया था। बालों में चमक थी, चौड़ी भवें थीं, आँखें साफ़, नीली और वक्ष भरा हुआ था। उसके शरीर की मांसलता में अद्भुत आकर्षण था। काफी लोग उसे पसन्द करते थे पर सैली समझदार और तेज लड़की थी और जवान आदमी उससे डरते थे। फ़िलिप को लगता था कि उसके और सैली के बीच में कभी उतनी स्नेह-पूर्ण घनिष्ठता नहीं रही थी जितनी एथेलनी परिवार के अन्य व्यक्तियों से थी।

सैली की उदासीनता से कभी-कभी उसे चिढ़ सी लगती थी—वह उसे रहस्यपूर्ण मालूम होती थी।

जब फ़िलिप ने उसे वह नेकलेस दी तो एथेलनी ने इस बात पर जोर दिया कि वह फ़िलिप का चुम्बन ले लेकिन सैली शरमा कर हट गयी। जब दोबारा फ़िलिप उनके यहाँ आया तो सैली ने उससे अकेले में कहा—'तुम्हें बुरा तो नहीं लगा था जब पिछली बार मैंने तुम्हें चूमने से इनकार कर दिया था?'

'कतई नहीं!' फ़िलिप ने हँसते हुए उत्तर दिया।

'बात यह नहीं थी कि मैं कृतघ्न हूँ,' सैली ने लजाते हुए कहा—'मैं उस नेकलेस की हमेशा कद्र करूँगी।'

फ़िलिप सैली से बहुत कम बात कर पाता था; वह समझता था कि जैसे सैली बात करने की जरूरत ही नहीं समझती। एक दिन इतवार की दोपहर को एथेलनी अपनी पत्नी के साथ बाहर चले गये थे। फ़िलिप को वे लोग परिवार का ही मानते थे; वह बैठक में बैठा पढ़ता रहा। सैली कमरे में आयी और खिड़की के पास बैठकर कपड़े सीने लगी। फ़िलिप ने अपनी किताब बन्द कर दी।

'पढ़ते जाओ। मैंने सोचा तुम अकेले हो इसलिए यहाँ आ गयी।'

सैली अपना काम करने लगी; फ़िलिप ने उसके शरीर की तरफ देखा। वह तन्दुरुस्त थी, उसके शरीर की गोलाइयाँ आकर्षक थीं।

इन्हीं दिनों एक नवयुवक ने सैली से विवाह का प्रस्ताव रखा था। वह बिजली का इंजीनियर था और अपने व्यवसाय में काफी कमा लेता था। सैली ने उसे अपने घर चाय पीने के लिए बुलाया था। उसने घर पर भी यह समाचार दे दिया था कि वह युवक जिसने उससे विवाह का प्रस्ताव किया था, चाय पीने आयगा।

युवक जब शाम को चाय पीने आया तो इस अजीब परिवार को देखकर चकरा गया। एथेलनी ने अपना अजीब हुलिया बना रखा था और वह न जाने कहाँ-कहाँ की गप्प मार रहा था, मिसेज एथेलनी युवक को ज्यादा से ज्यादा चाय पिलाने पर तुली हुई थीं। फ़िलिप बैठा देख रहा था कि सैली आँखें नीची

किये हुए बैठी है—उसके चेहरे पर कोई भाव नहीं थे। युवक बहुत अच्छा लग रहा था—वह लम्बा चौड़ा और तन्दुरुस्त था और फ़िलिप सोच रहा था कि दोनों का जोड़ अच्छा रहेगा। फ़िलिप को उनके आनन्दमय भविष्य की कल्पना करके ईर्ष्या-सी हुई। थोड़ी देर में युवक चला गया। सैली उसे दरवाज़े तक पहुँचाकर जब लौटी तो एथेलनी ने छूटते ही कहा—'हमें युवक बहुत पसंद आया। शादी की तैयारी शुरू हो जानी चाहिये।'

सैली ने कोई उत्तर नहीं दिया। उसने एकदम फ़िलिप की ओर देखा—'आपका क्या ख्याल है मि० फ़िलिप?' और बच्चों की तरह उसने फ़िलिप को कभी 'चाचा' कहकर नहीं पुकारा था।

'मेरे ख्याल से तो तुम लोगों की जोड़ी अच्छी रहेगी।'

सैली ने उसकी तरफ़ एक बार जल्दी से फिर देखा। फ़िलिप बड़े आश्चर्य में उसकी तरफ देख रहा था; वह बिल्कुल चुप थी। न जाने क्या सोच रही थी वह। मिसेज एथेलनी ने कुछ चिड़चिड़ा कर कहा—

'तू बोलती क्यों नहीं—गूंगी क्यों हो गयी है?'

'मेरे विचार से वह युवक बिल्कुल बुद्धू था।'

'तो तुम उससे शादी नहीं करोगी?'

'नहीं!'

अगस्त के शुरू में फ़िलिप ने आख़िरी परीक्षा पास कर ली। वह अब डाक्टर हो गया था। उसकी अवस्था अब लगभग तीस वर्ष की थी—सात साल उसने सेंट ल्यूक के अस्पताल में काटे थे। डिग्री लेकर जब वह रॉयल कॉलिज से निकला तो वह पूर्णतया सन्तुष्ट था।

'अब मेरा जीवन वास्तव में शुरू होगा!' फिलिप ने सोचा।

अगले दिन वह अस्पताल के सेक्रेटरी के पास नौकरी के लिए अपना नाम लिखाने गया। सेक्रेटरी बहुत भला आदमी था और फ़िलिप ने उसे हमेशा पसन्द किया था। उसने फ़िलिप को बधाई दी।

'एक महीने के लिए एक जगह खाली है—खाने-रहने के ऊपर तीन पाउंड प्रति सप्ताह वेतन है। तुम जाना पसन्द करोगे?'

'मुझे कोई आपत्ति नहीं !'

फ़िलिप को पता लगा वह जगह डाक्टर साउथ नामक एक प्राइवेट डाक्टर के सहकारी की जगह थी। डाक्टर साउथ के पिछले सहकारी की तबीयत खराब हो गयी थी। बहुत से नये डाक्टर वहाँ भेजे जा चुके थे लेकिन कोई टिक नहीं पाता था। बात यह थी कि डाक्टर साउथ बहुत चिड़चिड़ा और बदमिजाज आदमी था। फ़िलिप ने कहा कि उसे वह रखना ही क्यों चाहेगा, अभी-अभी तो उसने डाक्टरी पास की है।

'अरे नहीं। तुम्हें पाकर तो उसे बहुत खुश होना चाहिए !' सेक्रेटरी ने उत्तर दिया।

फ़िलिप ने कुछ देर सोचा। आखिर हर्ज ही क्या है ? अभी तो वह खाली ही है; थोड़ा कमा ही लेगा। उस रुपये से वह स्पेन जा सकेगा घूमने। बहुत दिनों से वह स्पेन जाने की बात सोच रहा था।

'अच्छा ! मैं चला जाऊँगा !'

'लेकिन शर्त यही है कि आज दोपहर में ही तुम्हें चला जाना पड़ेगा। ठीक है न ? मैं तार भेजे देता हूँ कि तुम आ रहे हो !'

फ़िलिप ने सोचा कि अगर कुछ दिन वह छुट्टी मना सकता तो अच्छा होता लेकिन वैसे उसे काम ही क्या था ? एथेलनी परिवार से तो वह कल ही मिलकर अपने पास होने की खुशखबरी दे आया था।

शाम को सात बजे के करीब वह फार्नले पहुँच गया। डाक्टर साउथ के मकान के लिए उसने एक गाड़ी ली। मकान पर पहुँचने पर एक नौकरानी फ़िलिप को कमरे में ले गयी। एक बुड्ढा आदमी बैठा कुछ लिख रहा था। उसने सिर ऊपर उठाकर फ़िलिप की तरफ घूरकर देखा पर वह बोला कुछ नहीं फ़िलिप जरा चकराया।

'सेंट ल्यूक अस्पताल के सेक्रेटरी ने आपको मेरे बारे में तार भेजा होगा !'

इसका तो कोई उत्तर नहीं मिला लेकिन डाक्टर साउथ बोले—'मैंने तुम्हारे कारण आधे घंटे बाद खाने का प्रबन्ध कराया है। हाथ-मुँह धोना चाहोगे ?'

'अवश्य !'

'भोजन के समय डाक्टर साउथ ने फ़िलिप से बहुत सी बातें पूछीं। फ़िलिप इतनी देर में समझ गया था कि उसका स्वभाव कैसा है; वह जान गया था कि उसकी बातों के छोटे-छोटे उत्तर देना ही सबसे उत्तम होगा।

'डाक्टरी पास किये हुए तुम्हें कितने दिन हुए ?'

'मुझे कल ही तो डिग्री मिली है।'

'तुम कभी किसी यूनिवर्सिटी में भी पढ़े हो ?'

'नहीं।'

'पिछले साल मुझे उन लोगों ने एक यूनिवर्सिटी का पढ़ा हुआ आदमी भेज दिया था, बहुत शान थी उसमें। मैंने उन्हें लिख भेजा कि भविष्य में ऐसा आदमी मुझे न भेजा करें।'

कुछ देर रुककर डाक्टर साउथ ने प्रश्न किया—

'क्या उम्र है तुम्हारी ?'

'तीस के लगभग !'

'इतनी देर में कैसे डाक्टरी पास की तुमने ?'

'तेइस वर्ष की अवस्था में तो पढ़ाई शुरू की थी और बीच में दो साल पढ़ नहीं सका था।'

'क्यों ?'

'गरीबी के कारण।'

डाक्टर साउथ ने उसकी तरफ अजीब तरह से देखा और फिर चुप हो गये।

'आपको मालूम है कि डाक्टरी का अनुभव मुझे बिल्कुल नहीं है', फ़िलिप ने कहा।

'हाँ ! लेकिन तुममें से कब किसी को कुछ आता है ?'

फ़िलिप को इस नये वातावरण में बहुत आनन्द आता था। स्वतन्त्रता और उत्तरदायित्व की भावनाओं से उसे बहुत सुख मिलता था। अपने आप मरीजों का इलाज करना, उनका निरीक्षण करना उसके लिए नवीन और सुखद अनुभव थे। फार्नले, समुद्र के किनारे मछुवों की एक बस्ती थी; और वहाँ

के अधिकतर रोगी उसी वर्ग के थे। मल्लाहों के मकानों का रूमानी माहौल फ़िलिप को बहुत आकर्षक मालूम होता था और उनके बीच में उसकी तबीयत भी खूब लगती थी। उन लोगों को भी फ़िलिप के ऊपर बहुत विश्वास था और जब वह उन्हें देखने जाता था तो वे उससे अपने दिल की बातें तक कह देते थे। फ़िलिप उनकी बातें बड़े ध्यान से सुनता था।

डाक्टर साउथ से भी उसके सम्बन्ध बहुत अजीब-से थे। कभी-कभी दोनों में इलाज की विधि आदि बातों पर मतभेद हो जाता था। उस समय डाक्टर साउथ फ़िलिप को खूब डाँटते थे। फ़िलिप चुपचाप सुनता रहता था लेकिन अन्त में कोई ऐसी बात कह देता था जिससे डाक्टर साउथ को लगता कि वह उनका मजाक उड़ा रहा है। उन्हें अब तक ऐसे ही लोग मिले थे जो उनसे डरते थे या नफ़रत करते थे लेकिन यह अनुभव उनके लिए बिल्कुल नया था। वह कभी सोचने लगते कि फ़िलिप को निकाल दें लेकिन वह डरते थे कि इस बात पर तो फ़िलिप और भी हँसेगा और तब एकाएक उन्हें खुद भी हँसी आ जाती थी। उनकी इच्छा के विरुद्ध उनके चेहरे पर मुस्कराहट छाने लगती थी और वे मुँह फेर कर बड़बड़ाते हुए चले जाते थे।

एथेलनी को मालूम हो गया था कि फ़िलिप यहाँ काम कर रहा है। एथेलनी ने उसे एक पत्र लिखा और केंट के एक छोटे से गाँव में आने का निमंत्रण दिया जहाँ वह हर वर्ष छुट्टी बिताने जाया करता था। फ़िलिप ने लिखकर भेज दिया कि अपनी इस नौकरी से छुट्टी पाते ही वह वहाँ आ जायगा।

फ़िलिप की नौकरी का आखिरी सप्ताह आ गया था। एक दिन शाम को एक छोटी-सी लड़की दवाखाने में आयी। डाक्टर साउथ और फ़िलिप काम कर रहे थे। फ़िलिप ने दरवाजा खोला।

'मिसेज फ्लेचर ने आपको फौरन बुलाया है!' उस छोटी, गंदी-सी लड़की ने कहा।

'क्या हुआ मिसेज फ्लेचर को?' डा० साउथ ने जोर से पूछा।

लड़की ने डाक्टर साउथ की ओर कोई ध्यान नहीं दिया। वह फ़िलिप से

बोली—'उनके छोटे बच्चे के साथ कुछ दुर्घटना हो गयी है, आप फ़ौरन चले चलिये !'

'मिसेज फ्लेचर से कहना मैं आ रहा हूँ,' डा० साउथ ने कहा।

लड़की झिझक कर खड़ी रह गयी। फ़िलिप ने उससे मुस्कराते हुए प्रश्न किया—'क्यों ? क्या बात है, बच्ची ?'

'मिसेज फ्लेचर ने नये डाक्टर साहब को ही बुलाया है।'

डाक्टर साउथ बिगड़ते हुए उठे—'तो मिसेज फ्लेचर मुझसे असन्तुष्ट हैं। वह समझती हैं कि मैं उसके बच्चे को देखने काबिल नहीं हूँ। मैं उस समय से उस घर का डाक्टर हूँ जब मिसेज फ्लेचर का जन्म हुआ था।'

वह लड़की पहले तो रोने को हुई लेकिन फिर डाक्टर साउथ को मुँह चिढ़ाकर भाग गयी। डाक्टर साउथ आश्चर्य से स्तम्भित रह गये।

फ़िलिप ने कहा—'आप काफ़ी थके हुए दिखाई पड़ते हैं और मिसेज फ्लेचर का घर बहुत दूर है !'

डाक्टर साउथ ने बिगड़ते हुए उत्तर दिया—'कम से कम दो पैर के आदमी के लिए उतना फासला चलना लँगड़े आदमी से तो कम ही मुश्किल होगा !'

फ़िलिप लाल हो गया लेकिन कुछ देर चुप रहा। फिर उसने पूछा—'आप जाना चाहते हैं या मैं जाऊँ ?'

'मैं जाकर क्या करूँगा ? वे लोग तो तुम्हें ही चाहते हैं !'

फ़िलिप देर में लौटकर आया। डा० साउथ ने पूछा—'इतनी देर क्यों लगी ?'

'जरा सूर्यास्त देखने के लिए रुक गया था।'

'सूर्यास्त क्यों देख रहे थे तुम ?'

'क्योंकि मैं बहुत खुश था !'

डा० साउथ ने आश्चर्य से फ़िलिप की ओर देखा। उनके बूढ़े थके हुए चेहरे पर मुस्कराहट फैल गयी।

खाना खत्म हो जाने के बाद डा० साउथ बोले—'मैंने उस समय लँगड़ेपन की बात की थी तो तुम्हें बुरा अवश्य लगा होगा ?'

'लोग यही चोट करते हैं मुझ पर जब वे मुझसे नाराज हो जाते हैं।'

दोनों कुछ देर चुप रहे। डा० बोले—

'फ़िलिप, तुम यहीं क्यों नहीं रह जाते? मैं अपने पुराने सहायक को निकाल दूँगा! मैं चाहता हूँ कि तुम फार्नले में ही रहो!'

'आपकी बहुत कृपा है लेकिन कुछ दिनों में मुझे अस्पताल में जगह मिल जाने की आशा है।'

'मैं तुमसे नौकरी करने को नहीं कह रहा हूँ। मैं तो तुम्हें अपना साझेदार बनाने की कह रहा हूँ,' डा० साउथ ने रुकते हुए कहा।

फ़िलिप ने आश्चर्य से उनकी तरफ देखा—'क्यों?'

'यहाँ के रहनेवाले तुम्हें बहुत पसन्द करते हैं।'

'लेकिन इससे तो आप खुश नहीं हैं।'

'वह ऐसी कोई बात नहीं है। मुझे मरीजों से व्यक्तिगत प्रेम तो है नहीं—वे तुम्हें बुलाएँ या मुझे, फीस देते जायँ। कहो मंजूर है न?'

फ़िलिप चुप रहा। उसे इस प्रस्ताव से बहुत आश्चर्य हुआ था। अवश्य डाक्टर साउथ उससे बहुत खुश हैं वरना एक नये-नये डाक्टर को कौन साझेदार बनाता है। सेंट ल्यूक के सेक्रेटरी को अगर यह मालूम हो जाय तो वे कितने चकित हों?

'यहाँ की प्रैक्टिस से लगभग सात सौ पाउंड प्रति वर्ष मिलते हैं। मेरे मरने पर सब कुछ तुम्हारा ही हो जायगा,' डाक्टर साउथ ने कहा।

फ़िलिप जानता था कि यह स्वर्ण अवसर है, जो भाग्य से ही किसी को मिलता है।

'मुझे अफसोस है, लेकिन आपका प्रस्ताव मैं स्वीकार नहीं कर सकूँगा।' फ़िलिप ने सोच रखा था कि डाक्टरी पास करके वह सारी दुनिया में भ्रमण करेगा। वह स्पेन जायगा—पूर्व के देशों में घूमेगा। बहुत दिनों से यह उसका स्वप्न था। वह नये स्थानों में रहनेवाली अजनबी जातियों को जानना चाहता था। यात्रा से उसे क्या मिलेगा—उसका क्या लाभ होगा; यह फ़िलिप को कुछ

नहीं मालूम था। वह सोचता था कि जीवन के बारे में उसे और ज्यादा तथा नयी बातें मालूम हो सकेंगी, अनुभव हो सकेंगे।

लेकिन डाक्टर साउथ तो बहुत दयालु थे—उनके प्रस्ताव को ठुकरा देना कृतघ्नता होती। उसने डाक्टर साउथ को अपनी बात समझाने की चेष्टा की। फ़िलिप में ऐसा कुछ था जिससे डाक्टर साउथ को बहुत प्रेम था।

जिस दिन फ़िलिप जाने को था उस दिन डाक्टर साहब बहुत उदास दिखाई दे रहे थे। वह फ़िलिप को स्टेशन तक पहुँचाने गये।

'आपके स्नेहपूर्ण व्यवहार के कारण मुझे बहुत सुख मिला था यहाँ पर,' फ़िलिप ने कहा।

डाक्टर साउथ के आखिरी शब्द थे—'अगर तुम कभी विचार बदलो तो यहाँ हमेशा वापस लौट सकते हो—उन्हीं शर्तों पर।'

गाड़ी में बैठे हुए फ़िलिप बहुत सुखी था। वह अपने उन मित्रों के बारे में सोच रहा था जिनसे वह कुछ देर बाद ही मिलेगा। लेकिन अपने खाली मकान को लौटते समय डाक्टर साउथ सुखी नहीं थे। उन्हें लग रहा था कि वे बहुत अकेले हैं।

शाम को फ़िलिप फर्न नामक स्थान पर पहुँचा। यहीं सारा एथेलनी परिवार छुट्टी बिताने आया हुआ था। फर्न एक छोटा-सा गाँवथा। जहाँ 'हॉप' की खेती होती थी। साल में एक बार एथेलनी अपने पूरे परिवार के साथ वहाँ चले जाते थे—गाँव का खुला जीवन उन्हें बहुत पसन्द था। बच्चों को भी बहुत मजा आता था छुट्टी में।

एथेलनी फ़िलिप को स्टेशन ले आये थे। जिस झोपड़ी में सारा परिवार था उसमें फ़िलिप को तकलीफ होती इसलिए पास की सराय में उसके लिए एक कमरा ठीक कर दिया गया था। सामान वहाँ रखकर एथेलनी फ़िलिप को अपनी झोपड़ी में भोजन कराने के लिए ले गये।

फ़िलिप सारे परिवार को देखकर बहुत खुश हुआ। मिसेज एथेलनी ने

और सब बच्चों ने भी फिलिप का खूब स्वागत किया। खाना बन जाने पर मिसेज एथेलनी ने सब को खाना खाने बैठा दिया।

'सैली कहाँ है?'

'आयी माँ!'

वह अभी झोपड़ी से निकली थी। आग की लाली ने उसके चेहरे को सुर्ख बना दिया था। फ़िलिप ने देखा कि वह एक ढीली-ढाली खूबसूरत-सी छींट की फ्रॉक पहिने है। फ़िलिप से हाथ मिलाकर सैली उसके पास ही बैठ गयी। फ़िलिप की आवश्यकता की चीजें सैली उसे बड़े ध्यान से देती जा रही थी। फ़िलिप को बहुत सुख प्राप्त हो रहा था। सैली का इतना पास होना ही एक बहुत सुखद अनुभव था। एक बार उनकी आँखें मिलीं और सैली हल्के से मुस्करा दी।

दूसरे दिन सुबह सब बच्चे फ़िलिप को उठा लाये और वह उन लोगों के साथ समन्दर में नहाने चला गया। बहुत देर तक बच्चे फ़िलिप के साथ पानी में खेल करते रहे। जब सैली ने सब को डाँटकर बाहर निकाला तब वे निकले। घर पर पहुँचे तो देखा कि मिसेज एथेलनी खेत पर जा चुकी हैं। नाश्ता करके सब लोग फिर खेत की तरफ चल पड़े। फ़िलिप और सैली सबसे पीछे आ रहे थे। आसमान में सूरज चढ़ आया था। हरी पत्तियाँ धूप में चमक रही थीं—'हॉप' में पकने का सुहावना पीलापन आ गया था। फ़िलिप को उनमें अपार सौन्दर्य दिखाई पड़ रहा था और उसका मन प्रकृति के उस रूप से प्रभावित होकर झूम रहा था। सितम्बर की मन्द वायु में धरती की सोंधी उसास और पके हुए 'हॉप' की सुगन्ध थी।

फ़िलिप सैली के साथ ही 'हॉप' बीन रहा था—उसके पास अपनी टोकरी तो थी नहीं। साथ काम करते-करते उनके हाथ एक बार छू गये। सैली लाज से लाल हो गयी। फ़िलिप को यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ। उसने अब तक कभी यह नहीं सोचा था कि सैली जवान हो गयी है—उसने लड़की के रूप में ही उसे देखा था।

सारे दिन काम करने के बाद वे लोग शाम को घर लौटे। खाना खाने के बाद फ़िलिप एक कुर्सी पर बैठा आराम से पाइप पीने लगा। सैली काम कर रही

था। झोपड़ी से बाहर आते-जाते उसका शरीर—उसका हर अंग बहुत आकर्षक मालूम पड़ रहा था। एथेलनी पास में कहीं बात करने चले गये थे। मिसेज एथेलनी बोल पड़ीं—'लो, सब चाय खत्म हो गयी! मैंने कहा था एथेलनी से कि मिसेज ब्लैक की दूकान से थोड़ी-सी चाय ला दें लेकिन वह सुनते कब हैं! सैली, जरा तुम जाकर आधा पाउंड चाय तो ले आओ मिसेज ब्लैक के यहाँ से!'

'अच्छा।' सैली ने उत्तर दिया। मिसेज ब्लैक की दूकान कुछ दूर थी। सैली चलने लगी तो फ़िलिप ने कहा—'सैली, मैं चल सकता हूँ तुम्हारे साथ?'

वे दोनों साथ चल दिये। सड़क पर शांति थी। वे आपस में ज्यादा बोल नहीं रहे थे, लेकिन उन दोनों को साथ चलना इतना अच्छा लग रहा था कि बात करने की उन्हें आवश्यकता ही नहीं मालूम पड़ रही थी। थोड़ी देर में वे मिसेज ब्लैक के यहाँ पहुँच गये। मिसेज ब्लैक अपनी दूकान बन्द ही कर रही थीं। सैली ने आधा पौंड चाय खरीदी और वे दोनों फिर घर की तरफ़ चल पड़े। रास्ते में अजीब-सी खामोशी थी। मन्द हवा चल रही थी, धरती से ताजगी का सोंधापन निकल रहा था। रात की धड़कनें दोनों को सुनाई दे रही थीं। उन धड़कनों में मानों कोई सन्देश—कोई पुकार उनकी चारों तरफ़ हिलोरें ले रही थी। फ़िलिप के दिल में अपूर्ण सन्तोष था—सुख था, इच्छा में एक उभार-सा था कि जैसे वह किसी और चीज की प्रतीक्षा में हो। उसकी कल्पना सपनों के सतरंगी सागर में खोयी हुई थी। उसे लगा कि जैसे उसकी आत्मा प्रकृति के हर गीत का, सौन्दर्य का, सुगन्ध का उपभोग करने की शक्ति रखती है। उसका दिल चाहता था कि फैलकर उस सारे सौन्दर्य को अपने अन्दर समेट ले।

वे लोग उस झोपड़ी के पास पहुँच गये जिसमें एथेलनी परिवार ठहरा हुआ था।

'अच्छा, अब मुझे चलना चाहिये', फ़िलिप ने कहा।

'साथ चलने के लिए धन्यवाद', सैली ने अपना हाथ फ़िलिप की तरफ़ बढ़ा दिया।

फ़िलिप ने कहा—'तुम अगर बहुत खुश हो तो परिवार के और लोगों की तरह आज तो चुम्बन लेकर विदा दो !'

'कोई आपत्ति नहीं', सैली ने कहा।

फ़िलिप ने मजाक में ही यह बात कही थी। वह बहुत खुश था, इसलिए वह सैली का चुम्बन लेना चाहता था।

'अच्छा तो गुड़-नाइट !' फ़िलिप ने सैली को अपने पास खींच लिया। दोनों के ओंठ मिल गये—फूल की तरह कोमल और मधुर थे सैली के ओंठ। पता नहीं क्यों फ़िलिप की इच्छा के उत्तर में सैली का जवान, गुदगुदा शरीर उसके आलिंगन में पिघल-सा गया। दोनों के दिल बहुत पास-पास धड़क रहे थे। फिर सैलाब की तरह वासना ने, शरीर की भूख ने, उसकी चेतना को बिल्कुल डुबा दिया और फ़िलिप ने सैली को ज्यादा गहरे-अन्धकार में खींच लिया।

अगले दिन का कार्यक्रम पिछले दिन जैसा ही रहा। फ़िलिप ने यह देखने की कोशिश की कि कल रात के कारण सैली के व्यवहार में कोई परिवर्तन तो नहीं हुआ। वह शायद शरमाती, ज्यादा चंचल होती या नाराज होती। लेकिन उसके व्यवहार में तनिक-सा भी अन्तर नहीं पड़ा। जब वह फ़िलिप को देखकर मुस्करायी तो उस मुस्कान में वही भोलापन था। फ़िलिप कुछ समझ भी नहीं सका।

शाम को ही वे दोनों फिर अकेले हो पाये। सब इधर-उधर चले गये थे। फ़िलिप ने हिम्मत करके कहा—

'तुम मुझसे नाराज तो नहीं हो, सैली ?'

सैली खाना बना रही थी। उसने बिना किसी भावना के उत्तर दिया—'नहीं तो ! मैं नाराज क्यों होती ?'

फ़िलिप को बहुत आश्चर्य हुआ और उसने कोई उत्तर नहीं दिया। खाना

बनाते-बनाते सैली फ़िलिप की तरफ देखकर जैसे आँखों ही आँखों में मुस्करायी।

'मैंने तो तुम्हें हमेशा ही पसन्द किया है।'

फ़िलिप का दिल खुशी से उछल पड़ा। जरा झिझक से हँसते हुए उसने कहा—'मुझे नहीं पता था।'

'तुम तो बुद्धू हो, तुम्हें क्या पता चलता!'

'पता नहीं तुम मुझे कैसे पसन्द कर सकती हो?'

'मुझे खुद नहीं मालूम।' आग में थोड़ा ईंधन डालते हुए वह फिर बोली-'मैं तुम्हें उसी दिन से चाहने लगी थी जब तुम घर के बाहर घूम-घूम कर दिन काट रहे थे। तुम्हारे पास खाने को कुछ भी नहीं था और मैंने और माँ ने तुम्हारे लिए घर पर ही बिस्तर लगाया था।'

फ़िलिप का ख़याल था कि सैली को वे बातें नहीं मालूम होंगी।

'इसीलिए तो मैंने किसी से विवाह के लिए ही नहीं कहा अब तक। तुम्हें याद है न, एक बार वह युवक चाय पीने आया था हमारे यहाँ। मैंने उसे केवल इसीलिए बुला लिया था कि वह बहुत परेशान कर रहा था और मैं यों उससे 'न' नहीं कह सकी थी।'

फ़िलिप कुछ नहीं बोल सका। उसे पता नहीं था कि उसके दिल में खुशियाँ मचल रही हैं।

'पता नहीं बच्चे सब कहाँ चले गये।'

'मैं जाकर बुला लाऊँ...'पता नहीं क्यों फ़िलिप वहाँ से कुछ देर को चला जाना चाहता था।

'चले जाओ, लेकिन माँ तो आ रही हैं।'

फ़िलिप उठने लगा तो सैली ने कहा—

'बच्चों को सुलाकर क्या मैं तुम्हारे साथ रात को घूमने चल सकती हूँ?'

'हाँ-हाँ, अवश्य!'

'मेरी प्रतीक्षा करना बाहर—मैं जल्दी ही आ जाऊँगी।'

फ़िलिप सैली के आने का इन्तजार कर रहा था। आसमान में सितारे

चमक रहे थे, धरती में से सुगन्ध निकल रही थी और हवा कोमल थी—खामोश थी। फ़िलिप कुछ नहीं समझ पा रहा था कि यह सब क्या हो रहा है उसके साथ। सैली ने आखिर उसमें देखा क्या था ? उसे मालूम नहीं था कि सैली उससे प्रेम करती है या नहीं। सैली के प्यार में उस सुहावने वातावरण का पागलपन था, नारी के प्रेम करने की स्वाभाविक प्रेरणा थी, स्नेह था जो सैली में इतना भरपूर था कि छलक पड़ता था और जिसमें मातृत्व की झलक भी थी।

कदमों की आहट सुनकर फ़िलिप ने हल्के से पुकारा—'सैली !' सैली उसके पास आ गयी। फ़िलिप के ओंठ जब उसके ओठों से मिले और उसका शरीर जब फ़िलिप के आलिंगन में कस गया तो फ़िलिप को लगा जैसे सैली के साथ-साथ पृथ्वी का रस और उसकी ताकत और ताजगी उसकी बाँहों में भरी हुई है।

'शहद-सी मीठी और दूध-सी पवित्र हो तुम !' फ़िलिप ने सैली की पलकों को चूमते हुए कहा।

सैली की जवान चिकनी खाल रात के अन्धकार में भी चमक रही थी। फ़िलिप को लगा कि जैसे रूप की देवी उसकी बाहों में जकड़ी खड़ी है लेकिन शायद ही किसी देवी में इतना यौवन, इतनी मादकता हो ! फ़िलिप के दिल में हजार रंग और हजार खुशबुओं के फूल खिल उठे।

एथेलनी परिवार के साथ फ़िलिप लन्दन लौट आया। सेंट ल्यूक के अस्पताल में उसे सहकारी हाउस डाक्टर की जगह मिल गयी थी। उसने मकान ले लिया और अक्तूबर से अपनी नयी नौकरी शुरू कर दी। वह अब बहुत सुखी था।

लन्दन में भी वे दोनों अक्सर मिलते रहते थे लेकिन अब तो सारा वातावरण ही बदल गया था। फ़िलिप शाम को सैली के साथ उसका काम खत्म हो जाने के बाद थोड़ी देर घूमने जाता था। उनमें आपस में कभी प्यार की बातें नहीं होती थीं। सैली को जैसे केवल फ़िलिप के नैकट्य से ही सन्तोष मिल

जाता था। फ़िलिप अब तक सैली को नहीं समझ पाया था लेकिन वह उसे और भी ज्यादा चाहने लगा था।

वह जानता था कि वह सैली से प्रेम नहीं करता है; उसके दिल में सैली के लिए अपार स्नेह था—वह सैली का आदर करता था। वह सैली की मांसलता का पुजारी था—सैली के शरीर का सौन्दर्य बिल्कुल निर्दोष था।

एक दिन जब वे साथ-साथ लौट रहे थे तो फ़िलिप को लगा कि सैली बहुत खामोश है। उसके शान्त चेहरे पर चिन्ता की एक हल्की रेखा-सी थी।

'सैली, क्या बात है?'

बिना उसकी तरफ़ देखे सैली ने उत्तर दिया—

'कुछ पता नहीं!' सैली का चेहरा लाल हो गया। फ़िलिप को शङ्का हुई—उसका दिल धड़कने लगा।

'क्या मतलब? क्या······?'

फ़िलिप को डर था कि कहीं सैली गर्भवती तो नहीं हो गयी। इस बारे में उसने कभी सोचा ही नहीं था। उसने देखा कि आँसुओं को रोकने की चेष्टा में सैली के ओंठ काँप रहे थे।

'अभी कुछ कह नहीं सकती। शायद सब ठीक हो जाय।'

बिछुड़ते वक्त सैली ने मुस्कराते हुए कहा—

'अभी चिन्ता करने की जरूरत नहीं—आशा है, सब कुछ ठीक हो जायगा।'

फ़िलिप के दिल में तूफ़ान आ गया। यह सब क्या हो रहा है? सब कुछ ठीक तो हो गया था लेकिन फिर उसने यह मुसीबत अपने सिर पर ले ली। उसने सोचा था कि अब वह खूब स्वतन्त्रता से भ्रमण कर सकेगा। उसने जहाज की कम्पनियों से इस सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार भी किया था। उसका दिल खूबसूरत और अजनबी स्थानों को देखने के लिए लालायित था। लेकिन सिर पर अब यह नयी विपत्ति आ पड़ी। लेकिन इससे क्या? क्यों वह इन सब बातों की चिन्ता करे? मजबूत आदमी को कोई भी परिस्थिति मार्ग से विचलित नहीं

कर सकती। सैली का भी तो उतना ही दोष था इस बात में। वह अपना सुख उसके लिए क्यों बिगाड़े! उसे कोई भी बन्धन नहीं रोक सकेगा!

लेकिन फ़िलिप वह सब कुछ न कर सका, जो वह सोच रहा था। 'मैं बहुत कमजोर आदमी हूँ,' उसने अपने आपको धिक्कारते हुए कहा।

सैली ने उस पर विश्वास किया था, वह उस पर बहुत दयालु थी। वह यह सब सोचने पर भी इतनी क्रूर बात नहीं कर सकता। फिर सैली के माता-पिता ने भी तो उसके साथ कितने उपकार किये थे। यह अत्याचार करके उसे कभी भी शान्ति नहीं मिल सकेगी! उसे सैली से विवाह कर लेना चाहिये, जल्दी से जल्दी। उसने सोचा कि विवाह करके वह डा० साउथ के प्रस्ताव को भी मंजूर कर लेगा। वही जीवन उसके और सैली के लिए आदर्श भी होगा। उसे कोई शंका नहीं थी कि डा० साउथ अपने पिछले प्रस्ताव को वापस ले लेंगे। फ़िलिप सोचने लगा कि वहाँ उस मल्लाहों के गाँव में वह एक छोटा-सा मकान ले लेगा और वहीं अपनी पत्नी के साथ जीवन बितायेगा। यही बुद्धिमानी की बात होगी।

वह सैली के लिए अपनी आशाओं का, उमंगों का बलिदान कर देगा। इस विचार से उसका दिल हर्ष और सन्तोष से भर गया। भविष्य के स्वप्न उसकी कल्पना में समा गये—वह, सैली उसकी पत्नी के रूप में, उनका बच्चा, आह! बच्चे की कल्पना से फ़िलिप का दिल भर आया, और मल्लाहों की वह छोटी-सी बस्ती!

उसने सैली से शनिवार को मिलने को कहा था। डा० साउथ को उसने अपना निश्चय बताते हुए पत्र लिखा था और उन्होंने तार से उसका स्वागत किया था।

फ़िलिप नेशनल गैलेरी में सैली की प्रतीक्षा कर रहा था। सैली को दूकान से छुट्टी लेकर आना था और फ़िलिप के साथ दोपहर का खाना भी खाना था।

सैली ने आते ही कहा—'देर से प्रतीक्षा कर रहे हो!'

'नहीं, बस दस ही मिनट हुए। भूख लगी है?'

'ज्यादा नहीं।'

'तो कुछ देर यहाँ बैठ लें।'

थोड़ी देर में फ़िलिप ने पूछा—'कैसी तबीयत है अब ?'

'ठीक है—वह बात तो झूठी निकली !'

फ़िलिप के दिल में अजीब तरह के विचार उठे। फ़िलिप ने कभी सोचा भी नहीं था कि सैली की शङ्का गलत होगी। इसी कारण उसकी सारी इच्छाओं का, आशाओं का बलिदान हुआ था। पर अब तो वह आजाद हो गया था। लेकिन उसे कोई खुशी नहीं हुई, उसका दिल बैठ गया। एक बार पत्नी, बच्चे और घर के बारे में सोचकर फिर भ्रमण करने की आशा ने उसे सुख नहीं पहुँचाया। एक बार शान्ति और सन्तुष्ट जीवन की कल्पना करने के बाद वह अनन्त सागरों और तूफ़ानों के बारे में न सोच सका। वह वास्तव में पत्नी और घर का सुख चाहता था—भ्रमण करने की खुशी तो केवल मन का एक भ्रम था। वह अपने आपको धोखा दे रहा था। पत्नी की—सैली की, सुख की उसे सख्त जरूरत थी। हो सकता है कि सुख के सामने सिर झुका देना पराजय हो, कमजोरी हो, लेकिन यह पराजय हजार विजयों से ज्यादा अच्छी थी—महान् थी। उसने सैली की तरफ़ देखा।

'मैं तुमसे विवाह का प्रस्ताव करनेवाला था।'

'मैं जानती थी पर तुम्हारे लिए मैं बन्धन नहीं बनना चाहती; तुम्हारी राह में चट्टान नहीं होना चाहती।'

'ऐसा नहीं होगा।'

'लेकिन तुम तो भ्रमण करना चाहते थे—दिल से।'

'अब भूल जाओ उसे।'

सैली ने उत्तर नहीं दिया।

'सैली, मुझसे विवाह करोगी ?'

'क्या तुम यही चाहते हो ?'

'हाँ ! बहुत !'

'तो मुझे कोई आपत्ति नहीं।'

'तब तो पक्का है।

'माँ और डैडी को आश्चर्य तो बहुत होगा।'

'मैं बहुत खुश हूँ।'

'और मुझे भूख लगी है।'

फ़िलिप ने मुस्कराकर सैली का हाथ अपने हाथों में दबा लिया। वे बाहर निकल आये।

चौराहे पर गाड़ियाँ और लोगों की भीड़ तेजी से इधर-उधर जा रही थी और आसमान में सूरज तेजी से चमक रहा था।

पेरिस का रँगीला

फ्रांस के सर्वोत्तम कहानीकार गा द मोपासाँ के बेजोड़ उपन्यास 'बेल-आमी, का हिंदी अनुवाद।

संसार के उपन्यास-साहित्य में 'पेरिस का रंगीला, अपने ढंग का निराला है। इसका प्रमुख चरित्र जार्ज दुराय आपको शुरु-शुरु में पेरिस की सड़कों और चायखानों में निठल्ले घूमता हुआ मिलता है, जिसके दिल में बड़े-बड़े अरमान हैं, ऊँची-ऊँची महत्वाकांक्षाएँ हैं लेकिन वह अकेला है और उसे आगे बढ़ने का रास्ता बताने वाला कोई नहीं है। अकस्मात् एक पत्रकार मित्र से उसकी मुलाकात होती है, जिसकी पत्नी उसे पत्रकारों की शिक्षा देती है। दुराय पत्रकार बनता है और इस तरह उसके व्यक्तित्त्व को खुलने का मौका मिलता है।
अब वह पेरिस का प्रभावशाली पत्रकार ही नहीं कई प्रमुख महिलाओं का प्रेमी भी है : मित्र की पत्नी उसकी पत्नी बनती है! एक अन्य विवाहित महिला प्रति दिन अकेले में उससे मिलती है और उसके अखबार के मालिक की पत्नी उसके लिए बेचैन रहती है। अब उसका रंगीला व्यक्तित्व निखर उठता है!

फिर किस तरह वह अपनी पत्नी को एक मंत्री के साथ प्रेमालाप करते हुए पकड़ता है और उसे छोड़ने के बाद अपने अखबार के मालिक की पत्नी से प्रेम की उपेक्षा करके उसकी लड़की को भगा ले जाता है और किस तरह उसके पिता को शादी के लिए राजी करता है, इसे पढ़ कर आप मोपासाँ की लेखन शैली के कायल हो जायँगे। विश्व-साहित्य के इस सबसे रँगीले नायक का चरित्र आप कभी न भूल सकेंगे और पुस्तक को बार-बार पढ़ना चाहेंगे।

मूल्य तीन रुपया

किताब महल, इलाहाबाद

साइकिल चोर

दूसरे महायुद्ध की बरबादी से तबाह यूरोप के एक देश, इटली, का जीता-जागता चित्र पेश करने वाला अनुपम यथार्थवादी उपन्यास। लुई बार्तोलीन के इस उपन्यास के आधार पर बनी प्रसिद्ध फिल्म 'बाइसिकिल थीव्स्' ने अन्तराष्ट्रीय फिल्म-जगत् को क्रांतिकारी रूप से प्रभावित किया है।

एक गरीब श्रमजीवी कलाकार, जो सौन्दर्य के गीत गाता है और सुन्दर वस्तुओं को रङ्ग और रेखा की अमरता प्रदान करने में लगा रहता है, अपनी चोरी गयी साइलिल की खोज में रोक की गलियों की खाक छानता फिर रहा है। चोर-उचक्कों, वेश्याओं और निठल्लों से बाजार भरे हैं, उठाइगीरों के मेले लगे हैं, जिनमें वे सभी चीजें खुले आम बिक रही हैं, जिन्हें शहर की दूकानों में चौगुने दामों में भी पाना असम्भव है। वह चोरों के धक्के खाता है, वेश्याएँ उस पर हँसती हैं और उचक्के उसे मूर्ख बनाते हैं; पुराने फासिस्ट आतंकवादी, जिनके बर्बर शासन का उसने विरोध किया था, उसे धमकाते हैं और चोर को छुड़ा लेते हैं!

उसे शान्ति और सुखमय जीवन की याद आती है, वे दिन याद आते हैं जब युद्ध नहीं हुआ था, फिर फासिस्टों का राज आया इसके बाद युद्ध की विभीषिका ने उसके खूबसूरत देश को बरबाद कर दिया, गरीब जनता की कमर तोड़ दी एवं अराजकता जैसे ज़िन्दगी का दूसरा नाम हो गयी!

इस युद्ध विरोधी उपन्यास की अनूठी शैली और भाषा का प्रवाह आपको एक ही बैठक में पूरी पुस्तक पढ़ जाने के लिये मजबूर करेगा। इसका अनुवाद श्री श्रीकान्त व्यास ने इतालियन भाषा के एक विशेषज्ञ के सहयोग से मूल इतालियन से किया है —अनुवाद की भाषा तो जैसे मूल से होड़ ले रही है।

मूल्य तीन रुपेया

किताब महल, इलाहाबाद